इस विशेष आवरण को संत शिरोमणि दिगम्बराचार्य श्री विद्यासागर जी मुनि महाराज के 50वां संयम स्वर्ण महोत्सव के उपलक्ष्य में
श्री दिगम्बर जैन संरक्षिणी सभा जबलपुर के माध्यम से दिनांक 17 जुलाई 2018 को
मध्यप्रदेश डाक परिमण्डल भारतीय डाक विभाग के परिमण्डल शाखा द्वारा 5/- रूपये में जारी किया गया।

संकलन - मुनिश्री अभयसागरजी, प्रभातसागरजी एवं पूज्यसागरजी महाराज

इस तरह की और भी जानकारी इस लिंक पर देख व पढ़ सकते हैं - knowledge.sanskarsagar.org

दि.	वार	तिथि	नक्षत्र
		मई 2024	
16	गुरुवार	नवमी	मघा
17	शुक्रवार	नवमी	पूर्वाफाल्गुनी
18	शनिवार	दशमी	उत्तराफाल्गुनी
19	रविवार	एकादशी	हस्त
20	सोमवार	द्वादशी	चित्रा दिन-रात
21	मंगलवार	त्रयोदशी	चित्रा
22	बुधवार	चतुर्दशी	स्वाती
23	गुरुवार	पूर्णिमा	विशाखा
24	शुक्रवार	प्रतिपदा	अनुराधा
25	शनिवार	द्वितीया	ज्येष्ठा
26	रविवार	तृतीया	मूल
27	सोमवार	चतुर्थी	पूर्वाषाढ़
28	मंगलवार	पंचमी	उत्तराषाढ़
29	बुधवार	षष्ठी	श्रवण
30	गुरुवार	सप्तमी	धनिष्ठा
31	शुक्रवार	अष्टमी/नवमी	शतभिषा पू.भा
		जून 2024	
1	शनिवार	दशमी	उत्तराभाद्रपद
2	रविवार	एकादशी	रेवती
3	सोमवार	द्वादशी	अश्विनी
4	मंगलवार	त्रयोदशी	भरणी
5	बुधवार	चतुर्दशी	कृत्तिका
6	गुरुवार	अमावस	रोहिणी
7	शुक्रवार	प्रतिपदा	मृगशिरा
8	शनिवार	द्वितीया	आर्द्रा
9	रविवार	तृतीया	पुनर्वसु
10	सोमवार	चतुर्थी	पुष्य
11	मंगलवार	पंचमी	आश्लेषा
12	बुधवार	षष्ठी	मघा
13	गुरुवार	सप्तमी	पूर्वाफाल्गुनी
14	शुक्रवार	अष्टमी	उत्तराफाल्गुनी दि.रा
15	शनिवार	नवमी	उत्तराफाल्गुनी

तीर्थंकर कल्याणक

16 मई: भगवान सुमतिनाथजी तप कल्याणक
18 मई: भगवान महावीर स्वामी जी ज्ञान कल्याणक
29 मई: भगवान श्रेयांसनाथ जी गर्भ कल्याणक
01 जून: भगवान विमलनाथजी गर्भ कल्याणक
03 जून: भगवान अनन्तनाथ जी जन्म तप कल्याणक
05 जून: भगवान शांतिनाथ जी जन्म तप मोक्ष कल्याणक
06 जून: भगवान अजितनाथ जी गर्भ कल्याणक
10 जून: भगवान धर्मनाथ जी मोक्ष कल्याणक

माह के प्रमुख व्रत

23 मई: सोलह दिवसीय शुक्ल पक्ष पूर्ण
05 जून: शान्तिधरा दिवस
06 जून: रोहिणी व्रत
11 जून: श्रुत पंचमी- जिनवाणी दिवस

सर्वार्थ सिद्धि

19 मई : 05/31 बजे से 27/16 बजे तक ।
23 मई : 09/15 बजे से 10/15 बजे तक ।
26 मई : 05/29 बजे से 10/36 बजे तक ।
02 जून : 25/40 बजे से 29/27 बजे तक ।
04 जून : 22/35 बजे से 5-29/27 बजे तक ।
09 जून : 20/20 बजे से 10-21/40 बजे तक ।
11 जून : 05/27 बजे से 23/39 बजे तक ।

शुभ मुहूर्त्त

दुकान प्रारंभ: मई-19,20,23,24 जून-2,3,7,14
मशीनरी प्रारंभ : मई-20,23,24,30 जून-3
वाहन खरीदने: मई-30 जून-3,7
शिशु को प्रथम देवदर्शन: मई-18,20,24,30 जून-2,3,7,9,10
नामकरण: मई-20,24,30 जून-3
विद्यारम्भ: मई-19,20,25

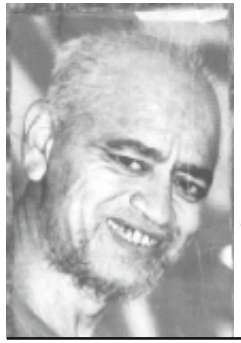

संस्कार सागर

• वर्ष : 25 • अंक : 301 • मई 2024

• वीर नि.संवत 2550-51 • विक्रम सं. 2080 • शक सं. 1945

लेख

• जैन परंपरा में सोलह संस्कार एवं उनकी प्रासंगिकता 08
• श्रुत पंचमी शास्त्रों की रक्षा का महापर्व 12
• आप चाकलेट खा रहे है या निर्दोष बछड़ों का मांस 15
• सराग चारित्र हेय कब और क्यों 17
• दक्षिण भारत के जैन वीर 22
• स्निग्ध बाह्य उपचार क्या लेप आहार है 40
• गोत्र विचार 43
• **वरिष्ठ नागरिक:** पहचान स्वयं बनायें 55
• स्त्री रोग डिस्मेनोरिया कारण व उपचार 56

बाल कहानी

• श्रममेव जयते 59

कविता

• निर्मल संवेदना 11
• फलती खादी 16
• विश्वास 21
• अमर आत्मा 27
• अभिनंदन स्तवन 29
• सुख उपाय 54

कहानी

• कामचोर 50

नियमित स्तंभ

पाती पाठकों की : 5 • भक्ति तरंग : 6 • संस्कार प्रवाह : 7 • संयम स्वास्थ्य योग : 14
चलो देखें यात्रा : 29 • आगम दर्शन :30 • माथा पच्ची : 31 • पुराण प्रेरणा : 32
• कैरियर गाइड : 33 • दुनिया भर की बातें : 34 • इसे भी जानिये: 38
•दिशा बोध : 39 • हमारे गौरव : 54 • वरिष्ठ नागरिक : 55 • हास्य तरंग-पाककला : 58
• बाल संस्कार डेस्क : 59 • संस्कार गीत व बाल कविता : 60 • समाचार : 61

प्रतियोगिताएं : वर्ग पहेली : 66

प्रेरणा – परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के प्रियाग्र शिष्य
एलक श्री सिद्धांतसागरजी महाराज

प्रधान संपादक
ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर–6232967108

प्रबंध संपादक
ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़–94251 41697

कार्यकारी संपादक
ब्र. सुदेश जैन कोठिया इन्दौर–9826593189

सलाहकार संपादक
श्री हुकुमचंद सांवला, इन्दौर–95425053111
पं. विनोदकुमार जैन, रजवांस–9575634411
डॉ. मुकेश जैन 'विमल', दिल्ली–9818855130

महिला संपादक
डॉ. ज्योति जैन, खतौली–94128 89449
डॉ.ब्र. समता जैन मारौरा, इन्दौर–8989845294

अतिथि सम्पादक
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर–97938 21108
अभिनंदन सांधेलीय, पाटन–9425863244
डॉ. पंकज जैन, इंदौर –9584201103
विनीत जैन प्राचार्य, साढूमल–9721419696
अक्षय अलया, ललितपुर – 9453031432

संयोजना
इंजी. अभिषेक जैन 'रिंकू', इन्दौर–9827282170

प्रकाशक
श्री दिगंबर जैन युवक संघ, इन्दौर (म.प्र.)

✲ आंतरिक सज्जा ✲
आशीष कुशवाह, इन्दौर 9179169060

कृपया, संस्कार सागर मासिक पत्रिका का
बाकी सदस्यता शुल्क
जो पत्रिका के लिफाफे पर चिपकी पते की स्लिप पर छपा है, अविलंब भेजकर सहयोग करें ।

सदस्यता शुल्क

-आजीवन	: 2100/-	(15 वर्ष)
-संरक्षक	: 5001/-	(सदैव)
-परम सम्मानीय	: 11000/-	(सदैव)
-परम संरक्षक	: 15001/-	(सदैव)

अपने शहर के

• स्टेट बैंक ऑफ इंडिया –**संस्कार सागर**
खाता क्र. 63000704338 (IFSC : SBIN0030463)

• भारतीय स्टेट बैंक –**ब्र. जिनेश मलैया**
खाता क्र. 30682289751 (IFSC : SBIN0011763)

•आईसीआईसीआय बैंक
श्री दिगम्बर जैन युवक संघ
खाता क्र. 004105013575 (IFSC : ICIC0000041)

में भी अपने पूर्ण पते सहित राशि जमा कर हमारे कार्यालय को सूचित कर सकतेहैं।

कार्यालय –संस्कार सागर
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर,
सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड़, इन्दौर –10
फोन नं. : 0731–2571851, 4003506
मो. : 89895–05108, 6232967108
website :www.sanskarsagar.org
e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

◆ लेखक के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
◆ संस्कार सागर में प्रकाशित रचनाएँ बिना आज्ञा, किसी भी प्रकार से उद्धृत नहीं की जाना चाहिए।
◆ कथा–साहित्य में नाम संस्था काल्पनिक होतेहैं। किसी से समानता मिलना संयोग मात्र है।
◆ पत्रिका संबंधी प्रकरण में न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा।

•श्री दिगम्बर जैन युवक संघ द्वारा श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर, ए.बी. रोड़, इन्दौर–10 से प्रकाशित एवं मोदी प्रिंटर्स (76, बी–1, पोलोग्राउंड, इन्दौर) द्वारा मुद्रित।

पाती पाठकों की....

• सम्पादक महोदय, पश्चिम बंगाल की संदेश खाली घटना के मुख्यारोपी शाहजहां शेख को हाईकोर्ट कोलकाता ने आखिरकार सी.बी.आई को सौंप ही दिया । महिला मुख्यमंत्री द्वारा महिलाओं के संवेदनशील मामले को अनदेखा करना काफी गंभीर मुद्दा है । शाहजहां शेख को राजनैतिक संरक्षण देना ममता बनर्जी की साख पर भी बट्टा लगने जैसा है। परन्तु जब नेताओं का कोई भी बिन्दू प्रतिष्ठा का प्रश्न बन जाता है तब अन्यायी के मंसूबे आसमान पर चढ़ जाना कोई भी बड़ी बात नहीं है पर अन्याय का दमन भी एक दिन अवश्य होता है। संदेश खाली में शेर शाहजहां शेख के पाप का घडा भर ही गया। बस बहिनों को न्याय मिलना शेष है।

सुरेश जैन, इंदौर

• सम्पादक महोदय, पेपर लीक होने के मामले काफी बढ़ रहे हैं म.प्र. उ.प्र. राजस्थान तमिलनाडु कर्नाटक जैसे कई प्रदेशों में प्रतियोगी परीक्षाओं में पेपर लीक हो जाते हैं जिसमें कई अयोग्य व्यक्ति सफल हो जाते हैं और योग्य छात्रों को सिर्फ निराशा ही नही अवसाद के दुर्दिन देखना पड़ते हैं वे कभी भी आत्महत्या तक का प्रयास कर लेते हैं। कई गरीब छात्र धन के अभाव में योग्यता होने के बाद भी रोजगार से वंचित रह जाते हैं। यहाँ तक कि उनके फीस कोचिंग पुस्तक यातायात के पैसे बर्बाद हो जाते हैं उनका होने वाला नुकसान कभी भी पूर्ण नहीं हो सकता है। अतः सरकार को पेपर लीक होने से रोकने के लिये प्रभावी कदम उठाने होंगे।

समीक्षा जैन, जबलपुर

• सम्पादक महोदय, संस्कार सागर के अप्रैल माह के अंक में कहानी तम्बाकू का ताण्डव शीर्षक से प्रकाशित हुई कहानी पढ़कर लगा कि यदि सत्य घटना पर आधारित यह कहानी हो तो सोचना होगा कि तम्बाकू का व्यसन व्यक्ति को कितना अधीर कर देता है कि वह अपनों का बधिक बन सकता है इस घटना की कल्पना करते ही रोम-रोम में सिरहन हो जाती है। लगता है कि कहीं मानवता का गला जब चाहे तब व्यसन घोंट सकता है। मानवता को सदैव परेशानी में डालने वाला व्यसन ही होता है धन प्रतिष्ठा और अमन चैन सब छीनने का काम व्यसन ही करता है कहानी बहुत ही सरल सुबोध भाषा शैली में लिखी गई। सहज प्रवाह भाषा शैली ने कहानी को मर्म स्पर्शी बना दिया है।

कमल चौधरी, राहतगढ़

• सम्पादक महोदय, परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की समता समाधि उपरान्त अंतिम संस्कार में जो जन सागर उमड़ा वह उनके प्रति जन जन की भक्ति की अभिव्यक्ति थी आचार्य श्री का जो राष्ट्र समाज साहित्य के प्रति अवदान हैं उसका ऋण शायद कोई नहीं चुका सकता है। यह भारत देश की प्रथम घटना ही मानी जायेगी कि जब देश के प्रधानमंत्री ने किसी संत के बारे में अपना लेख प्रकाशित कराया हो। तथा उन्होंने आचार्य श्री के प्रवाह रूकने को अपनी व्यक्तिगत क्षति माना हो भाजपा के अधिवेशन में 1200 प्रतिनिधियों के बीच शोक संवेदना व्यक्त होना जैन समाज के अविस्मरणीय क्षण के सिवाय और क्या हो सकता है। गुरुदेव का यह सम्मान जैन समाज के महान गौरव का विषय है।

प्रिंसपाल टोग्या, इंदौर

भक्ति तरंग
दीपक का क्या काम

हो भैया मोरे ! कहु कैसे सुख होय ।।टेक ।।
लीन कषाय अधीन विषय के,
धरम करै नहिं कोय ।। हो भैया ।।
पाप उदय लखि रोवत भोंदू !
पाप तजै नहिं सोय ।
स्वान-वान ज्यों पायन सूधै,
सिंह हने रिपु जोय ।। हो भैया ।।
धरम करत सुख दुख अधसेती,
जानत हैं सब लोय ।
कर दीपक लै कूप परत है,
दुख पहै भव होय ।। हो भैया ।।
कुगुरु कुदेव कुधर्म भुलायो,
देव धरम गुरु खोय ।
उलट चाल तजि अब सुलटै जो,
ध्यानत तिरै जग-तोय ।। हो भैया ।।

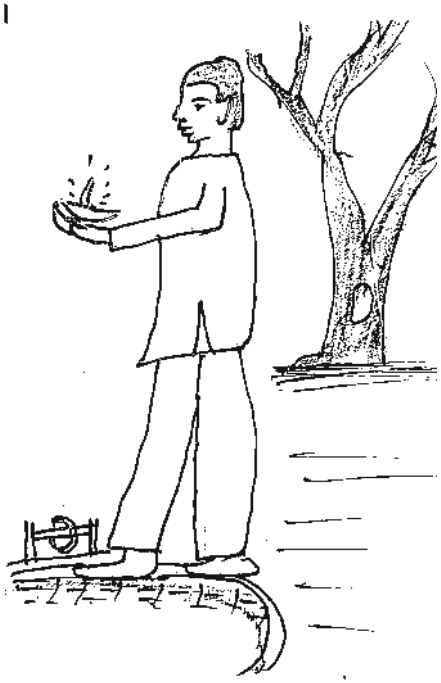

ओ मेरे भाई ! बता सुख किस प्रकार हो ! कषायों से ग्रस्त व इन्द्रिय-विषयों में आसक्त जीव कोई-धर्म साधन नहीं करता तब उसे सुख किस प्रकार हो सकता है ?

अरे भोंदू (ना समझ) जब पापोदय होता है, तब तू रोता है, परन्तु पाप की मैल को, पाप को छोड़ता नहीं है। तेरी आदत तो उस कुत्ते की भाँति हैं तू पहले शत्रु के पाँव को सूंघता रहता है जबकि सिंह की आदत तो शत्रु को देखते ही उसे नष्ट करने की होती है।

धर्म साधन से सुख होता है और पाप से दुःख होता है, यह सब लोग जानते हैं, सर्वविदित है। अरे हाथ में दीपक लेकर भी यदि कोई कुएं में गिरे तो वह इस भव व परभव दोनों में दुःख का भागी होता है।

सच्चे देव, शास्त्र व गुरु का साथ छोड़कर कुगुरु, कुदेव कुधर्म में तू अपने आपको भुला रहा है। द्यानतराय कहते हैं कि इस उल्टी चाल को छोड़कर अब यदी तू सीधी चाल चले सम्यक राह पर चले तो तू इस जग से पार हो सकेगा तिर जावेगा।

संस्कार प्रवाह

तीर्थ रक्षा की जीवन्त मूर्ति
आचार्य विद्यासागर

वह तीर्थ ही है जहाँ से शांति का पथ प्रदर्शित होता है। सच्चे मोक्ष का मार्ग तीर्थ से ही मिलता है। जिससे भव दुख से पार होने का मार्ग मिल जाये उसे ही जैनाचार्यों ने तीर्थ घोषित किया है। भारत की पवित्र भूमि पर प्राकृतिक वन्य रमणीय स्थानों पर निर्वाण भूमि कल्याणक स्थल व अतिशय क्षेत्र तीर्थ आदि शोभा को प्राप्त हो रहे हैं। इन तीर्थों की वन्दना करने से सातिशय पुण्य का प्रसंग प्राप्त होता है जैन इतिहास में आचार्य कुंदकुंद देव ने स्वयं संघ सहित गिरनार तीर्थ की यात्रा करके तीर्थ यात्रा परम्परा को जीवंत बनाने का संयुक्त प्रयास किया एवं तीर्थ रक्षा की दिशा में आचार्य कुंदकुंद का प्रथम उद्यम सिद्ध है।

आचार्य कुंदकुंद ने अपनी दिव्य शक्ति के माध्यम से श्रुत देवी से यह कहलवाया कि गिरनार यात्रा पर प्रथम अधिकार किसे है दिगम्बर को या श्वेताम्बर को तब देवी ने आद्य दिगम्बर आद्य दिगम्बर कहकर सत्य प्रगट किया। दिगम्बर आचार्य कुंदकुंद गुरुदेव को नमस्कार किया। इन्हीं आचार्य कुंदकुंद से प्रेरणा लेकर आचार्य विद्यासागर जी महाराज तीर्थ सुरक्षा एवं संवर्धन के प्रति कटि बद्ध हुये। नैनागिरि, कुंडलपुर, रामटेक, बीनाबारह, चंद्रगिरि, मुक्तागिरि, बंधाजी, खजुराहो, पटनागंज रहली जैसे तीर्थों का जीर्णोद्धार करवाकर नेमावर, अमरकंटक जैसे तीर्थों का संवर्धन कर जैन संस्कृति स्थापत्य का प्रभाव चिरस्थायी बनाने का प्रयास किया।

गिरनार जैसे तीर्थ जो जैन श्रावकों से शून्य है वहाँ पर श्रावकों की संख्या बढ़ाने की योजना भी आचार्य श्री ने श्रेष्ठीजन के समक्ष सदैव रखी महाराष्ट्र के शिरपुर तीर्थ की सुरक्षा की चिंता आचार्य श्री 27 अक्टूबर 1990 से करना प्रारंभ की थी जब मुक्तागिरि सिद्धक्षेत्र आचार्य श्री का संघ सहित वर्षावास चल रहा था तब शिरपुर दिगम्बर जैन तीर्थ संस्थान के ट्रस्टीगण आये और उन्होंने आचार्य श्री को वह कहानी बतायी कि यह तीर्थ दिगम्बर जैन समाज की उदासीनता एवं अनावश्यक उदारता के कारण श्वेताम्बरों की साजिश की गिरफ्त में कैसे आया।

श्वेताम्बरी साजिश के टूल्स पर चर्चा भी हुई कपटमय प्रेम सम्मान के चक्रव्यूह में दिगम्बरों को फंसाना श्वेताम्बरों का पहला टूल्स है दूसरा टूल्स उनका होता है झगड़ा खड़ा कर समझौते का दबाव बनाना। तीसरा टूल्स होता एक समय सारणी पर सहमति बनवाना चौथा टूल्स फर्जी दस्तावेज तैयार करना और असली दस्तावेज हथियाना अर्थात् दस्तावेजों में फेरफार करना पांचवा टूल्स लेप की सहमति तैयार करना और लेप में मूर्ति के सत्य स्वरूप को विलोपित करना इत्यादि चर्चा सुनने के बाद आचार्य श्री अभिभूत हुये और उन्होंने ब्र. सुमन जी और ब्र. विनोद जी को शिरपुर पद यात्रा कर दिगम्बर जैन युवक संघ गठित करने का मार्गदर्शन दिया।

9 जुलाई 2022 को 600 किमी की पदयात्रा कर आचार्य श्री स्वयं अतिशय क्षेत्र शिरपुर पहुँचे और वर्षायोग 2022 स्थापित किया। तीर्थ की सुरक्षा और संवर्धन हेतु योजनाओं को मूर्त रूप दिया 26 एकड़ भूमि क्रय समवसरण जिनालय एवं 4 सहस्रकूट जिनालय का शिलान्यास आचार्य श्री के पावन सान्निध्य में 21 दिस. 2022 को सम्पन्न हुआ स्वास्थ्य की प्रतिकूलता के उपरान्त भी शिरपुर तीर्थ रक्षा के प्रति आचार्य श्री की भावना जागरूक होना उनके तीर्थ वात्सल्य का सबसे बड़ा उदाहरण है अतः हमें उनके प्रति विनयाञ्जली अर्पित करते समय शिरपुर तीर्थ रक्षा का संकल्प अवश्य लेना चाहिये।

जैन परंपरा में सोलह संस्कार एवं उनकी प्रासंगिकता

❊ पं. सुरेश जैन मारौरा, इन्दौर ❊

संस्कार मानव जीवन के विकास की प्रक्रिया है, संस्कार मनुष्य का सीखा हुआ व्यवहार है। जो उसे माता-पिता एवं गुरुजनों से प्राप्त होता है। संस्कृति व संस्कार में मूलभूत कोई भेद नहीं है। संस्कार व संस्कृति दोनों का अर्थ है। धर्म। धर्म का पालन करने से ही मनुष्य, मनुष्य है। अन्यथा खाना-पीना, सोना, रोना-धोना, डरना, मरना, संतान पैदा करना, यह सभी काम तो पशु भी करते हैं। धर्म ही मनुष्य को पशु से श्रेष्ठ बनाता है। धर्म से हीन मनुष्य पशु के समान होता है। इसलिये संस्कारों या धर्म के माध्यम से मानव में मानवता आती है। संस्कारों से विभूषित होने पर ही व्यक्ति का मूल्य और सम्मान बढ़ता है, इसीलिये संस्कारों का जीवन में बहुत महत्व है।

संस्कारों के लक्षण:

1. दोषों को दूर कर के गुणों को ग्रहण करना संस्कार है।
2. अपने लोहमय जीवन को स्वर्णमय बनाना ही संस्कार है।
3. जिस शिक्षा से मनुष्य का हित करने, एकता तथा सामंजस बनाने दीन-दरिद्र-असहाय अनाथ को यथा योग्य सब प्रकार का सहयोग करने के विचार उत्पन्न होते हैं । और आध्यात्मिक गुणों का विकास एवं वृद्धि होती है। उस शिक्षा को संस्कार कहते हैं।
4. श्रेष्ठ संस्कारों को सुसंस्कार कहते हैं।

संस्कारों के भेद:

1. पूर्वोपार्जित संस्कार, 2. कुल परंपरागत संस्कार 3. माता-पिता द्वारा प्रदत संस्कार

आदिपुराण के भाग-2 में गर्भाधान से मरण पर्यंत तक 108 संस्कारों को जिनसेनाचार्य ने श्रावकाध्यान संग्रह में तीन क्रियाओं में विभक्त कर विस्तृत रूप से व्याख्या की है।

गर्भान्वय संस्कार: गर्भधारण करने की योग्यता गर्भाधान है। यह 53 प्रकार की क्रियाएं हैं।

1.आघान, 2. प्रीति 3. सुप्रीति 4. धृति 5. मोद 6. प्रियोदभव 7. नामकर्म 8. वहिर्यान 9. निषधा 10. प्राशन 11. व्युष्टि 12. केशवाप 13. लिपि संख्यान संग्रह 14. उपनीति 15. व्रतचर्या 16. व्रतावरण 17. विवाह 18. वर्ण लाभ 19. कुलचर्या 20. गृहीशिता 21. प्रशान्ति 22. गृहत्याग 23. दीक्षाद्य 24. जिनरूपता 25. मौनध्ययन वृति 26. तीर्थकृत भावना 27. गुरुस्थानाम्युगम 28. गणोपग्रहणं 29. स्वगुरुस्थान 30. निःसंगत्वात्म भावना 31. योग निवार्ण सम्प्राप्ति 32. योग निर्वाण साधन 33. इन्द्रोपपाद 34. अभिषेक 35. विधिदान 36. सुखोदय 37. इन्द्रत्याग 38. अवतार 39. हिरण्योत्कृष्ट जन्मता 40. मन्देन्द्राभिषेक 41. गुरुपूजोपलम्भन 42. यौवराज्य 43. स्वराज्य 44. चक्रलाभ 45. दिग्विजय 46. चक्राभिषेक 47. सामार्ज्य 48. निष्क्रांति 49. योगसन्मह 50. अहर्न्त 51. तदविहार 52. योग त्याग 53. अग्रनिर्वृतिता

दीक्षान्वय संस्कार: यह 48 क्रियायें हैं।

1. अवतार 2. व्रतलाभ 3. स्थानलाभ 4. गण ग्रहण 5. पूजाराध्य 6. पुण्य यज्ञ 7. दृढ़चर्या 8. उपयोगिता 9. उपनीति 10. व्रतचर्या 11. व्रतावरण 12. विवाह 13. वर्णलाभ 14. कुलचर्या 15. गृहीशिता 16. प्रशांति 17. गृहत्याग 18. दीक्षाद्य 19. जिनरूपता 20. मौनाध्ययनवृतत्व 21. तीर्थकृत भावना 22. गुरुस्थानाम्युगम 23. गणोपग्रहण 24.

स्वगुरुस्थान संक्रांति 25. निःसंगत्वात भावना 26. योग निर्वाण सम्प्राप्ति 27. योग निर्वाण साधन 28. इन्द्रोपवाद 29. अभिषेक 30. विधिदान 31. सुखोदय 32. इन्द्रत्याग 33. अवतार 34. हिरण्योत्कृष्ट जन्मता 35. मन्देरेन्द्राभिषेक 36. गुरुपूजोलम्भन 37. यौवराज्य 38. स्वराज्य, 39. चक्रलाभ 40. दिग्विजय 41. चक्राभिषेक 42. साम्राज्य 43. निष्क्रान्ति 44. योगसन्मह 45. आर्हन्त 46. तदविहार 47. योगत्याग 48. अग्र निर्वृन्तिता।

कर्तृन्वय संस्कार: यह सात प्रकार का होता है।

1. सज्जाति 2. सद्गृहित्व 3. पारिव्राज्य 4. सुरेन्द्रता 5. साम्राज्य 6. परमार्हन्त्य 7. परम निर्वाण।

उपरोक्त में 16 संस्कारों को जैन परम्परा में विशिष्ट मान्यता है।

1. गर्भाधान संस्कार: गर्भधारण की योग्यता गर्भाधान है। गर्भाधान संस्कार से बालक शारीरिक मानसिक रूप से बलिष्ठ, दीर्घायु, स्वस्थ, निरोग एवं शीघ्र बौद्धिक विकास करने वाल होता है। तीर्थंकर के गर्भ में आने के 6 माह पहले से देवियां आकर गर्भाधान संस्कार करने लगती हैं।

2. प्रीति संस्कार: गर्भस्थ शिशु के प्रति वात्सल्य एवं उसे सुसंस्कार देने का भाव रखना प्रीति संस्कार है, गर्भवती को गर्भस्थ शिशु एवं परिजन के लिये जिनेन्द्र भगवान की भक्ति पूजन पाठ आराधना एवं स्वाध्याय करना चाहिये।

3. सुप्रीति संस्कार: पांचवें माह में शिशु के आंगोपांग बनते हैं। अतः गर्भवती को प्रीति-पूर्वक शिशु के संरक्षण संवर्धन एवं संस्कारित करने का भाव होना आंगोपांग सुप्रीति संस्कार है। गर्भवर्ती के भावों की विद्रूपता, संक्लेशता एवं कठोरता से शिशु के अंगोपांग विकृत हो सकते हैं। सुप्रीति संस्कार गर्भवती के मन को प्रशस्त करता है। जिससे बालक सर्वांग सुंदर एवं बलवान होता है।

4. धृति या सीमंतोन्नयन संस्कार: सातवें मास में गर्भस्थ पिण्ड पर चर्म, नाखून और रोम बनते हैं। आठवें मास में हलन-चलन होने लगता है। अतः सातवें मास में मन की स्थिरता के लिये धृति संस्कार किया जाता है। गर्भवती की प्रसन्नता एवं धार्मिक वातावरण से मन को दृढ़ता प्रदान करने के लिये धृति संस्कार किया जाता है। इस अवस्था में स्वप्न और दोहला उत्पन्न होते हैं। जिससे गर्भस्थ शिशु के भविष्य, प्रकृति एवं व्यक्तित्व के विषय की जानकारी होती है।

5. मोद संस्कार (गोद भराई): गर्भावस्था की पीड़ा का विस्मरण, शिशु के आने का उत्साह एवं मां बनने का कर्तव्य बोध कराने के लिये नौवें महीने में गर्भवती को वस्त्र, आभूषण प्रदान कर गोद में मांगलिक द्रव्य मेवा आदि भरकर शिशु के आने की कामना की जाती है। मांग में सिंदूर भरने की क्रिया करने से इसे सीमन्तनी क्रिया कहते हैं ।

6. जातकर्म (प्रियोद्भव) संस्कार: प्रसूति होने पर प्रियोद्भव नाम की क्रिया की जाती है। इसका दूसरा नाम जातकर्म विधि है। शिशु के जन्म के समय प्रसन्नता पूर्वक जन्मोत्सव मनाते हुये उसके धार्मिक एवं यशस्वी जीवन की मंगल कामना करते हैं। वाद्य यंत्र बजवाते हैं। परिवार में नये सदस्य आने पर भिक्षुओं को दान देना, बन्धुओं को वस्त्राभूषण देना, मिष्ठान वितरण आदि करना चाहिये। गन्धोदक सिंचित करते हुये पिता नवजात शिशु को आशीर्वाद देवें।

7. नामकरण संस्कार: जन्म के बारह दिन बाद, बीस दिन बाद या बत्तीस दिन बाद नामकरण करना चाहिये। इस क्रिया में अपने वैभव के अनुसार अरिहन्त देव और ऋषियों की पूजा कर लोकव्यवहार के लिये ऐसा कोई नामकरण करें, जिससे वंश की वृद्धि हो। जिनेन्द्र भगवान के 1008 नाम कागज के टुकड़ों पर लिखकर पर्ची बना लें फिर पर्ची अबोधबालक से

उठवा कर नामकरण करें।

8. कर्ण नासिका वेध संस्कार: कान के निचले भाग एवं नाक के बाएं नथुने में बारीक छिद्र करना वेध कहलाता है। इससे अनेक रोग नहीं होते हैं। आभूषण पहनने के लिये कर्ण नासिका वेध की आवश्यकता होती है। यह जन्म के पहले, तीसरे एवं पांचवें विषम वर्षों में श्रेष्ठ है।

9. दोलारोहण संस्कार: बालक को पालने में झुलाना दोलारोहण है। इससे बालक में आत्मबल प्रकट होता है, असुरक्षा का भाव प्रकट नहीं होता है। दोलारोहण उसके शारीरिक और मानसिक विकास का आधार है।

10. वहिर्यान (प्रथम देव दर्शन) संस्कार: नवजात शिशु में अनेक संक्रमण होने की संभावना रहती है। खुले वातावरण को अचानक सहन करने की शक्ति नहीं होती है। उसका जीवन श्रेष्ठ बने इसलिये सर्वप्रथम मंदिर ले जाना चाहिये। बालक भगवान के दर्शन कर अपनी जीवन यात्रा प्रारंभ करे यह प्रथम दर्शन बालक के जीवन का मंगलाचरण है। यह क्रिया दूसरे, तीसरे एवं चौथे माह के बाद उपर्युक्त शुभ दिन देखकर वाद्य यंत्रों के साथ ले जाकर करना चाहिये। परिवारजन बालक को पारितोषिक भेंट करें। णमोकार महामंत्र पढ़कर बालक को जिनेन्द्र देव का दर्शन करावें, मस्तक पर गंधोदक लगावें। रक्षा मंत्र और शांति मंत्र पढ़कर पुष्प उसके सिर पर डालें, मुनिराज या साधुओं का आशीर्वाद दिलाकर उसी प्रकार घर वापस आवें, यथायोग्य दान देकर आगत जनों का सत्कार करें।

11. निषधा संस्कार: इस संस्कार में बालक को पहली बार बिठाने की क्रिया की जाती है। बालक के जीवन को क्रियाशील, गतिशील, सक्रिय एवं विकसित कर पद्मासन आदि आसनों में बिठाया जाता है। जिससे वह जाप-ध्यान आदि के माध्यम से कर्मक्षय एवं मोक्षमार्ग प्रशस्त करें।

12. अन्नप्राशन संस्कार: जन्म से मां का दूध बालक का आहार होता है। छह माह बाद उसके शरीर का विकास होने से पाचन तंत्र विकसित हो जाता है। अतः उसे ठोस आहार की आवश्यकता होती है। इस प्रथम आहार ग्रहण की प्रक्रिया को अन्नप्राशन संस्कार के रूप में किया जाता है। जिससे उसका आहार जीवन भर व्यवस्थित एवं संतुलित रहे।

13. पादन्यास (गमन) विधि: नौंवे महीने में गमन के योग्य हो जाता है। प्रथम बार चलने की क्रिया पादन्यास संस्कार है। जीवन के चरम लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये पादन्यास संस्कार अत्यंत आवश्यक है। इसके माध्यम संयम पथ पर चलकर मोक्षमार्ग में चलने की क्रिया प्रारंभ करता है। बालक जिनेन्द्र भगवान को नमस्कार करे और वृद्ध जनों से आशीर्वाद ग्रहण करें।

14. व्युष्टि (वर्षवर्धन) संस्कार: एक वर्ष पूर्ण होने पर व्युष्टि नाम की क्रिया की जाती है। व्यष्टि क्रिया वर्षगांठ कहलाती है। बालक एक वर्ष में सभी ऋतुओं के प्रभाव से अनुकूलता बनाकर जीवन यात्रा को कुशलता पूर्वक जो पूर्ण करने के संकेत देता है। व्युष्टि क्रिया जहाँ वृद्धि-विकास, उत्थान का द्योतक है, वहीं उत्साह, उमंग एवं कर्त्तव्य बोध का कारण है। वर्षगांठ पाश्चात्य संस्कृति के अनुसार न मनायें। देव-दर्शन, पूजा-विधान एवं दान को महत्व देवें।

15. केशवाप चौलकर्म संस्कार: शुभ मुहुर्त में देव-शास्त्र-गुरु की पूजा के साथ-साथ उस्तरा से बालक के बाल बनवाना केशवाप क्रिया कहलाती है। गर्भ के विभिन्न रसायनों से बालक का समस्त शरीर प्रभावित रहता है। बार-बार मालिश आदि करने से शरीर की चमड़ी

निकल जाती है। और नई चिकनी चमकदार चमड़ी आ जाती है। किंतु बालों का परिवर्तन मुंडन संस्कार के द्वारा ही होता है। इससे सिर के रोम छिद्र खुल जाने से नये घने एवं काले बाल आ जाते हैं। यह संस्कार प्रायः तीर्थक्षेत्रों पर किया जाता है। जन्म के पांचवें, सातवें एवं नौवें महीने में मुंडन करावें।

16. लिपि संख्यान संस्कार: पांचवे वर्ष में बालक को सर्वप्रथम अक्षरों का दर्शन कराने के लिये लिपि संख्यान नाम की क्रिया की जाती है। इसमें अपने वैभव के अनुसार पूजा आदि सामग्री एकत्रित कर पूजन करें। इसका उद्देश्य शिक्षा प्राप्त कर जैनागम के अध्ययन से आत्म कल्याण का मार्ग प्रशस्त करना है।

यज्ञोपवीत संस्कार: ब्रह्मसूत्र श्रावकों का चिन्ह- इस संस्कार से बालक धर्म के प्रति आस्थावान एवं क्रियावान बनता है।

ब्रह्मचर्य संस्कार, व्रतावण संस्कार, विवाह संस्कार

परम पूज्य आर्यिका श्री विज्ञानमति माताजी ने अपनी पुस्तक संस्कार मंजूषा में उदाहरण सहित विस्तृत व्याख्या करते हुये आठ प्रकार से परिभाषित किया है।

1. गर्भावस्था के संस्कार 2. शैशवावस्था के संस्कार 3. बचपन के संस्कार 4. किशोरावस्था के संस्कार 5. यौवनावस्था के संस्कार 6. प्रौढ़ावस्था के संस्कार 7. वृद्धावस्था के संस्कार 8. सन्यास अवस्था के संस्कार।

वैदिक ग्रंथों में भी संस्कारों का वर्णन मिलता है। अतः वर्तमान में सुसंस्कार प्राप्त करने के लिये जैन परंपरा से 16 संस्कार विशेष महत्व रखते हैं। सम्यग्दृष्टि पुरुषों को इन क्रियाओं का पालन करना चाहिये यह उत्म फल देने एवं शुभ करने वाली हैं।

कविता

निर्मल संवेदना

❊ संस्कार फीचर्स ❊

मकसद नहीं मेरा, मैं मशूहर होकर रहूँ।
बस काम अच्छे ही, मैं सदा करता रहूँ॥
कर्म सुखद प्राण मेरे, धर्म में संलग्न हों।
आत्मा की दिग्विजय, आत्मा का भान हो॥
पीर पराई हर सकूँ, मैं पाप से मुक्ति रहे।
सद्भावना का भाव हो, आराधना प्रभु की रहे॥
आचरण मय ज्ञान हो, सदाचार पालन करूँ।
कदाचरण से दूर रहे, श्रद्धा सदा हृदय धरूँ॥
हो साधना समत्व की, भाव समन्वय के रहे।
रोगी नीरोगी हो सदा, ये कामना मन में रहे॥
निर्मल सुखद संसार हो, निर्मल हृदय के भाव हों।
निर्मल रहे संवेदना तो, निर्मल भाव प्रभाव हो॥

श्रुत पंचमी शास्त्रों की रक्षा का महापर्व

❊ डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर ❊

जैन परंपरा में आगम को भगवान महावीर की द्वादशांगवाणी के रूप में प्रस्तुत किया गया है। श्रुत परंपरा जैन-धर्म-दर्शन में ही नहीं वैदिक परंपरा में भी चरमोत्कर्ष पर रही है । इसी के फलस्वरूप वेद को श्रुति के नाम से संबोधित किया जाता रहा है।

श्रुत पंचमी जैन धर्म का प्रमुख पर्व है । जैन धर्म की मान्यतानुसार आचार्य पुष्पदंत जी महाराज एवं भूतबली जी महाराज ने करीब 2000 वर्ष पूर्व गुजरात के गिरनार पर्वत की गुफाओं में ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी के दिन ही जैन धर्म के प्रथम ग्रंथ **श्री षट्खंडागम** की रचना को पूर्ण किया था। इसी कारण ज्येष्ठ शुक्ल के पंचमी दिन श्रुत पंचमी का पर्व मनाया जाता है।

पहले भगवान महावीर केवल उपदेश देते थे और उनके प्रमुख शिष्य (गणधर) उसे सभी को समझाते थे, क्योंकि तब महावीर की वाणी को लिखने की परंपरा नहीं थी। उसे सुनकर ही स्मरण किया जाता था इसीलिये उसका नाम श्रुत था। एक कथा के अनुसार दो हजार वर्ष पहले जैन धर्म के एक प्रमुख संत धरसेनाचार्य को अचानक यह अनुभव हुआ कि उनके द्वारा अर्जित जैन धर्म का ज्ञान केवल उनकी वाणी तक सीमित है। उन्होंने सोचा कि शिष्यों की स्मरण शक्ति कम होने पर ज्ञान वाणी नहीं बचेगी। ऐसे में मेरे समाधि लेने से जैन धर्म का संपूर्ण ज्ञान खत्म हो जायेगा। तब धरसेनाचार्य ने पुष्पदंत एवं भूतबलि की सहायता से **षट्खण्डागम** की रचना की और उसे ज्येष्ठ शुक्ल की पंचमी को प्रस्तुत किया। देश की प्राचीन भाषा प्राकृत में लिखे इस शास्त्र में जैन धर्म से जुड़ी कई अहम जानकारियां हैं। इस ग्रंथ में जैन साहित्य, इतिहास, नियम आदि का वर्णन है जो किसी भी धर्म के लिये बेहद आवश्यक होते हैं।

ज्ञान आराधना का पर्व: श्रुत पंचमी ज्ञान की आराधना का महान पर्व है, जो जैन भाई बंधुओं को वीतरागी संतों की वाणी सुनने, आराधना करने और प्रभावना करने का संदेश देता है। इस दिन मां जिनवाणी की पूजा अर्चना सभी करते हैं । इस पावन दिवस पर श्रद्धालुओं द्वारा षट्खंडागम, श्री धवल, महाधवलादि ग्रंथों को विराजमान कर श्रद्धाभक्ति से महोत्सव के साथ उनकी पूजा-अर्चना की जाती है और सिद्धभक्ति का पाठ किया जाता है। इस दिन जैन धर्म के लोग जिनवाणी की शोभा यात्रा निकालते हैं। व्याख्यान, प्रवचन एवं विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। इसी दिन पहली बार जैन धर्म ग्रंथ लिखा गया था।

भारतीय संस्कृति का अक्षय भंडार है जैन साहित्य: जैन परंपरा का साहित्य भारतीय संस्कृति का अक्षय भंडार है। जैन आचार्यों ने ज्ञान-विज्ञान की विविध विधाओं पर विपुल मात्रा में स्व-परोपकार की भावना से साहित्य का सृजन किया । आज भी अनेक शास्त्र भंडारों में हस्तलिखित प्राचीन ग्रंथ विद्यमान हैं। जिनकी सुरक्षा प्रचार-प्रसार, संपादन, अनुवाद निंरतर हो रहा है। प्राचीनकाल में मंदिरों में देव प्रतिमाओं को विराजमान करने में जितना श्रावक पुण्य लाभ मानते थे उतना ही शास्त्रों को ग्रंथ भंडार में विराजमान करने का भी मानते थे। यह श्रतु पंचमी महापर्व हमें जागरण की प्रेरणा देता है कि हम अपनी जिनवाणी रूपी अमूल्य निधि की सुरक्षा हेतु

सजग हों तथा ज्ञान के आयतनों को प्राणवान स्वरूप प्रदान करें।

जैन पांडुलिपियां हमारी अमूल्य धरोहर: जैन प्राचीन पांडुलिपियों में हमारी सभ्यता आचार-विचार और अध्यात्म विकास की कहानी समाहित है। उस अमूल्य धरोहर को हमारे पूर्वजनों ने अनुकूल सामग्री एवं वैज्ञानिक साधनों के अभाव में रात-दिन कठिन श्रम एक करके हमें विरासत में दिया है। इस पर्व पर संकल्प लें कि पांडुलिपियों का सूचीकरण करके व्यवस्थित रखवाया जाय, लेमिनेशन करके अथवा माइक्रोफिल्म तैयार करवा कर सैकड़ों हजारों वर्षों तक के लिये सुरक्षित रखा जा सकता है और अप्रकाशित पांडुलिपियों को प्रकाशित किया जाये। मां जिनवाणी को संरक्षित करने, उसका हम संरक्षण और संवर्द्धन करने के लिये आगे आयें ।

आज तो ग्रंथ रचना सुलभ है एक प्रति बनने के बाद अल्प समय में मशीनों द्वारा उसकी सैकड़ों प्रतियां छपकर तैयार हो जाती हैं किन्तु उस समय जब कागज भी नहीं था तब हमारे श्रमण-जैनाचार्य पांडुलिपि पर लेखन कार्य करते थे कितना कष्टप्रद होगा वह लेखन एक पन्ना लिखने में ही समय का बहुधा भाग चला जाता है जबकि आचार्यों ने हजारों-लाखों की संख्या में गाथायें लिखी हैं।

अनमोल धरोहर प्राकृत भाषा: श्रुत पंचमी को प्राकृत भाषा दिवस के रूप में भी मनाते हैं। प्राकृत भाषा भारत की भाषा है। यह जनभाषा के रूप में लोकप्रिय रही है । जनभाषा अथवा लोकभाषा की प्राकृत भाषा है । इस लोक भाषा प्राकृत का समृद्ध साहित्य रहा है, जिसके अध्ययन के बिना भारतीय समाज एवं संस्कृति अध्ययन अपूर्ण रहता है । प्राकृत में विविध साहित्य है। यह जैन आगमों की भाषा मानी जाती है। भगवान महावीर ने भी इसी प्राकृतभाषा के अर्धमागधी रूप में अपना उपदेश दिया था।

राष्ट्र की यह अनमोल धरोहर प्राकृत भाषा आज इतनी उपेक्षित क्यों है ? इस भाषा को आज अपनी अस्मिता एवं पहचान बनाने के लिये संघर्ष करना पड़ रहा है। प्राकृत भाषा प्राचीन काल में जनभाषा के रूप में एक समृद्ध भाषा रही है। विदेशियों ने भी प्राकृत भाषा एवं उसके साहित्य का अध्ययन किया है जिनमें याकोबी, वूल्नर एवं रिचर्ड पिशेल के नाम प्रमुख हैं । रिचर्ड पिशेल ने प्राकृत भाषाओं पर जर्मन में व्याकरण ग्रंथ लिखा था, जिसका हिन्दी अनुवाद प्रकाशित है।

वर्तमान में इसका विशाल साहित्य उपलब्ध है, किंतु सरकार की ओर से इसका व्यापक प्रचार-प्रसार हेतु अभी तक अत्यल्प ही प्रयास हुये हैं। प्राकृत भाषा के संरक्षण संवर्द्धन के लिये भारत सरकार द्वारा भाषाओं की मान्य आठवीं अनुसूची में प्राकृत भाषा को भी सम्मिलित किया जाये, ताकि इसका चरणबद्ध रूप में निरंतर प्रगति होती रहे।

साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता हे। क्योंकि यदि आज हम गौतम गणधार की वाणी को सुन रहे हैं, पढ़ रहे हैं तो वह श्रुत की है। यदि शास्त्र नहीं होते तो हम उस प्राचीन इतिहास को नहीं जान सकते थे।

यह पर्व ज्ञान की आरधना का महान पर्व है। साथ ही श्रुत के संरक्षण, संवर्धन के प्रति अपने कर्त्तव्य एवं दायित्वों को भी निभाने का दिन है।

पुरुसा सक्कअ बंधा पाउअ बंधोभि होउ सुउमारो।
पुरुसमहिलाणं जेत्तिअमिहन्तरं तेत्तिअतमि माणं।।

संयम स्वास्थ्य योग

पोषक तत्वों का भंडार है संतरा

शायद की कोई ऐसा हो, जिसे संतरा पसंद नहीं, पोषक तत्वों से भरपूर होने की वहज से यह सेहत को ढेरों फायदे पहुंचाता है, इसमें विटामिन ए और सी, प्रोटीन, शुगर, पोटेशियम, मैग्नीशियम समेत कई न्यूट्रिशन्स शामिल हैं, आइये जानते हैं रोजाना संतरे खाने कुछ फायदे।

ब्लड प्रेशर कम करे: संतरे विटामिन बी 6 से भरपूर होते हैं, जो हिमोग्लोबिन के प्रोडक्शन में मदद करते हैं, इसके अलावा इसमें मौजूद मैग्नीशियम हाई ब्लड प्रेशर को नियंत्रित रखने में भी मदद करता है।

दिल के लिये फायदेमंद: संतरे में पाये जाने वाले विभिन्न पोषक तत्व और प्लांट कंपाउंड, जैसे विटामिन सी, फ्लेवोनोइड और कैरोटीनॉयड, हार्ट हेल्थ को बढ़ावा देने और हार्ट डिजीज के जोखिम को कम करने में मदद कर सकते हैं।

इम्युनिटी मजबूत करें: संतरे में मौजूद विटामिन सी एक शक्तिशाली एंटीऑक्सीडेंट हैं, जो व्हाइट ब्लड सेल्स के कार्य में सुधार करके इम्युनिटी को मजबूत करने में मदद करता है।

आंखों के लिये गुणकारी: संतरा कैरोटीनॉयड से भरपूर होता है इनमें मौजूद विटामिन ए आँखों में म्यूकस मेम्ब्रेन को स्वस्थ रखने में मदद करता है।

त्वचा के लिये फायदेमंद: संतरे में मौजूद एंटीऑक्सीडेंट त्वचा को होने वाले नुकसान से बचाते हैं।

आप चाकलेट खा रहे हैं या निर्दोष बछड़ों का मांस

❊ विद्यावाचस्पति डॉक्टर अरविन्द प्रेमचन्द्र, भोपाल ❊

चाकलेट का नाम सुनते ही बच्चों में गुदगुदी न हो, ऐसा हो ही नहीं सकता। बच्चों को खुश करने का प्रचलित साधन है चाकलेट। बच्चों में ही वरन् किशोरों तथा युवा वर्ग में भी चाकलेट ने अपना विशेष स्थान बना रखा है। पिछले कुछ समय से टॉफियों तथा चाकलेटों का निर्माण करने वाली अनेक कंपनियों द्वारा अपने उत्पादों में आपत्तिनजक अखाद्य पदार्थ मिलाये जाने की खबरें सामने आ रही हैं। कई कंपनियों के उत्पादों में तो हानिकारक रसायनों के साथ-साथ गायों की चर्बी मिलाने तक की बात का रहस्योघटन हुआ है।

गुजरात के समाचार पत्र गुजरात समाचार में प्रकाशित एक समाचार के अनुसार नेस्ले यू.के. लिमिटेड द्वारा निर्मित **किटकेट नामक चाकलेट में कोमल बछड़ों के रेनेट (मांस) का उपयोग किया जाता है। यह बात किसी छिपी नहीं है कि किटकेट बच्चों में खूब लोकप्रिय है। अधिकतर शाकाहारी परिवारों में भी इसे खाया जाता है। नेस्ले यू.के. लिमिटेड की न्यूट्रिशन आफिसर श्रीमति वाल एन्डर्सन ने अपने एक पत्र में बताया: किटकेट के निर्माण में कोल बछड़ों के रेनेट का उपयोग किया जाता है। फलतः किटकेट शाकाहारियों के खाने योग्य नहीं है।** इस पत्र को अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिका यंग जैन्स में प्रकाशित किया गया था। सावधान रहो, ऐसी कंपनियों के कुचक्रों से! टेलिविजन पर अपने उत्पादों को शुद्ध दूध से बनते हुये दिखाने वाली नेस्ले लिमिटेड के इस उत्पाद में दूध तो नहीं परन्तु दूध पीने वाले अनेक कोमल बछड़ों के मांस की प्रचुर मात्रा अवश्य होती है। हमारे धन को अपने देशों में ले जाने वाली ऐसी अनेक विदेशी कंपनियाँ हमारे सिद्धान्तों तथा परम्पराओं को तोड़ने में भी कोई कसर नहीं छोड़ रही हैं। व्यापार तथा उदारीकरण की आड़ में भारतवासियों की भावनाओं के साथ खिलवाड़ हो रहा हैं।

हालैण्ड की एक कंपनी वैनेमैली पूरे देश में धड़ल्ले से **फ्रूटेला टॉफी बेच रही। इस टॉफी में गाय की हड्डियों का चूरा मिला होता है, जो कि इस टॉफी के डिब्बे, पर स्पष्ट रूप से अंकित होता है।** इस टॉफी में हड्डियों के चूर्ण के अलावा डालडा, गोंद, एसिटिक एसिड तथा चीनी का मिश्रण है, ऐसा डिब्बे पर फार्मूले (सूत्र) के रूप में अंकित है। फ्रूटेला टॉफी ब्राजील में बनाई जा रही है तथा इस कंपनी का मुख्यालय हालैण्ड के जुडिआई शहर में है। आपत्तिनजक पदार्थों से निर्मित यह टॉफी सहित संसार के अनेक अन्य देशों में भी धड़ल्ले से बेची जा रही है।

चीनी की अधिक मात्रा होने के कारण इन टॉफियों को खाने से बचपन में ही दाँतों का

सड़ना प्रारंभ हो जाता है तथा डायबिटिज एवं गले की अन्य बीमारियों के पैदा होने की संभावना रहती है। हड्डियों के मिश्रमण एवं एसिटिक एसिड से कैंसर जैसे भयानक रोग भी हो सकते हैं।

सन् 1957 में अंग्रेजों ने कारतूसों में गायों की चर्बी का प्रयोग करके सनातन संस्कृति को खण्डित करने की साजिश की थी, परन्तु मंगल पाण्डेय जैसे वीरों ने अपनी जान पर खेलकर उनकी इस चाल को असफल कर दिया। अभी फिर यह नेस्ले कंपनी चालें चल रही है। अभी मंगल पाण्डेय जैसे वीरों की जरूरत है। ऐसे वीरों को आगे आना चाहिये। लेखकों, पत्रकारों को सामने आना चाहिये। देश भक्तों को सामने आना चाहिये। देश को खण्ड-खण्ड करने के मलिन इरादेवालों और हमारी संस्कृति पर कुठराघात करने वालों के सबक सिखाना चाहिये। देव संस्कृति भारतीय समराज की सेवा में सज्जनों को साहसी बनना चाहिये। इस और सरकार का भी ध्यान खींचना चाहिये।

ऐसे हानिकारक उत्पादों के उपभोग को बंद करके ही हम अपनी संस्कृति की रक्षा कर सकते हैं । इसलिये हमारी संस्कृति को तोड़ने वाली ऐसी कंपनियों के उत्पादों के बहिष्कार का संकल्प लेकर आज और अभी से भारतीय संस्कृति की रक्षा में हम सबको कंधे से कंधा मिलाकर आगे आना चाहिये।

कविता

फलती खादी

संस्कार फीचर्स

रंग बिरंगे हर मौसम में फलती हरदम खादी है
दया धर्म है हर तागे में पहनो सीधी-साधी है
खादी यात्रा सिन्धु घाटी से धर्म शास्त्रों में आयी
आजादी के संग्रामों में खादी ने पहचान बनायी
स्वदेशी स्वाबलम्बी खादी भारत की पहचान है
स्वावलम्बी भारत की अब तो खादी से ही शान है
खादी में है सत्य अहिंसा संयम का संस्कार है
करुणा प्रेम समाया इसमें हर प्राणी उपकार है
व्यसन मुक्ति है श्रमनिष्ठ है रोजगार हर हाथ है
सहकारी बनकर हथकरघा खूब निभाता साथ है
शीतकाल में गरम रहे यह गरमी में शीतल खादी
तन मन की हरती व्याधि

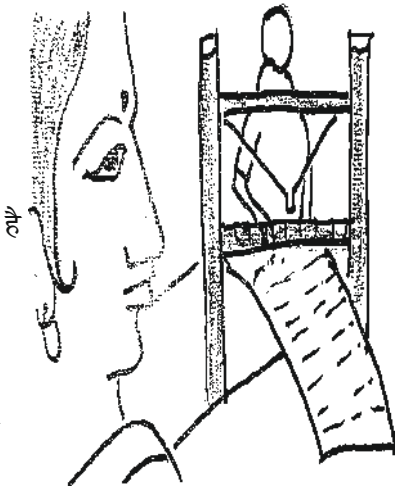

सराग चारित्र हेय कब और क्यों

❊ प्रस्तोता: जैनदर्शनाचार्य पं. नन्हें भाई शास्त्री सागर ❊

पंचाध्यायी उत्तरार्ध 492-93 कविवर राजमल्ल जी चारित्र सामान्य निर्देश-

चरणं वाक्कायचेतोभिर्व्यापारः शुभकर्मसु

तत्त्वार्थ की प्रतीति के अनुसार क्रिया करना चरण कहलाता है। अर्थात् मन, वचन, काय से शुभ कर्मों में प्रवृत्ति करना चरण है।

चारित्र सामान्य का लक्षण

सर्वार्थसिद्धि आचार्य श्री पूज्यपाद 9/9/6/2

चरति चर्यतेऽनेन चरणमात्रंवाचारित्रम् - जो आचरण करता है अथवा जिसके द्वारा आचरण किया जाता है अथवा आचरण करना मात्र चारित्र है। भगवती आराधना-आचार्य श्री शिवार्य गाथा 8-8 **चरंति यांति तेन हित प्राप्ति अहिल निवारणं चेति चारित्रं, चर्यते सेव्यते** द्वारा जीव हित की प्राप्ति और अहित का निवारण करते हैं, उसे चारित्र कहते हैं अथवा सज्जनों के द्वारा जो सेवन किया जाता है वह सामायिक आदि रूप चारित्र हैं।

कर्त्तव्य और अकर्त्तव्य का परिज्ञान होने पर अकर्त्तव्य जो मिथ्यादर्शन, अज्ञान, असंयम, कषाय और योग हैं उनका परिहार चारित्र है।

गाथा 14- ज्ञान में, दर्शन में और पाप कर्म से निवृत्ति में जो प्रयत्नशील है, उसकी परिणति को चारित्र कहते हैं। चारित्र के भेद- राजवार्तिक 1/4/9/17 अकलंक देव- सामान्यपने एक प्रकार चारित्र है अर्थात् चारित्र मोह के उपशम क्षय व क्षयोपशम से होने वाली आत्म विशुद्धि की दृष्टि से चारित्र एक है। बाह्य व अभ्यंतर निवृत्ति अथवा व्यवहार व निश्चय की अपेक्षा दो प्रकार का है औपशमिक, क्षायिक, और क्षायोपाशमिक के भेद से तीन प्रकार का है अथवा उत्कृष्ट मध्य व जघन्य विशुद्धि के भेद से तीन प्रकार का है छद्मस्थों का सराग और वीतराग तथा सर्वज्ञों का सयोग और अयोग इस तरह चार प्रकार है, सामायिक छेदोपस्थापना, परिहार विशुद्धि, सूक्ष्म सांपराय और यथाख्यांत के भेद से पांच प्रकार का है, इसी तरह विविध निवृत्ति रूप परिणामों की दृष्टि से संख्यात् असंख्यात और अनंत विकल्प रूप होता हैं।

चारित्र यद्यपि एक प्रकार है परन्तु उसमें जीव के अंतरंग भाव व बाह्य त्याग दोनों बात युगपत् उपलब्ध होने के कारण अथवा पूर्व भूमिका और ऊँची भूमिकाओं में विकल्प व निर्विकल्पता की प्रधानता रहने के कारण उसका निरूपण दो प्रकार से किया जाता है निश्चय चारित्र व व्यवहार चारित्र। जीव की अंतरंग विरागता या साम्यता तो निश्चय चारित्र और उसका बाह्य वस्तुओं का ध्यान रूप व्रत बाह्य क्रियाओं में यत्नाचार रूप समिति और मन, वचन, काय की प्रवृत्ति को नियंत्रित करने रूप गुप्ति ये व्यवहार चारित्र जिसका नाम सराग चारित्र भी है। और निश्चय चारित्र का नाम वीतराग चारित्र है।

सराग चारित्र का लक्षण- स.सि. 6/92

संसारकारण विनिवृत्ति प्रत्यागूर्णोऽक्षीणाशयः सराग इत्युच्यते प्राणी इन्द्रियेषु अशुभ प्रवृत्तेर्विरतिः संयमः। सरागस्य संयमः सरागो वा संयमः सराग संयमः- जो संसार के कारणों के त्याग के प्रति उत्सुक हैं परन्तु जिसके मन से राग के संस्कार नष्ट नहीं हुये हैं वह सराग कहलाता है, प्राणी और इन्द्रियों के विषय में अशुभ प्रवृत्ति के त्याग को संयम कहते हैं। सरागी जीव का संयम सराग है। **नयचक्र334**

श्रमण जो मूल व उत्तर गुणों को धारण करता है तथा पंचाचारों का कथन करता है, अर्थात् उपदेश आदि देता है और आठ प्रकार की शुद्धियों में निष्ठ रहता है वह उसका सराग चारित्र है। **प्रवचनसार- ता कृ. 230/395/90**

वीतराग चारित्र में असमर्थ पुरुष शुद्धात्म भावना के सहकारी भूत जो कुछ प्रासुक आहार तथा ज्ञानादि के उपकरणों को ग्रहण करता है, व अपवाद मार्ग व्यवहार नय या व्यवहार चारित्र, एक देश परित्याग अपहृत संयम, सराग चारित्र या शुभोपयोग कहलाता है, यह सब शब्द एकार्थवाची हैं।

व्यवहार चारित्र बंध का कारण है इसलिये हेय है -**राजवार्तिक, कषाय, पाहुड, त. सार, प्रवचन सार ता. वृ.5 नयचक्र. 345** आलोचनादि क्रियाओं को समयसार ग्रंथ में शुद्धचारित्रवान के लिये विषकुम्भ कहा है। **यो.सा. 9/69** रागद्वेष करके जो युक्त है उनके लिये प्रत्याख्यानादिक करना व्यर्थ है।

विविध प्रकार के फलों को प्रदान करने वाले आस्रव के कारण वे व्रतादि भी आत्मा को कर्मबंध के कारण है देशव्रत और सराग संयम में पुण्य बंध कारणों के प्रति कोई विशेषता नहीं है। **प्र.सा.5**

जिसमें कषाय कारण विद्यमान होने से जीव को जो पुण्य बंध की प्राप्ति का कारण है ऐसे सराग चारित्र को प्रथम प्राप्त करता है। सराग चारित्र साक्षात् मोक्ष का मार्ग नहीं है॥ 6॥ सराग चारित्र से मात्र देवेन्द्र की सम्पदा प्राप्त होती है निर्वाण की प्राप्ति नहीं होती है। **प्र.सा. 6**

अतीन्द्रिय सुखापेक्षया हेयस्य इन्द्रियसुखस्य कारणात्वात् सरागचारित्रं हेयमिति अतीन्द्रिय सुख की अपेक्षा यह सरागचारित्र हेय है क्योंकि यह इन्द्रिय सुख का कारण है।

प्र.सा. आचार्य श्री कुंदकुंद देव :76

शुभोपयोग के फलस्वरूप प्राप्त हुई पुण्य सम्पदायें और अशुभोपयोग के कारण प्राप्त हुई पाप सम्पदायें आत्मा के अपने स्वाभाविक सुख अर्थात् वास्तविक सुख न होने से दोनों एक ही है। इसलिये नर नारकी पशु या देव पंचेन्द्रियात्मक शरीर के कारण दुःख ही अनुभव करते हैं । अतः सुख और दुःख में कोई विशेषता न होने से उनके कारण भूत जो पुण्य और पाप हैं उनमें भी कोई भेद नहीं रहा। इससे सिद्ध होता है कि इन्द्रिय आदि के लिये तो उपयोग शुभ अथवा अशुभ इस प्रकार भिन्न भले हो जायें किन्तु आत्मा के लिये कैसे हो सकते हैं । अर्थात् आत्मा के लिये दोनों उपयोगों में कोई विशेषता नहीं है।

सराग चारित्र विरूद्ध व अनिष्ट फल प्रदायी है- **प्र.सा. 9-11**

अनिष्ट फलदायी होने से सराग चारित्र हेय है। वह धर्म परिणत स्वभाव वाला होने पर भी शुभोपयोग परिणति के साथ युक्त होता है। तब जो विरोधी शक्ति सहित होने से स्वकार्य करने में असमर्थ है कथंचित् विरूद्ध कार्य (बंध को) करने वाला है। ऐसे चारित्र से युक्त होने से जैसे अग्नि से गर्म किया घी किसी मनुष्य पर डाल दिया जावे तो वह उसकी जलन से दुखी होता है। उसी प्रकार वह स्वर्ग सुख के बंध को प्राप्त होता है।

सराग चारित्र कंथचित् हेय है- समाधिशतक 83 हिंसादि पांच अव्रतों से पांच पाप का और अहिंसादि पांच व्रतों से पुण्य का बंध होता है पुण्य और पाप दोनों कर्मों का विनाश मोक्ष है इसलिये मोक्ष के इच्छुक भव्य पुरुष को चाहिये कि अव्रतों की तरह व्रतों को भी छोड़ दे।

नयचक्र- निश्चय चारित्र से मोक्ष होता है। और व्यवहार अर्थात् सराग चारित्र से बंध इसलिये मोक्ष के इच्छुक को मन, वचन, काय से सराग चारित्र छोड़ना चाहिये। **नियमसार944**

जो संयत निश्चय से शुभ भाव में आचरण करता है वह अन्यवश होता है इसलिये उसका कर्म तो आवश्यक लक्षण नहीं होता है। जो भी जिनेन्द्र भगवान के मुख कमल से प्रकट हुआ आचार शास्त्र के क्रमानुसार संयमी होता हुआ शुभोपयोग में प्रवृत्ति करता है, तथा व्यावहारिक धर्मध्यान में प्रवृत्त होता हुआ आचार प्रधान बनता है, स्वाध्याय का समय देखकर स्वाध्याय करता है प्रतिदिन आहार करने के बाद चतुर्विध आहार का त्याग करता है, तीनों संध्याओं में भगवान अर्हंत परमेश्वर की अनेक स्तुतियों द्वारा जिसका मुख कमल मुखरित होता है जो त्रिकाल संबंधी अपने गृहित नियमों में तत्पर रहता है, इस प्रकार रात दिन में ग्यारह क्रियाओं में तत्पर रहता है, पाक्षिक, मासिक, चातुर्मासिक और वार्षिक प्रतिक्रमण पाठ के सुनने से उत्पन्न हुये संतोष सूचक रोमांचों द्वारा जिसका धर्ममय समस्त शरीर व्याप्त हो रहा है अनशन, अवमौदर्य, रसपरित्याग, वृत्तिपरिसंख्यान, विविक्त, शय्यासन और कायक्लेश नामक छह बाह्य तपों में जो निरंतर उत्साह के साथ तत्पर रहता है स्वाध्याय ध्यान, शुभाचरण से च्युत होने पर पुनः उसी में स्थिति करने रूप प्रायश्चित, विनय, वैयावृत्त्य और व्युत्सर्ग नामक आभ्यन्तर तपों के करने में जिसकी बुद्धि अत्यन्त कुशल है, परन्तु वह निरपेक्ष तपस्वी साधु मोक्ष का साक्षात् कारण स्वात्मा के आश्रय से होने वाला आवश्यक कर्म तथा परमात्व तत्त्व में विश्रांति रूप निश्चय धर्मध्यान एवं शुक्लध्यान को नहीं जानता इसलिये परद्रव्यों से उलझा होने से अन्यवश कहा गया है। जिसका चित्त परम तपश्चरण में लीन है ऐसा यह अन्यवश साधु स्वर्गलोकादि के क्लेश उठाता हुआ शुभोपयोग के फलस्वरूप प्रशस्त राग रूपी अंगारों के द्वारा पच्यमान होता रहता है। उत्तम मुनि को चाहिये कि वह स्वर्गलोकादि रूप क्लेश में अप्रीति को करता है इस कारण सराग चारित्र हेय है। **स.सार. 304-6**

संसिद्धि, राध, सिद्धि, साधित और आराधित इन शब्दों का अर्थ एक ही है, यहां शुद्ध आत्मा की सिद्धि अथवा साधन का नाम राध है। जिसके यह नहीं है वह आत्मा सापराध है, सापराध बंध की शंका होती है इसलिये अनाराधक है, जो आत्मा सापराध है वह तो निरंतर अनंत पुद्गल परमाणु रूप कर्मों से बंधता है, सापराध आत्मा तो अपने आत्मा को नियम से अशुद्ध ही

सेवन करके सापराध ही होता है। सराग चारित्र वाले अर्थात् सापराध के अप्रतिक्रमणादि अपराध के दूर करने वाले नहीं है इसलिये विषकुम्भ कहे गये हैं। अप्रतिक्रमण, अप्रतिसरण, अपरिहार, अधमूणा, अनिवृत्ति, अनिन्दा, अगर्हा और अशुद्धि ऐसे आठ प्रकार के लगे हुये दोष का प्रायश्चित न करना वह तो विषकुंभ है, परन्तु जो सराग चारित्र में अप्रतिक्रणादिक कहे हैं वे निश्चय से विषकुंभ ही हैं क्यांकि आत्मा तो प्रतिक्रमणादिक से रहित शुद्ध अप्रतिक्रमणादि स्वरूप है। जो पुरुष परद्रव्य का ग्रहण करने वाला है वही अपराध को करता है उसी के बंध को शंका होती है।

सराग संयमों गुण सेढिणिज्जराए-कषाय पाहुड़ 1/1 सराग चारित्र में गुण श्रेणी निर्जरा

यदि यह कहा जावे कि सराग चारित्र गुण श्रेणी निर्जरा का कारण है क्योंकि उससे बंध की अपेक्षा अर्थात् कर्मों की निर्जरा असंख्यात गुणी होती है अतःअर्हत् नमस्कार की अपेक्षा सराग चारित्र में ही मुनियों की प्रवृत्ति होना योग्य है, सो ऐसी भी निश्चय नहीं करना चाहिये, क्योंकि अर्हंत नमस्कार तत्कालीन बंध की अपेक्षा असंख्यात गुणी कर्म निर्जरा का कारण है इसलिये सराग चारित्र के समान उसमें भी मुनियों की प्रवृत्ति प्राप्त होती है।

प.घ. उ.- सराग चारित्र निर्जरा व मोक्ष का कारण नहीं बुद्धि की मंदता से यह भी आशंका नहीं करनी चाहिये कि शुभोपयोग एक देश से निर्जरा का कारण हो सकता है, कारण कि निश्चय नय से शुभोपयोग भी संसार का कारण होने से निर्जरादि का हेतु नहीं हो सकता।

द्रव्य संग्रह टीका 45-46

पांच महाव्रत, पांच समिति गुप्ति रूप अपहृतसंयम नाम वाला शुभोपयोग सराग चारित्र होता है। वहां बाह्य विषयों में पांचों इन्द्रियों के विषयादि का त्याग है सो उपचरित असद्भूत व्यवहार नय से चारित्र है व्यवहार चारित्र से साध्य परमोपेक्षा लक्षण शुद्धोपयोग अविनाभूत होने से उत्कृष्ट सम्यक् चारित्र जानना चाहिये।

उपसंहार- वृहद द्रव्य सं. 34 की संस्कृत टीका

सम्दृष्टि के चौथे, पांचवें छठवें गुणस्थान में एक शुभोपयोग ही कहा है इससे सिद्ध है कि व्यक्त राग सहित सम्यग्दृष्टि को शुभोपयोगी कहा है अर्थात् शुभापयोग में दो अंश होते हैं एक राग अंश दूसरा सम्यग्दर्शन या सम्यक् चारित्र अंश जितने अंश में सम्यक् दर्शन या सम्यक् चारित्र है उतने अंश में बंध नहीं है। अर्थात् संवर व निर्जरा है, किन्तु जितने अंशों में राग है उतने अंशों में बंध है। **पु. सि.** में शुभोपयोग में रागांश के द्वारा पुण्य बंध होता है किंतु वह बंध अवश्य ही मोक्ष का उपाय है बंध का उपाय नहीं । तीर्थंकर व उत्कृष्ट संहननादि विशिष्ट पुण्य प्रकृति बंधती है। जो मोक्ष के लिये सहकारी कारण होती है।

व्यवहार चारित्र की इष्टता=मो.पा.मू. 25

व्रत और तप से स्वर्ग होता है, और अव्रत अतप से नरकादि गति में दुख होते हैं। इसलिये व्रत श्रेष्ठ है और अव्रत नहीं। जैसे छाया व आतप में खड़े होने वाले के प्रतिपालक कारणों में बड़ा भेद है।

प्र.सा./त.व्र. 202

अहो मोक्षमार्ग में प्रवृत्ति के कारण भूत 13 विध चारित्राचार मैं यह निश्चय से जानता हूँ कि तू शुद्धात्मा नहीं तथापि तुझे तभी तक अंगीकार करता हूं जब तक कि तेरे प्रसाद से शुद्धात्मा को उपलब्ध न कर लूं।

सा.घ. 2/77

पंचेन्द्रिय संबंधी स्त्री आदिक विषय जब तक या जब से सेवन में आना शक्य न हो तब तक या तब से उन विषयों को फिर से उन विषयों में प्रवृत्ति होने के समय तक छोड़ देना चाहिये। क्योंकि व्रत सहित मरा हुआ परलोक में सुखी होता है।

प.प्र. टीका 72/52

प्रश्न- व्रत से क्या प्रयोजन/भावना मात्र से मोक्ष हो जावेगी क्या भरतेश्वर ने व्रत धारण किये थे उसे दो घड़ी में बिना व्रतों के ही मोक्ष हो गई।

उत्तर- भरतेश्वर ने भी व्रत धारण किये थे पर थोड़ा काल होने से उनका पता न चला।

प्रश्न- तब तो हम भी मरण समय थोड़े काल के व्रत धारण कर लेंगे।

उत्तर- यदि किसी अंधे को किसी प्रकार निधि का लाभ हो जाये तो क्या सबको हो जावेगा। अतः सराग चारित्र भले ही राग सहित हो परंतु वह भी परम्परा से मोक्ष का कारण ही इसलिये सर्वथा उपादेय है।

कविता

विश्वास

संस्कार फीचर्स

हाथ की रेखा, पांव की रेखा, दोनो रेखा भविष्य वक्ता
संकेत कहता भाग्य बताती हस्तरेखा भाग्य बनाती
पैर की रेखा, भाग्य कर्म सदा बनेगा पुरुषार्थ से ही भाग्य जगेगा
विश्वास हो पुरषार्थ पर कर्म पर निज धर्म पर सहज सत्ता
भगवान पर अपने हाथ के श्रम साध्य पर
अपने बनाये लक्ष्य पर दिगम्बरों की शान हैं जैन का ईमान है सत्य की पहचान है
हब सब का अरमान है, अंतरीक्ष पार्श्वनाथ दिगम्बर स्वरूप में हम सबको भगवान है

दक्षिण भारत के जैन वीर

❊ लेखक-श्रीयुत त्रिवेणी प्रसाद, बी.ए. ❊

अहिंसा का सिद्धांत जैनमत की सबसे बड़ी विशेषता है। वास्तव में इसी सिद्धांत की नींव पर जैनमत स्थित है। लेकिन इस सिद्धान्त को विदेशी ओर कतिपय देशी इतिहासकारों ने जो भारत की अधोगति का कारण माना है, वह मिथ्या है। अन्य मतावलम्बियों की बात तो दूर, स्वयं अहिंसाव्रतावलम्बी जैनों ने ही कर्मक्षेत्र में जिस कर्त्तव्यपरायणता का उदाहरण उपस्थित किया है, वह सर्वथा स्तुत्य है। जहाँ जैन साधुओं ने अहिंसाव्रत को तपस्या की सीढ़ी तक पहुंचा दिया हे, वहाँ कर्म क्षेत्र में निरत रहने वाले जैनों ने उसे कर्मयोग की दृष्टि से देखा और समझा है। देश की स्वतन्त्रता की रक्षा के समय उन्होंने अहिंसा को कभी अपने मार्ग की बाधा नहीं होने दिया है। जिन जैन वीरों के हाथ में प्रजापालन और देश रक्षा का भार आया था, उन्होंने अहिंसा में कर्म को देखा और कर्म में अहिंसा को। कर्म के दर्शन में उन्होंने अहिंसा-दर्शन को घुला-मिला दिया और अहिंसा की आड़ में भीरुता को छिपाने वालों को आगे मार्ग-प्रदर्शक का काम किया। आज हम दक्षिण भारत के कुछ ऐसे ही जैन वीरों का इतिहास उपस्थित करते हैं।

चामुण्डराय- जैन इतिहास में चामुण्डराय का नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित है। वे केवल वीर ही नहीं बड़े भारी कवि भी थे। **चामुण्डराय-पुराण** (जिसका समय 978 ई. माना जाता है) उन्हीं की कृति है। ये कर्नाटक के रहने वाले थे। ये गंगवंश के राजा मारसिंह और उनके पुत्र और उत्तराधिकारी राचमल्ल के दरबार में थे। चामुण्डराय ने अपने को ब्रह्मक्षत्र जाति का बतलाया है इसीलिये उनकी एक उपाधि **ब्रह्मक्षत्र-शिखमणि** भी है।

पता चलता है कि उनके गुरु प्रसिद्ध अजितसेन थे। लेकिन नेमिचन्द्र सिद्धान्त-चक्रवर्ती का भी उन पर काफी प्रभाव पड़ा था। नेमिचन्द्र ने अपनी रचना **गोम्मटसार** में चामुण्डराय की बड़ी प्रशंसा की है। इसके अतिरिक्त कन्नड कवि, चिदानन्द ने भी अपनी रचना मुनिवंशाभ्युदय में नेमिचन्द्र को चामुण्डरय का गुरु बतलाया है।

जिस युग में चामुण्डराय हुये थे, यह गंगवंश के राजाओं के लिये बड़ी मुसीबत का था। वे चारों ओर से दुश्मनों से घिर हुये थे। अपना अस्तित्व को बचाये रखने के लिये और अपनी उन्नति के लिये उन्हें निरन्तर युद्ध करना पड़ा, और इसमें सन्देह नहीं कि इन युद्धों के संचालक चामुण्डराय ही थे।

चामुण्डराय के समय में गङ्गराज मारसिंह पर नोलंबो ने चढ़ाई की। लेकिन गोतूर के मैदान में चामुण्डराय ने उनकी सेना को छिन्नभिन्न कर दिया।। चामुण्डराय पुराण से पता चलता है कि इस वीरता के लिये चामुण्डराय **वीरमार्तण्ड** की उपाधि से विभूषित किये गये। ब्रह्मदेव के स्तम्भलेख से मालूम होता है कि इस विजय के अवसर पर स्वयं मारसिंह ने नोलंब कुलान्तक की उपाधि धारण की थी।

दूसरा संकट पश्चिमी चालुक्यों की ओर से था। मारसिंह के ही समय में पश्चिमी चालुक्यों ने उपद्रव मचाना आरम्भ किया था। मारसिंह के पुत्र राचमल्ल के समय में चामुण्डराय ने राजादित्य को परास्त कर यह विपत्ति दूर की। कहा जाता है क **उच्चंगि** के दुर्जय किले में

राजादित्य ने आश्रय लिया था। इस दुर्ग को जीतना एक प्रकार से असम्भव ही माना जाता था। कुछ समय पहले **काडुवेदी** ने इस किले का घेरा डाला था, पर बहुत दिनों तक घेरा डालने पर भी वह इसे वश में नहीं ला सका था। लेकिन चामुण्डराय के आगे इस दुर्ग की दुर्जयता न रह सकी। ब्रह्मदेव स्तम्भ के लेख से (जो 974 ई. का है, और जो श्रवणबेलगोल में पाया गया था) पता चलता है कि चामुण्डराय ने इस किले को विध्वस्त कर संसार को आश्चर्य में डाल दिया। स्वयं चामुण्डराय की कृति, चामुण्डराय पुराण से भी इस बात की पुष्टि होती है। वह लिखते हैं कि **उच्चंगि** के किले को वीरता पूर्वक हस्तगत करने के कारण उन्हें **रणरंगसिंग** को उपाधि मिली थी। त्यागद ब्रह्मदेव स्तम्भ के लेख से मालूम होता है कि रणसिंह राजादित्य की उपाधि थी। इस प्रकार चामुण्डराय ने शत्रु को परास्त कर उसकी उपाधि धारण की थी। स्वयं राचमल्ल ने इस विजयोपलक्ष में जगदेकवीर की उपाधि ग्रहण की थी।

तीसरी घटना, जिसकी वजह से चामुण्डराय ने **समर-धुरंधर** की उपाधि पाई, खेडग का युद्ध है। इस युद्ध में उन्होंने वजवलदेव (वज्जल) को परासत किया था। इसका वृतांत चामुण्डराय-पुराण में मिलता है। त्यागद ब्रह्मदेव-स्तम्भ-लेख में भी इसका उल्लेख हे।

उक्त पुराण के अनुसार चामुण्डराय ने बागयूर दुर्ग के त्रिभुवनवीर नामक एक सरदार को मारकर **वैरिकुलकालदण्ड** की उपाधि पाई। इसके बाद राज, वास, सिवर, कुणांक आदि सरदारों को काम नामक राजा के दुर्ग में मारकर **भुजविक्रम** की उपाधि प्राप्त की। मदुराचय ने जो **चलदंक गंग** और **गंगरभट्ट** के नाम से भी प्रसिद्ध है, चामुण्डराय के छोटे भाई, नागवर्मा को मार डाला था। चामुण्डराय ने उसे मारकर भाई की मृत्यु का बदला चुकाया। त्यागद ब्रह्मदेव-स्तम्भ-लेख से मालूम होता है कि चलदंक-गंग ने गङ्ग-राज सिंहासन पर अधिकार जमाना चाहा था। चामुण्डराय ने उसके प्रयास को निष्फल करके उन्हें **समर-परशुराम** की उपाधि मिली। उक्त पुराण ही से यह भी पता चलता है कि अन्य कई वीरों पर विजय पाने के कारण उन्हें **प्रतिपक्षराक्षस** की उपाधि मिली थी। इन उपाधियों के अतिरिक्त वे भटमारि और सुभटचूड़ामणि की उपाधियों से भी भूषित किये गये थे।

चामुण्डराय केवल वीर और युद्धपरायण ही नहीं थे, उनमें वे सभी गुण थे, जो विशिष्ट और धर्मानुरागी व्यक्तियों में पाये जाते हैं। अपने सद्गुणों के कारण ही उन्हें सत्ययुधिष्ठिर गुणरत्नभूषण और कविजनशेखर की उपाधियाँ मिली थी। राय भी एक उपाधि ही थी, जो राजा ने उनकी उपकार प्रियता और उदारता से प्रसन्न होकर उन्हें दी थी।

चामुण्डराय ने जैनधर्म के लिये क्या किया, यह बताने के लिये 1159ई. के एक लेख का उद्धरण देना उचित होगा। उक्त लेख में लिखा है- यदि यह पूछा जाय कि शुरु में जैनमत की उन्नति में सहायता पहुंचाने वालों में कौन-कौन लोग हैं ? तो इसका उत्तर होगा-केवल चामुण्डराय। उनके धर्मोन्नति संबंधी कार्यों का विशद वर्णन न कर हम सिर्फ इतना ही उल्लेख करेंगे कि श्रवणबेलगोल में गोमटेश्वर की विशाल मूर्ति चामुण्डराय की ही कीर्त्ति है। यह मूर्ति 57 फीट ऊँची है और एक ही प्रस्तर-खण्ड की बनी है। गोम्मटेश्वर की मूर्ति के समीप ही द्वारपालकों की बाई ओर प्राप्त एक लेख से, जो 1180 ई. का है। निम्नलिखित बातें इस मूर्ति का निर्माण के

संबंध में मालूम होती हैं-

महात्मा बाहुबली पुरु के पुत्र थे। उनके बड़े भाई द्वन्द्व-युद्ध में उनसे हार गये, लेकिन महात्मा बाहुबली पृथ्वी का राज्य उन्हें की सौंपकर तपस्या करने चले गये और उन्होंने कर्म पर विजय प्राप्त की। पुरुदेव के पुत्र राजा भरत ने पौदनपुर में महात्मा बाहुबली केवली की 525 धनुष ऊँची एक मूर्ति बनवाई। कुछ कालोपरान्त, उस स्थान में ,जहाँ बाहुबली की मूर्ति थी, असंख्य कुक्कुट सर्प (एक प्रकार पक्षी, जिनका सिर तो सर्प के सिर के समान होता था और शरीर का बाकी भाग कुक्कुट के समान) उत्पन्न हुये। इसीलिये उस मूर्ति का नाम कुक्कुटेश्वर भी पड़ा। कुछ समय बाद स्थान साधारण मनुष्यों के लिये अगम्य हो गया। उस मूर्ति में अलौकिक शक्ति थी। उसके तेज पूर्ण नखों को जो मनुष्य देख लेता था, वह अपने पूर्व जन्म की बातें जान जाता था। जब चामुण्डराय ने लोगों से इस जिन मूर्ति के बारे में सुना, तो उन्हें उसके देखने की उत्कट अभिलाषा हुई। जब वे वहाँ जाने को तैयार हुये, तो उनके गुरुओं ने उनसे कहा कि वह स्थान बहुत दूर और अगम्य है। इस पर चामुण्डराय ने इस वर्तमान मूर्ति का निर्माण कराया।

चामुण्डराय का ही दूसरा नाम **गोमट** था, इसलिये इस नवनिर्मित मूर्ति का नाम **गोम्मटेश्वर** पड़ा।

शान्तिनाथ-शान्तिनाथ के विषय में 1068 ई. के एक लेख से पता चलता है कि इनके पिता का नाम गोविन्दराज था। इनके गुरु का नाम वर्द्धमान व्रती था, जो मूलसंघ के और देशीयगण के थे। शान्तिनाथ पश्चिमी चालुक्य राजा सोमेश्वर द्वितीय के समय में वनवसेनाड़ प्रान्त के शासक रायदंड गोपाल क्ष्म के मंत्री और सेनापति थे। 1068 के उक्त लेख में उन्हें **वनवसेनाड** राज्य का कोषाध्यक्ष और उसका उन्नायक कहा गया है। इसी लेख में उन्हें श्रेष्ठ जैनमत-रूपी कमल के लिये राजहंस कहा गया।

शान्तिनाथ केवल सेनानायक ही नहीं , निपुण कवि भी थे। उक्त लेख में उन्हें जन्मजात और निपुण कवि कहा गया है। उन्हें सरस्वती-मुख-मुखर की उपाधि मिली थी।

जैन मत के लिये शान्तिनाथ ने जो कुछ किया है, वह चिरस्थायी है। कहा जाता है कि उनकी ही प्रेरणा से लक्ष्म ने पत्थर का एक जिनमंदिर निर्मित कराया और उसने तथा उसके राजा सोमेश्वर द्वितीय ने भी उस मंदिर को भारी जागीरें दी। उस मंदिर का नाम मल्लिकामोद शान्तिनाथ वसदि है।

गंगराज- होयसल राजा विष्णुवर्द्धन बिट्टिगदेव के यहाँ गंगराज, बोप्प, पुणिप, बलदेव, मरियण्ण, भरत एच ओर विष्णु ये आठ जैन योद्धा थे। विष्णुवर्द्धन ने 12वीं शताब्दी में हुआ था, अतः इन वीरों का समय निश्चित है।

गंगराज कौण्डिन्व गोत्र के द्विज थे। उनके पिता का नाम एच, एचियांग या बुद्धमित्र था और माता का पूचिकब्बे। उनके पितामह का नाम मार और पितामही का माकणव्वे था। इन बातों का पता 1118 और 1119 के शिलालेखों से लगता हे। गंगराज माता-पिता की सबसे छोटी संतान थे। उनकी स्त्री का नाम नागला देवी या लक्ष्मी और लड़के का नाम बोप्प या एच था।

श्रवणबेलगोल के एक लेख से पता चलता है कि गंगराज के माता पिता कट्टर जैन थे। 1120 ई. के एक शिलालेख से पता चलता है कि गंगराज की माता ने इसी साल (1120 ई. में)

संल्लेखना की विधि से प्राण-त्याग किया। चामुण्डराय-बसदि के एक शिलालेख में गंगराज की प्रशंसा की गई है और उनकी उपाधियों का वर्णन किया गया है। इन्हीं शिलालेखों से यह पता चलता है कि गंगराज ने अपने अतुल पराक्रम से होयसल राज्य का काफी विस्तार किया था।

विष्णुवर्द्धन के समय में होयसल राज्य की उन्नति और रक्षा के लिये सबसे आवश्यक और महत्वपूर्ण काम था राज्य का सुदृीकरण। इसका कार्य

जो गंगराज को सौंपा गया। यह काम अत्यन्त दुःशक्य था, क्योंकि तलकाड से चोलों को मार भगवाने के लिये वहाँ के सामन्त को जीतने के अतिरिक्त तलकाड के पूर्वीय भाग में स्थित सामन्त दाम या दामोदर और पश्चिमी घाट के सामन्त नरसिंहवर्मा को परास्त करना आवश्यक था। इस समय चोलों के राजा राजेन्द्रदेव द्वितीय थे। गंगराज ने बड़ी वीरता और कुशलता से तलकाड से चोलशक्ति का समूल नाश कर दिया। 1135 ई. के एक शिलालेख से इस बात की पुष्टि होती है। अंगडि के शिलालेख से यह भी मालूम होता है कि यह विजय 1117 में प्राप्त हुई थी। इसके बाद गंगराज ने पूर्वी तलकाड के सामंत दामोदर को युद्ध में परास्त किया। दामोदर प्राण-रक्षणार्थ जंगलों में भाग गया। श्रवणबेलगोल में प्राप्त 1175 के एक शिलालेख से यह बात विदित होती है।

अब सिर्फ एक सामंत-पश्चिमी घाट का शासक नरसिंह वर्मा- रह गया। श्रवणबेलगोल के उक्त शिलालेख और अरेगल्लु वस्ती के शिलालेख से पता चलता है कि नरसिंहवर्मा और चोल राजा के दूसरे सामंत हारकर घाट की पहाड़ियों पर भाग गये और इस तरह समूचा नाडु होयसल राजा के अधीन हो गया। पीछे नरसिंह वर्मा मारा गया।

जब गंगराज ने इस प्रकार होयसल राज्य का विस्तार किया, तो विष्णुवर्द्धन ने कृतज्ञता प्रकाशन के निमित्त उनसे पुरुस्कार माँगने को कहा। गंगराज ने केवल गंगवाडि मांग लिया। जान पड़ता है कि गंगवाडि में गोम्मटदेव तथा अन्य अनेक जिन-मंदिर थे, जिनकी व्यवस्था ठीक नहीं हो रही थी। अतः गङ्गराज का उद्देश्य वहाँ के मंदिरों का जीणोद्धार करके जैनमत की उन्नति करना था। यही कारण था कि अन्य दुर्लभ वस्तुओं और धन-धान्य की इच्छा न करके उन्होंने केवल गङ्गवाडि ही माँगा, जिसे राजा ने सहर्ष उन्हें समर्पित किया। धर्म के प्रति इस अनुराग से गङ्गराज को बहुत यश प्राप्त हुआ। जैन साधुओं ने मुक्तकंठ से उनकी प्रशंसा की। वर्द्धमानाचारी ने 1118 के अपने शिलालेख में उन्हें चामुण्डराय से सौगुना सौभाग्यशाली बताया।

गङ्गराज का पुत्र बोप भी अपने पिता के ही मार्ग का अनुगामी था। वह भी वीर सेनानायक और कट्टर जैन था। अपने पिता की मृत्यु के बाद उसने **दोरसमुद्र** में एक जिनालय बनवाया। कहा जाता है कि 1134 ई. में बोप ने कई शक्तिशाली शत्रुओं को परास्त किया और अपने बाहुबल से कोंग लोगों को अधीन किया।

पुणिप- पुणिप या पुणिपमय्य के पूर्वज राजमंत्री थे। उनके पिता का नाम पुणिपराज दंडाधीश था और उनकी उपाधि सकलशासनवाचकचक्रवर्ती थी। पुणिपय्य राजा विष्णुवर्द्धन के संधिविग्रहिक मंत्री थे। चामराजनगर में पार्श्वनाथ बस्ती के पास पाये गये शिलालेख से यह बात विदित होती है। बेलूर में केशवमंदिर में पाये गये लेख से भी इस बात की पुष्टि होती है।

इतिहासकारों का मत है कि पुणिप ने यद्यपि अपने पराक्रम से गङ्गराज की तरह कर्नाटक में एक नया युग नहीं उपस्थित किया, तो भी उनकी विजयों ने होयसल राजाओं के लिये दक्षिण का द्वार खोल दिया, और उनकी विजयों के फलस्वरूप ही विष्णुवर्द्धन अपना साम्राज्य बढ़ाने में समर्थ हो सके। जिस समय गङ्गराज तलकाड में चोलों की शक्ति मर्दित कर रहे थे, उस समय पुणिप ने कोगाल्व, कोडग, टोड और केरल -राजाओं को जीतकर विष्णुवर्द्धन की विजय-वाहिनी के लिये नीलगिरि के दक्षिण का मार्ग खोल दिया। 1117 ई. चामराज नगर वस्ती-लेख से उक्त कथन की पुष्टि होती है। गङ्गराज की ही तरह पुणिप भी उदारचेता और धर्मानुरागी थे। उन्होंने भी कई जिन-मन्दिरों का निर्माण कराया था। इस बात का भी प्रमाण मौतूद है कि स्वधर्मानुरागी होने पर भी पुणिप के हृदय में अन्य धर्मों के प्रति उदारता का भाव था।

बलदेव- बलदेव या बलदेवगण राजा आदित्य या अरसादित्य के तीसरे लड़के थे। उनकी माता का नाम **आचाम्बिके** था। 1120 ई. में वे वर्तमान थे। ये भी राजा विष्णुवर्द्धन के आठ मंत्रियों में से थे। ये तीन भाई थे, और तीनों कर्नाटक का मुख उज्जवल करने वाले थे। इनके सैनिक जीवन के संबंध में कोई विशेष बात मालूम नहीं।

विष्णुविट्टिमय्य- विष्णुविट्टिमय्य भी होयसल राजा विष्णुवर्द्धन के ही समय में हुये थे। इन्हें इम्मडि दण्डनायक विट्टिमय्य के नाम से भी पुकारा गया है। ये बड़े प्रतिभाशाली थे और बहुत थोड़ी ही उम्र में इन्होंने अपनी बुद्धि और वीरता प्रदर्शित की थी। बेलूर के सौम्यनाथ के मंदिर के 1136 के एक लेख से इनका वृत्तान्त विदित होता है। इनके पूर्वज बराबर से राजमंत्री का पद सुशोभित करते आये थे। इनके पितामह का नाम उदयादित्य और पिता का नाम चेन्नराज दंडाधीश था। विष्णु चेन्नराज के द्वितीय और छोटे पुत्र थे। राजा विष्णुवर्द्धन ने बड़े समारोह से इनका उपनयन-संस्कार कराया था। 7 या 8 साल की उम्र में ही ये शास्त्र विद्या में निपुण हो गये थे। इसी उम्र में विष्णुवर्द्धन की प्रेरणा से उनके एक मंत्री की कन्या से विट्टिमय्य का विवाह हुआ। इस अवसर पर राजा ने स्वयं सुवर्ण-कलश उठाकर उनका अभिषेक किया था। दस या ग्यारह वर्ष की आयु में विष्णुविट्टिमय्य की प्रतिभा इतनी प्रखर हो चुकी थी कि राजा ने उन्हें **महाप्रचंड दंडनायक** की उपाधि से विभूषित किया।

शीघ्र ही विट्टिमय्य के शौर्य्य की परीक्षा का अवसर आया। कोंगु ने राजा विष्णुवर्द्धन को कर देना बन्द कर दिया था। राजा ने उसे दंड देने का भार विट्टिमय्य पर ही सौंपा। एक सप्ताह के भीतर ही उन्होंने कोंगु पर चढ़ाई कर दी। इस समय चोल, चेर पाण्डय और पल्लव राजाओं ने मिलकर विष्णुविट्टिमय्य के विरूद्ध सम्मिलित संगठन किया। समुद्र के किनारे इन राजाओं की सेना इकट्ठी हुई। किन्तु विट्टिमय्य ने एक पक्ष के भीतर ही इस सम्मिलित विशाल सेना का ध्वंस कर दिया। उन्हें युद्ध में शत्रुओं के बहुत से हाथी हाथ लगे। रायराजपुर जला दिया गया। इस तरह कोंगु परास्त हुआ। विट्टिमय्य ने अपनी विजय के स्मारक-स्वरूप दक्षिण में एक कीर्तिस्तम्भ भी बनवाया।

विष्णुविट्टिमय्य परमधार्मिक जैन थे। उन्होंने दोरसमुद्र में एक जिनालय बनवाया था, जिसका नाम उन्होंने अपने राजा के नाम पर विष्णुवर्द्धन जिनालय रक्खा। उनके गुरु का नाम

श्रीपाल त्रैविधदेव था। उन्होंने जिन-मंदिर को व्यवस्था और ऋषियों के भोजनादि के प्रबंध के लिये कई गाँव अपने गुरु को समर्पित किये थे। इन्हीं गाँवों में **बीजबोल्लल** नामक गाँव भी था, जो उन्हें राजा की ओर से पुरुस्कार में मिला था।

देवराज- विष्णुवर्द्धन के बाद उसका पुत्र नरसिंह प्रथम (114-1173 ई.) सिंहासनारूढ़ हुआ। इसके समय में चार जैन वीर हुये। ये थे- देवराज (देवराज), हुल्ल, शान्तियण्ण और ईश्वर।

देवरा कौशिक गोत्र के थे। इनके गुरु का नाम मुनिचन्द्र भट्टारक था। इतिहास में देवराज को चामुण्डराय और गङ्गराज के तुल्य स्थान दिया गया है। राजा नरसिंह ने इन्हें **सूरनहल्लि** नामक गाँव पुरुस्कार में दिया था। देवराज ने इस गाँव में एक चैत्यालय बनवाया और अपने गुरु के नाम पर उसका उत्सर्ग कर दिया। राजा ने उस गाँव का नाम बदल कर **पर्वपुर** रक्खा।

देवराज के सैनिक जीवन के संबंध में हमें विशेष रूप से कुछ मालूम नहीं।

हुल्ल- श्रवणबेलगोल के लेखों से, जो 1159 से 1163 ई. के बीच के भिन्न-भिन्न समय के हैं, पता चलता है कि हुल्ल के पिता का नाम यक्षराज या जफराज, माता का नाम लोकाम्बि के और स्त्री का नाम पद्मावती था। इन लेखों से मालूम होता है कि उनके दो भाई थे।

कविता

अमर आत्मा

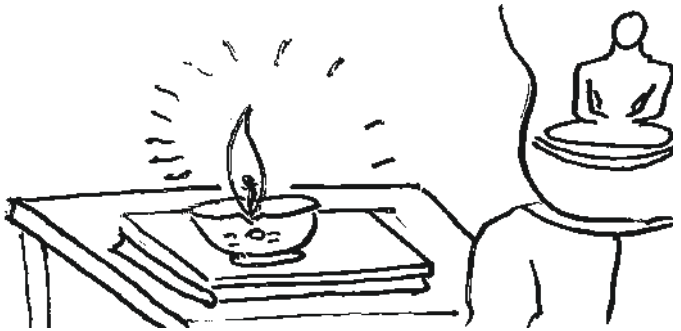

कौन कहता है जीवन चलेगा नहीं, भोजन पानी बिना यह टिकेगा नहीं
श्वास की भी नहीं कोई चाहत भरे, आत्मा तो अमर यह भरेगा नहीं
इन्द्रियों के विजय में सुख है कहाँ, योगियों के विषय में सुख है कहाँ
निज में चैतन्य आनंद अमृत भरा, काया में थिरता का भाव रहता कहाँ
कोई कहता है पानी बिन मछली भरी, बिन हवा जिंदगी है जोखिम भरी
द्रव्य मरता नहीं पर्याय अस्थिर सदा, उलझन पर्यय की अस्थिर है आतम खरी
लहरें सागर की उठती है गिरती वहीं, सागर से बाहर जाती नहीं वो कहीं
आत्मा आत्मा में सदा ही रहे, चेतना पुद्गल मय तोये होती नहीं

आगामी विशेषांक

विश्व गुरु अध्यात्मिक चिंतक महान साहित्कार राष्ट्रीय चेतना के मुखरवक्ता करूणा मूर्ति तीर्थ संरक्षक संवर्धक आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी का समग्र सामग्री संस्कार विशेषांक आगामी जुलाई माह में दीक्षा दिवस के समय प्रस्तुत होगा। लेखकगण सामग्री भेजे तथा पाठक अपना अंक सुरक्षित करें।

ब्र. जिनेश मलैया
प्रधान संपादकः संस्कार सागर, इंदौर
6232967108
8989505108
email: sanskarsagar@yahoo.co.in

चलो देखें यात्रा

महिमावंत तीर्थ बहोरा

नाम एवं पता: श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, बहोरा तह. केकड़ी जिला अजमेर प्रबंधक श्री पारस बाकलीबाल मो. 9950259258

सुविधायें: आवास व्यवस्था है। सामान्य कमरे-10 हैं। धर्मशाला का जीर्णोद्धार हो रहा है।

मार्गदर्शन: देवली- अजमेर रोड़ पर केकड़ी से यह क्षेत्र 19 किमी है। केकड़ी मालपुरा एवं देवली से बसों का साधन है।

महत्व एवं दर्शन: क्षेत्र पर दो मंदिर आमने सामने हैं। बहोरा प्राचीन एतिहासिक कस्बा है। अन्य कई मुर्तिया कलात्मक मूर्तिया एक कमरे में रखी हैं जिनमें कुछ खंडीत हैं। इसी मंदिर के पिछवाडे में धर्मशाला है।

विशेष: ऐसे प्रमाण मिले है कि बहोरवाल जैनों का जन्मस्थली बहोरा है। बहुत से जैन एवं जैनेत्तर बंधु मनौती मनाने आते हैं। तालाब के किनारे हिंदू मंदिर कलात्मक है। गांव के बाहर पार्श्वनाथ टेकरी है यहा शिलाओं में उत्कीर्ण 5 से 6 फुट मुर्तियाँ हैं ।

कविता

अभिनंदन स्तवन

धन्य मनुज जीवन

नमन है अभिनंदन देव को, जगह के हम नाशक सूर्य को
वृषसुधार घनघोर घटा बने, भविक चाहक प्यास बुझा रहे
प्रभु हमें उपदेश सुना रहे, स्व पर के गुण धर्म बता रहे
गरल मोह नशा तज के सभी, निज स्वरूप यथार्थ लखे अभी
मदन का मद पे जय पा लिया, विधि विधान पराजि भी किया
प्रभु सरोवर शीतल ज्ञान में , वह अपूर्व सुखामृत पान में
तव स्तुती मम पाप विनाशनी, विपुलता वह पुण्य सुवर्धनी
परम संसार कारण है यही, तुम सभी दिन रात करो यही
हृदय पंकज पे प्रभु आ बसे, नयन अन्तस उज्वल ज्योति से
अलख को लख हर्ष विभोर है, मनुज जीवन तो यह धन्य है

आगम दर्शन

अंग बाह्य में वर्ण्य विषय

श्रुत ज्ञान के अंग बाह्य के विषय वस्तु समझकर श्रुत ज्ञान की गहराई समझ में आती है।

क्र.	अंग बाह्य के नाम	वर्ण्य विषय
1	सामायिक	द्रव्य क्षेत्र काल नाम स्थापना भाव रूप समताभाव का विधान
2	प्रतिक्रमण	दैवसिक रात्रि का पाक्षिक चातुर्मासिक सांवतसरित ईर्यापथिक औत्तमार्थिक के प्रतिक्रमणों का वर्णन
3	चतुर्विंशति स्तवन	चौबीस तीर्थंकरों की स्तवन विधि
4	वन्दना	एक तीर्थंकर की वन्दना विधि फल का चित्रण
5	वैनायिक	ज्ञान दर्शन चारित्र तप उपचार सहित 5 प्रकार की विनयों का वर्णन
6	कृतिकर्म	पंच परमेष्ठी की पूजन विधि का वर्णन
7	दशवैकालिक	साधुओं का आहार विहार पर्यटन विधि का वर्णन
8	उत्तराध्ययन	चार प्रकार के उपसर्ग और बाईस परिषह का सहन करने का विधान एवं जीवन चर्या का विधान
9	कल्प व्यवहार	प्रायश्चितों की विधि का वर्णन
10	कल्प्याकल्प्य	दीक्षा शिक्षा आत्म संस्कार संल्लेखना उत्तम स्थापना जैसी साधु अवस्थाओं में वर्णन
11	महाकल्प	साधु के 5 कार्यों को द्रव्य क्षेत्र काल भाव का आश्रय लेकर कथन
12	पुण्डरीक	चार निकाय के देवों की उत्पत्ति में कारण भूत दान तप शील उपवास का काम निर्जरा का कथन
13	महापुण्डरीक	चार निकाय के देवदेवी उत्पत्ति के तप उपवास का वर्णन
14	निषिद्धि का	अनेक प्रकार की प्रायश्चित विधियों का वर्णन

अब हम कह सकते हैं कि तीर्थंकर देशना कितनी व्यापक है।

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता
मई 2024

बना ये मंदिर आलीशान

प्रथम-

गगन चूमती शिखर मनोहर,
प्रभू ज्योति है मोह तिमिर हर
केसरिया ध्वज करे जिनेश्वर गान
बना ये मंदिर आलीशान

श्रीमती रजनी जैन, राहतगढ़

द्वितीय-

सम्यग्दर्शन सूत्र बटोरे
जिनशासन का रूप संजोये
जिनबिम्बों का रूप महान
बना ये मंदिर आलीशान

श्रीमति रश्मि जैन, सागर

तृतीय-

सत् शिव सुन्दर जिनवर धाम
सदा बनाये बिगड़े काम
जन जन का करता आह्वान
बना ये मंदिर आलीशान

आशमा जैन, जबलपुर

वर्ग पहेली क्र. 293
मार्च 2024 के विजेता

प्रथम : श्रीमती अनीता जैन, इंदौर (म.प्र.)
द्वितीय : आयुषी जैन, भोपाल (म.प्र.)
तृतीय : रक्षिता जैन, अहमदाबाद गुजरात

माथा पच्ची

निम्न अक्रमबद्ध वर्णों कोक्रमबद्ध बनाकर रिक्त स्थान में एक सार्थक शब्द बनाइए।

1. आ द् अ ह् अ ढ् ण् आ अ ल् अ र् ष् ह
2. ई ओ अ स् आ क् अ र् अ प् र् व् न् त् त् र् सं
3. क् इ ओ त् इ आ य् ग् त् इ आ इ न् द् ए द् श प्र
4. स् अ र् अ आ आ ट् आ स् अ व् इ र् अ उ र् प् अ व् द् य् ग वि
5. अ स् क् आ र् अ आ स् ग् अ र् सं

परिणाम :
अगस्त 2022: (1) संस्कार सागर (2) जैन संदेश (3) कुन्दकुन्द वाणी (4) अर्हत वचन (5) शोधादर्श

पुराण प्रेरणा

शास्त्र व्यसन की महिमा

शास्त्रव्यसनमन्येषा व्यसनानां हि बाधकम्

क्योंकि मुझे शास्त्र का व्यसन अधिक था इसलिये अपनी स्त्री के विषय में मेरी कुछ भी रूचि नहीं थी सो ठीक ही है क्योंकि शास्त्र का व्यसन अन्य व्यसनों का बाधक है।

अक्षरस्यापि चैकस्य पदार्थस्य पदस्य वा।
दातारं विस्मरन् पापी किं पुनर्धर्मद्रेशिनम् ।।

एक अक्षर आधे पद अथवा एक पद का भी ज्ञान देने वाले गुरु को जो भूल जाता है वह भी जब पापी है तब धर्मोपदेश के दाता को भूल जाने वाले मनुष्य का तो कहना ही क्या है ?

ददता कः समो लोके संसारात्तारिणानृणाम्।

जो पाप रूपी कुएँ में डूबे हुये मनुष्यों के लिये धर्मरूपी हाथ का सहारा देता है तथा संसार-सागर से पार करने वाला है उस मनुष्य के समान संसार में मनुष्यों के बीच दुसरा कौन है ?

कुतो लुब्धस्य सत्यता।

यह सुनकर राजा ने प्रातः काल एकान्त में पुरोहित से पुछा परन्तु वह द्रोही सर्वथा मेंट गया सो ठीक ही है क्योंकि लोभी मनुष्य के सत्यता कैसे हो सकती है।

न मुह्यति प्राप्तकृतो कुती हि।

कहीं रहस्य न खुल जाये इससे भयभीत हो बुद्धिमान बलदेव ने उसी समय स्वयं ही से प्रेमपूर्ण माता का दूध के घड़े अभिषेक कर दिया इसके ऊपर दूध से भरा घड़ा उड़ेल दिया सो ठीक ही है। क्योंकि कुशल मनुष्य अवसर के अनुसार कार्य करने में कभी नहीं चूकते।

केरियर

बैंकिंग सेवा करें धन कमायें
(Banking)

देश के आर्थिक कार्य-कलापों में बैंकिंग अत्यंत महत्वपूर्ण है। अब बैंकों की भूमिका तेजी से पूनर्व्याख्यायित हो रही है। नब्बे के दशक के प्रारंभ में उदारीकरण की नीति के परिदृश्य में आने पर बैंकों की भूमिका और उनकी सेवा में भी काफी सुधार आया है।

किसी भी देश के बैंक उसकी अर्थ व्यवस्था का मेरुदण्ड होते हैं। बैंकों द्वारा ट्रेवलर चेक, वित्त परियोजना, ऋण प्रदान करना, छोटी बचत, व्यापार लोन, क्रेडीट कार्ड, युवा व्यवसायी को प्रोत्साहन इत्यादि सेवायें प्रदान की जाती हैं।

कैरियर संरचना- रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया, ग्रामीण बैंक, स्टेट बैंक, तथा सभी राष्ट्रीयकृत बैंक समय-समय पर बैंक में नियुक्तीयाँ करते हैं।

लिपिक, कैशियर, मैनेजर इत्यादि विविध पदों पर भर्तियाँ होती हैं।

योग्यता- किसी भी मान्यता प्राप्त विश्व विद्यालय से स्नातक की पदवी उत्तीर्ण होना आवश्यक है। उसके पश्चात बैंकिंग परीक्षा पास करके आप बैंक में नौकरी कर सकते हैं।

स्टेट बैंक, रिजर्व बैंक तथा अन्य राष्ट्रीयकृत बैंक नियुक्ति के बाद एक माह का प्रशिक्षण भी देते हैं।

परिश्रमिक- सरकारी तथा प्राईवेट बैंक में परिश्रामिक विभिन्न तरह से मिलता है।

■ 1 मार्च

- ईश निंदा मामले में प्रो. नूजन लाल को पाक अदालत ने बरी किया।

- बंगलुरु : रामेश्वरम कैफे में आई ई.डी. ब्लास्ट हुआ 9 घायल हुये।

- ढाकाः 7 मंजिला इमारत में आग लगने से 46 की मौत एवं 22 घायल हुये।

■ 2 मार्च

- भाजपा ने लोकसभा चुनाव हेतु 195 सीटों की घोषणा की नरेन्द्र मोदी वाराणसी अमित शाह गांधी नगर से चुनाव लड़ेंगे। विदिशा से शिवराज सिंह।

- ग्रैमी पुरुस्कार विजेता गायक शर्विन हाजीपुर को 3 साल की सजा ईरान की अदालत ने सुनाई।

- चेन्नईः घर की लाईट जलाते ही सिलेंडर फटा 3 बच्चों की मौत हुई।

■ 3 मार्च

- कटकः 351 कछुओं को तस्करी से बचाया 3 लोग गिरफ्तार।

- नई दिल्लीः हर्षवर्धन ने सक्रिय राजनीति से सन्यास लिया वे मौजूदा सांसद है।

- पाकिस्तान के नये प्रधानमंत्री शाहबाज शरीफ 200 मत लेकर बने।

■ 4 मार्च

- सुप्रीम कोर्ट ने अपने अंह फैसले में कहा कि सांसदों विधायकों को रिश्वत के मामले में संरक्षण नहीं, निर्णय को मोदी ने सराहा।

- इसरो चीफ सोखनाथ ने खुद कैंसर बीमारी का खुलासा किया।

- कोलकाताः टी.एम.सी के विधायक तापसराय ने विधायक पद से इस्तीफा दिया।

■ 5 मार्च

- येरुशलमः इजरायल में मिशाइल की चपेट में आने से भारतीय श्रमिक पैट निर्वाण मैक्सवेल की मौत हुई।

- मुम्बईः हाईकोर्ट की नागपुर खंडपीठ प्रो. जी.एन. साईबाबा समेत 5 लोगों को नक्सलियों के कथित दोष से बरी किया।

- भुवनेश्वरः अंगदानी बालक सुभाजीत का राजकीय सम्मान के साथ अंतिम संस्कार किया गया।

■ 6 मार्च

- संदेशखाली का मुख्य आरोपी शाहजहाँ शेख को हाईकोर्ट ने सी.बी.आई को दोबारा आदेश देकर सौंपा।

- जैनपुरः पूर्व बाहुबली सांसद धनंजय सिंह को अपहरण मामले में सात वर्ष की कैद सजा सांसद विधायक अदालत ने सुनाई।

- पंजाब के काँग्रेस प्रदेशाध्यक्ष को वि.स. से मार्शल ने बाहर निकाला।

■ 7 मार्च

- 370 हटने के बाद पहली बार प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की रैली श्रीनगर में हुई।

- महान शतरंज खिलाड़ी का स्परोव को रूस ने आतंकी सूची में डाला।

- काँग्रेस के नेता करूणा कारण की बेटी पद्मजा बेणु गोपाला भाजपा में शामिल हुईं।

■ 8 मार्च

- समाज सेविका सुधा मूर्ति राज्यसभा सदस्य मनोनीत हुई।

- आयकर अपीलीय अधिकरण ने 240 करोड़ जुर्माना के खिलाफ काँग्रेस की अपील खारिज कर दी।

- कोटाः शिव जी की बारात में करेन्ट फैलने से 14 बच्चे झुलसे।

■ 9 मार्च

- काँग्रेस नेता पूर्व केन्द्रीय मंत्री सुरेश पचौरी भाजपा में शामिल हुये।

- जम्मू कश्मीर और लद्दाख में फंसे 700 यात्रियों को एयर लिफ्ट किया गया।

- म.प्र. सचिवालय की इमारत की तीसरी मंजिला में आग लगी।

■ 10 मार्च

- आसिफ अली जरदारी पाकिस्तान के 14वें राष्ट्रपति बने।

- इंडोनेशिया के सुमित्रा द्वीप में बाढ़ प्रकोप 19 लोगों की मौत हुई।

- टी.एम.सी ने लोक सभा चुनाव के 42 प्रत्याशी घोषित किये।

■ 11 मार्च

- नागरिकता संशोधन अधिनियम की अधिसूचना जारी हुई ऑनलाईन आवेदन फार्म जारी हुये।

- इंदौरः धार स्थित भोजशाला का सर्वे हेतु हाईकोर्ट इंदौर ने ए.एस.आई को आदेश दिया।

- भोपालः खुरई के पूर्व विधायक अरूणादेय चौबे भाजपा में शामिल हुये।

■ 12 मार्च

- हरियाणा के नये मुख्यमंत्री नायग सिंह सैनी बने उन्होंने शपथ ली।

- जैसलमेर- वायुसेना का हलका विमान तेजस क्रैश हुआ पायलट लापता।

- इशाक डार पाकिस्तान के विदेशमंत्री बने।

■ 13 मार्च

- राज्यमंत्री मंडल ने अहमद नगर का नाम अहिल्या नगर देने को मंजूरी दी।

- फर्जी लाइसेंस केस में पूर्व विधायक अंसारी मुख्तार को उम्र कैद की सजा सुनाई।

- चुनाव आयुक्त के चयन हेतु पैनल की बैठक हुई।

■ 14 मार्च

- ज्ञानेश कुमार और सुखवीर संधू नये चुनाव आयुक्त बने।

- मनीला फिलीपिन्स की राजधानी में 50 से अधिक घरों में आग लगने से 2 लोगों की मौत हुई।

- हिमाचल प्रदेश में वर्षा, बर्फबारी से 280 सड़के 5 राष्ट्रीय मार्ग बंद हुये।

■ 15 मार्च

- आबकारी घोटाले मामले बी.आर.

एस नेता के.कविता को ई.डी ने गिरफ्तार किया।

- श्रीलंका ने भारत के 15 मछुआरे पकडे।

- पूर्व नौसेना प्रमुख एडमिरल एल. रामदास का निधन हुआ। वे 90 वर्ष के थे।

■ 16 मार्च

- लोकसभा चुनाव 19 अप्रैल से 1 जून तक 7 चरण में होंगे नतीजे 4 जून को।

- तेलंगाना प्रदेश बसपा के प्रदेश अध्यक्ष आर.एस. प्रवीण ने पार्टी छोड़ी।

- गाजा पर हवाई इजरायली हमले से 36 लोगों की मौत हुई।

■ 17 मार्च

- महादेव सट्टा एप्प में छत्तीसगढ़ सी.एम. भूपेश बघेल पर एफ.आई.आर दाखिल ।

- दत्तात्रय हो सबले पुनः आर.एस.एस के पुनः सरकार्य वाह बने।

- चंडीगढ़ः पंजाब तलवाड़ा क्षेत्र के मेहतपुर गांव में गैंगस्टर की गोली से पुलिस अमृतपाल सिंह शहीद हुआ।

■18 मार्च

- नेपाल प्रतिनिधि सभा के पूर्व अध्यक्ष कृष्ण बहादुर महारा सोना तस्करी मामले में गिरफ्तार हुये।

- पाक की अफगान इलाकों से एयर स्ट्राइक से 8 आतंकी मारे गये।

- तेलंगाना के राज्यपाल तमिलि साहू सौंदराजन ने इस्तीफा दिया।

- ब्लादीमीर पुतिन रूस के 5वीं बार राष्ट्रपति चुने गये।

■ 19 मार्च

- गढ़ चिरोलीः पुलिस मुठभेड में 4 नक्सली ढ़ेर हुये।

- पशुपति पारस ने केन्द्रीय मंत्री मंडल से इस्तीफा दिया।

- दुर्गा सोरन की पत्नी सीता सोरन भाजपा में शामिल।

■ 20 मार्च

- जन अधिकार पार्टी का काँग्रेस में विलय हुआ पप्पू यादव काँग्रेस गये।

- जापान में मालवाहक जहाज पलटने से 8 लोगों की मौत हुई।

- दिल्ली हाई कोर्ट ने एक अहं फैसले में कहा बीमार पत्नी को घरेलू काम को मजबूर करना हिंसा है।

■ 21 मार्च

- दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को ईडी ने आबकारी ठेका मामले में गिरफ्तार किया।

- हिंगोली परभणी यावतमाल में 4.5 की तीव्रता से भूकम्प आया।

- आयकर विभाग द्वारा काँग्रेस के खाते फ्रीज किया गया।

■ 22 मार्च

- इलाहाबाद हाईकोर्ट ने यू.पी. बोर्ड ऑफ मदरसा को असंवेधानिक घोषित किया। ये धर्म निरपेक्षता के विरूद्ध कहा।

- धारः भोजशाला में ए.एस.आई का सर्वे शुरु हुआ।

- काँग्रेस के राष्ट्रीय प्रवक्ता रोहन गुप्ता ने पार्टी के सभी पदों से इस्तीफा दिया।

■ 23 मार्च

- मास्कोः आतंकी हमले की

जिम्मेदारी आई एस ने ली मृतक संख्या 153 पहुँची।

- 35 समुद्री लुटेरों को पकड़कर भारतीय नौसेना मुम्बई लाई।

- गैंगस्टर प्रसाद पुजारी को चीन से वापिस लाया गया।

■ 24 मार्च

- वायुसेना प्रमुख (पूर्व) राकेश सिंह भदोरिया भाजपा में शामिल हुये।

- आई.आई.टी के एक छात्र के संबंध आई.एस. से होने पर गुवाहाटी में गिरफ्तार किया गया।

- पाक के विदेश मंत्री इराक डार ने भारत से व्यापार करने की इच्छा जतायी।

■ 25 मार्च

- उज्जैनः महाकाल मंदिर में आग लगने से 13 झुलसे । गुलाल में केमिकल होने से आग लगी।

- भाजपा ने लोकसभा की 111 सीटों के उम्मीदवरदों की सूची जारी की।

- बाल्टीमोरः अमेरिका में एक जहाज पुल से टकराया पुल ढह गया।

■ 26 मार्च

- दमोहः देवडोंगरा के पास जीप पेड से टकराई 3 मृत।

- बाहुबली नेता मुख्तार अंसारी अस्पताल में भर्ती हुये।

- पवन पाबुलुरी माइक्रोसॉफ्ट बिंडोज और सरफेर मुखिया प्रमुख बने।

■ 27 मार्च

- कोलकाताः दो विमानों में टक्कर हुई बडा हादसा टला।

- बीजापुरः (छत्तीसगढ़) पुलिस मुठभेड़ में 6 नक्सली ढेर हुये डिप्टी कमांडर भी शामिल है।

- बी.आर.एस. नेता के.कविता ने तिहाड़ जेल में पहली रात बिताई।

■ 28 मार्च

- रामटेकः काँग्रेस उम्मीदवार रश्मि बर्वे का जाति प्रमाण पत्र खारिज हुआ जिससे उनका नामांकन रद्द हुआ।

- 14 साल बाद फिल्म अभिनेता गोविंदा राजनीति से सक्रिय हुये और वे शिवसेना (शिंदे गुट) में शामिल हुये।

- दिल्ली हाईकोर्ट सी.एम. अरविंद केजरीवाल को हटाने वाली जनहित याचिका खारिज की।

■ 29 मार्च

- याचिका खारिज होने के बाद काँग्रेस को 1823 करोड़ का आयकर विभाग ने नोटिस दिया।

- इंदौरः यात्री की तबीयत खराब होने से विमान डायवर्ट किया गया।

- लखनऊः माफिया नेता मुख्तार अंसारी की मौत पर न्यायिक जांच के आदेश।

■ 30 मार्च

- पूर्व उपप्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी को भारत रत्न सम्मान राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने उनके निवास पर जाकर दिया।

- सलफाई गुड़ी (पश्चिम बंगाल) तूफान से तबाही मची 5 की मौत 70 घायल हुये।

- गाजा इजरायली हमलों में 36 फिलिस्तीनियों की मौत हुई।

इसे भी जानिये

भारत का स्वतंत्रता संघर्ष रोचक तथ्य

1. पहला अंग्रेज विरोधी संघर्ष संन्यासियों के द्वारा शुरु किया गया।
2. सन्यासी-विद्रोह का उल्लेख बंकिमचंद्र चॅटर्जी के उपन्यास आनंद मठ में किया गया है।
3. 1887 ई. में दादा भाई नौरोजी ने इग्लैंड में भारतीय सुधार समिति की स्थापना की।
4. 1887 ई. के बाद ब्रिटिश सरकार का रूख काँग्रेस के प्रति कठोर होता चला गया।
5. डफरिन ने कहा काँग्रेस केवल सूक्ष्मदर्शी अल्पसंख्यों का प्रतिनिधित्व करती है।
6. नौरोजी, दत्त एवं वाचा ने धन निकास के सिद्धांत का प्रतिपादन किया।
7. 1906 ई. में कोलकाता में हुये काँग्रेस अधिवेशन की अध्यक्षता करते हुये दादाभाई नौरोजी ने पहली बार स्वराज्य की मांग प्रस्तुत की।
8. आंध्र के डेल्टा इलाके में स्वदेशी आन्दोलन को **वंदे मातरम्** आंदोलन के नाम से जाना जाता था।
9. बाल गंगाधर तिलक पहले काँग्रेसी नेता थे, जिन्होंने देश के लिये कई बार जेल की यात्रा की।
10. 21 दिसंबर 1909 ई. को अनंत कान्होरे ने जैक्सन को गोली मार दी।

दिशा बोध

गृहस्थाश्रम

1. गृहस्थाश्रम में रहने वाला मनुष्य अन्य तीनों आश्रमों का प्रमुख आश्रय है।
2. गृहस्थ 'अनाथों का नाथ', 'गरीबों का सहायक' और 'निराश्रितों का मित्र' है।
3. पूर्वजों की कीर्ति की रक्षा, देवपूजन, अतिथि-सत्कार, बन्धु-बान्धवों की सहायता और आत्मोन्नति-ये गृहस्थ के पाँच कर्म हैं।
4. जो बुराई से डरता है और भोजन करने से पहले दूसरों को दान देता है, उसका वंश कभी निर्बीज नहीं होता।
5. जिस घर में स्नेह और प्रेम का निवास है, जिससे धर्म का साम्राज्य है; वह सम्पूर्णतया सन्तुष्ट रहताहै - उसके सब उद्देश्य सफल होते हैं।
6. यदि मनुष्य गृहस्थ के सब कर्त्तव्यों को उचित रुप से पालन करे, तब उसे दूसरे आश्रमों के धर्मों का पालने की क्या आवश्यकता है ?
7. मुमुक्षुओं में श्रेष्ठ वे लोग हैं, जो धर्मानुकूल गृहस्थ जीवन व्यतीत करते हैं।
8. जो गृहस्थ दूसरे लोगों को कर्त्तव्यपालन में सहायता देता है और स्वयं भी धार्मिक जीवन व्यतीत करता है; वह ऋषियों से अधिक पवित्र है।
9. सदाचार और धर्म का विवाहित जीवन से विशेष सम्बन्ध है और सुयश उसका आभूषण है।
10. जो गृहस्थ सामाजिक और धार्मिक मर्यादाओं का उसी तरह आचरण करता है, जिस तरह कि उसे करना चाहिए, तो वह 'मनुष्यों में देवता' समझा जायेगा।

स्निग्ध बाह्य उपचार क्या लेप आहार है ?

क्या लेह्य आहार और लेपाहार एक ही है

❊ ब्र. डॉ. वन्दना जैन, सागर ❊

शरीर माध्यम खलु धम्म साधनम्- शरीर के माध्यम से ही हम धर्म की साधना कर सकते है यह आत्मा जब शरीराश्रित है तब तक इस शरीर को भी स्वस्थ रखना परम आवश्यक है। तथा स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन का निवास होता है। अतः प्रत्येक मानव को सम्यक् आहार-विहार आदि का पालन करना अव्याश्यक है। इसके बिगड़ने पर शरीर में अनेकों तरह के रोग उत्पन्न होना प्रारंभ हो जाते हैं।

श्री अमितगति आचार्य के मरण कण्डिका नामक ग्रंथ में 5 करोड़ 68 लाख 99 हजार 584 तरह के रोग, मानव शरीर में हो सकते हैं यह बताया है। यह रोग ठीक भी किये जा सकते हैं उसके लिये जिनागम में 11 अंग और 14 पूर्वों के 12 वें प्राणावाय पूर्व में आयुर्वेद शास्त्र का विशद् वर्णन है। साधु भी औषधिदान कर सकते हैं यह भी वर्णन है।

यदि कर्मवशात् साधु जन बीमार पड़ते हैं अथवा विहार आदि की थकान मिटाने को और उनके उपचार में श्रावक साधु वैयावृत्ति करता है। उसमें वह बाह्य उपचार तैलादि मर्दन या प्राकृतिक चिकित्सा के अंतर्गत जल आदि का उपचार करते हैं तो वह लेपाहार नहीं है। इसे समझने के लिये हम निम्न विवेचन प्रस्तुत करते हैं।

1. आहार का अर्थ- व परिभाषा- तथा प्रकार सिद्धांत व श्रावकाचार दोनों की दृष्टियों से।
2. लेप आहार की विवेचना व स्वरूप।
3. लेपाहार का स्वरूप व विवेचना व इनमें अंतर
4. लेपाहार का स्वामी कौन तथा
5. मालिश या स्निग्ध वस्तुओं का प्रयोग आहार के अंतर्गत क्यों नहीं
6. उपसंहार

हमारे यहाँ आहार को ही औषधि माना गया है। तथा हमारी जीवन प्रणाली आहार के बिना चल नहीं सकती। जीवन विज्ञान यह कहता है कि आहार के अभाव में मृत्यु तक होना संभव है। अतः श्रावक व साधु दोनों में आहार की आवश्यकता होती है।

ऐसी स्थिति में जैन दर्शन के केवली के कवलाहार को लेकर के भी विवाद खड़ा हो गया। इस विवाद को समाप्त करने की दृष्टि से आचार्य जयसेन जी के प्रवचनसार की 20वीं गाथा की तात्पर्य वृत्ति टीका लिखते हुये आहार की विवेचना की है तो निम्न है -

णोकम्म कम्माहारो कवलाहारो य लेप्याहारो।
ओग मथो विय कम सो आहारे छब्बियो णेयो।।

अर्थ- णोकर्माहार कर्माहार कवलाहार लेप्याहार, ओजाहार, और मानसाहार के भेद से आहार 6 प्रकार का जानना चाहिये।

1. णोकर्माहार- जो सभी संसारी प्राणियों के होता है यहां तक कि अर्हंतों के भी होता है।

2. कर्माहार- सभी संसारी प्राणियों के होता है क्योंकि कर्म से सभी बंधे हुये निरंतर कर्मों का आस्रव हो रहा है।
3. कवलाहार- कवल अर्थात ग्रास आदि लेना जो मनुष्य व तिर्यञ्चों के होता है।
4. लेप्याहार- सूर्य विभावादि पृथ्वीकाय, वनस्पति काय एकेन्द्रियों के होता है।
5. ओजाहार- पशु पक्षी इससे बच्चों को पोषण देते हैं।
6. मानसाहार (मानसिक आहार)- जो देवगति के जीवों का होता है।

आहार का अर्थ- त्रयाणां शरीराणां षण्णां पर्याप्तिना योग्य पुद्गल ग्रहणमाहारः।

अर्थात् तीन शरीर और छह पर्याप्तियों के योग्य पुद्गलों के ग्रहण करने को आहार कहते हैं। (रा.वा. 2/3014/140) (धव. 1-1-14 152/7)

राजवार्तिक- 9/7/11/604/19 में कहा है कि - उपभोग शरीर प्रायोग्य पुद्गल ग्रहणमाहारः तप्राहारः शरीर नामोदयात् विग्रहगति नामोदयाभावाच्च भवति।

अर्थात् उपभोग शरीर के योग्य पुद्गलों का ग्रहण आहार है। वह आहार शरीर नाम कर्म के उदय तथा विग्रहगति नाम के उदय के अभाव से होता हैं।

अलग-अलग ग्रंथों में इस तरह आहार के भेद प्रभेद मिलते हैं। (सिद्धांत की दृष्टि से)

आहार के भेद-प्रभेद - आगम में चार प्रकार से आहार के भेदों का उल्लेख मिलता है।

	कर्माहारीदि	खाद्यादि	कांजीआदि	पानकादि
1.	कर्माहार	असन	आवली या	स्वच्छ बहल
2.	नो कर्माहार	पान	आचाम्ल	लेवड़
3.	कवलाहार	भक्ष्य या खाद्य	बेलड़ी	अलेवड़
4.	लेप्याहार	लेह्य	एकलयना	ससिक्थ
5.	ओजाहार	स्वाद्य		
6.	मानसाहार (मानसिक आहार)			

श्रावकाचार की दृष्टि से प्रकार- आचार्य समन्तभद्र जी ने रत्नकरण्ड श्रावकाचार में छठी प्रतिमा का वर्णन करते हुये चार प्रकार के आहार का वर्णन करते हुये लिखा है कि-

अन्नं पानं खाद्यं लेह्यं नाश्नाति यो विभावर्याम
स च रात्रिमुक्ति विरतः सव्वेष्वनुकम्पमानमनाः।

अर्थ- 1. वह श्रावक रात्रिमुक्ति विरत प्रतिमाधारी कहलाता है जो जीवों पर दयालुचित्त होता हुआ रात्रि में अन्न अर्थात्- दाल भातादि।

2. पान अर्थात दाख आदि का रस पेय पदार्थ।
3. खाद्य-अर्थात्- लड्डू आदि तथा
4. लेह्य अर्थात् खड़ी आदि को नहीं खाता है।

लेह्याहार का स्वरूप व विवेचन- वह आहार जो चाटने योग्य हो जैसे रबडी आदिक पदार्थ। श्री प्रभाचन्द्र जी महाराज ने इस श्लोक में वर्णित लेह्य शब्द की टीका करते हुये लिखा कि

लेह्यं खादि /द्रव्य द्रव्यं। इसे ही पंडित पन्नालाल जी साहित्याचार्य ने चाटने योग्य पदार्थ कहा है। अतः वह आहार जो चाटने योग्य हो उसे लेह्य आहार कहते हैं। जो कि मुंह द्वारा आहार नली से आमाशय में जाता है।

लेप्याहार का स्वरूप- स्निग्धादिबाह्य पदार्थों के द्वारा शरीर के विभिन्न अंगों पर जो मद्रनादि क्रिया की जाती है वह लेप्य आहार है।

लेप्याहार का स्वामी व अंतर- एकेन्द्रिय जीव सूर्य विमानादि पृथ्वीकाय तथा वनस्पति काय है। न कि मनुष्यादि इसके स्वामी है अतः इनमें बहुत अंतर है।

मालिश या स्निग्ध वस्तुओं का प्रयोग आहार के अंतर्गत क्यों नहीं - क्योंकि यह लेप्याहार है और इसके स्वामी एकेन्द्रिय हैं उनको ही लेपादि के द्वारा पोषण मिलता है मनुष्यादि को नहीं क्योंकि मनुष्य इन बाह्य मालिश आदि का प्रयोग करके भी पोषण प्राप्त नहीं करता उसका पेट तो भोजन से ही भरता है तथा इसे हम प्रयोग करके भी देख सकते हैं कि यदि किसी व्यक्ति को भोजन न दिया जाये व केवल बाह्य उपचार किया जाय यहाँ तक कि उसे तैलादि के भरे वर्तन में भी रखा जाये तो भी मरण को प्राप्त हो जायेगा उसकी भूख शांत नहीं होगी उसे भोजन की आवश्यकता होगी।

उपसंहार/सारांश - अतः उपरोक्त विवरण के अवलोकन से यह निष्कर्ष निकलता है कि लेपाहार का भ्रम फैलाकर साधु परमेष्ठी की अवज्ञा करने वालों ने लेह्य आहार और लेप्याहार के अंतर को विलोपित करके षडयंत्र किया है। और समाज में यह भय फैलाया कि तैलादि से वैयावृत्ति करने पर लेप्याहार का दोष आता है। मुनि को रात्रि भोजन का दोष लगता है अतः यह धारणा सिरे से गलत है कि इसी धारणा को बदलने के लिये प्रस्तुत आलेख उपयोगी है। हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि इससे समाज को नई दिशा मिलेगी। अंत में इन पंक्तियों के साथ विश्वास के साथ एक शमा जलाये रखिये, सुबह होने को है माहौल बनाये रखिये।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. मरण कण्डिका- श्लोक क्रमांक 1104 आचार्य अमितगति जी
2. प्रवचनसार गाथा 20 तात्पर्यवृत्ति टीका आचार्य जयसेन जी
3. रत्नकरण्डक श्रावकाचार- आचार्य समन्तभद्र जी
4. सर्वार्थसिद्धि
5. राजवार्तिक
6. धवल जी, जैनेन्द्र सिद्धांत कोष भाग एक।

आहार के भेद प्रभेद के चार्ट में निम्न ग्रंथों की सूची के प्रमाण है-

चार भेंदों के चार प्रमाण-1. (ध. 1/1.1.176/1409/10)

(नि.सा.वा. व्र. 63 में उद्घृत प्र.सार/ तात्पर्य वृत्ति 20 में उद्घृत प्रक्षेपक गाथा संख्या 2) (समयसार/तात्पर्य वृत्ति 4.5) 2. (मूलाचार 876) (राजवार्तिक 7/2/8/548/8) (अनगार धर्मामृत 7/13/667) (लाटी संहिता 2/16-17) 3. भगवती अराधना मू. 700 (सागर धर्मामृत 8/56) लगभग 16 ग्रंथों का इसमें आधार लिया है।

गोत्र-विचार

❊ लेखक- पं. फूलचंद सिद्धांतशास्त्री ❊

गोत्र के विषय में अभी तक बहुत से विद्वानों ने लिखा है। इससे गोत्र और उसके उच्च, नीच भेदों पर पर्याप्त प्रकाश भी पढ़ा है। पर सबके सामने एक प्रश्न खड़ा ही रहा कि एक पर्याय में गोत्र का परिवर्तन होता है या नहीं ? कुछ विद्वानों ने गोत्र परिवर्तन माना और कुछ ने नहीं । जिन विद्वानों ने माना गोत्र विषयक समस्या के सुलझाने में बहुत कुछ सफल भी हुये हैं । उन्हें आगमवाक्यों की बहुत तोढ़-मरोड़ नहीं करनी पड़ी। पर जिन विद्वानों ने एक भव में गोत्र परिवर्तन नहीं माना वे गोत्र-विषयक समस्या के सुलझाने में उतने सफल न हुये। परिणाम यह हुआ कि बहुत कुछ लिखने के बाद भी समस्या जहां की तहां बनी रही। जिस मय इस विषय पर विविध विचार प्रकट किये जा रहे थे। मुझसे भी मेरे बहुत से परिचित मित्रों ने लिखने का आग्रह किया था। उनका कहना था कि कर्मविषयक ग्रंथों के स्वाध्याय आदि में आपकी रूचि भी है और थोड़ा बहुत प्रवेश भी, अतः आपको अवश्य लिखना चाहिये। पर मैं लिखने से बचता रहा, क्योंकि मैं जानता था कि जब तक एक भव में गोत्र परिवर्तन न स्वीकार किया जाये तब तक सभी आगम वाक्यों को एक पंक्ति में ला बिठाना कठिन है। प्रसन्नता की बात है कि मैंने अब ऐसे आगम-प्रमाण संग्रह कर लिये हैं जिसमें एक भव में भी गोत्र परिवर्तन की बात स्वीकार की गई है। अतः अब मेरी इच्छा है कि मैं इस विषय को पाठकों के सामने प्रस्तुत कर दूँ। पर मेरे ख्याल से इस पर सर्वाङ्ग विचार करना ठीक होगा। इससे लेख का ढांचा कुछ बढ़ तो जायेगा पर उससे अनुकूल व प्रतिकूल चर्चा होकर सारा विषय साफ हो जायेगा, ऐसी मुझे आशा है। तदनुसार ही प्रयत्न किया जाता है।

1. गोत्र और उसके भेद- सर्वार्थसिद्धि में लिखा है कि उच्चगोत्र कर्म के उदय से जीव को लोकपूज्य कुल में और नीच गोत्र कर्म के उदय से गर्हित कुल में जन्म लेता है। यह उच्चगोत्र और नीच गोत्र कर्म का कार्य हुआ। इससे यह भी मालूम होता है कि लोकमान्य कुल की उच्चगोत्र और गर्हित कुल को नीच गोत्र कहते हैं । तथा सामान्य कुल का नाम गोत्र है, यह निष्कर्ष भी इससे निकल आता है। तत्वार्थ राजवार्तिक का वही अभिप्राय है। इतनी विशेषता है कि उसमें उच्च कुल और नीच कुल के कुछ प्रकार बता दिये हैं । तत्वार्थाधिगम भाष्य में उच्चगोत्र कर्म को देश, जाति, कुल, स्थान, मान, सत्कार और ऐश्वर्य आदि सभी के उत्कर्ष का निर्वतक और नीच गोत्र को चाण्डाल, मुष्टिक, व्याध, तरस्यबन्ध और दास्य आदि का निर्वर्तक बताया है । तत्वार्थाधिगम भाष्य में उच्च गोत्र के जितने कार्य लिखे हैं वे सब उच्चगोत्र के हैं इसमें विवाद हो सकता है।

वीरसेन स्वामी ने भी जीवस्थान चूलिका-अधिकार की धवला टीका में गोत्र, कुल, वंश और सन्तान को एकार्थक माना है। यथा-

गोत्रं कुलं वंशः सन्तानमित्येकोऽर्थः।

इस उपर्युक्त कथन से इतना निश्चित हो जाता है कि सन्तान या परंपरा का नाम गोत्र है। अब यदि यह परम्परा उच्च अर्थात् लोकमान्य होती है तो वह उच्च गोत्र शब्द के द्वारा कही जाती है और गर्हित होती है तो वह नीच गोत्र शब्द के द्वारा कही जाती है। इन दोनों परम्पराओं का खुलासा निम्न उल्लेख हो जाता है। यह उल्लेख प्रकृति अनुयोग द्वार का है:-

दीक्षायोग्यसाध्वाचरणानां साध्वचारैः कृतसम्बन्धानां आर्यप्रत्ययाभिधानव्यवहार-निबन्धनानां सन्तानः उच्चैंगोत्रम्। तद्विपरीतं नीचैर्गोत्रम्।

जो दीक्षायोग्य साधु आचार वाले हों जिन्होंने साधु आचार वालों के साथ सम्बन्ध स्थापित कर लिया हो तथा जिनमें यह आर्य है इस प्रकार के ज्ञान की प्रवृत्ति होती हो और यह आर्य है इस प्रकार का शाब्दिक व्यवहार होने लगा हो उन पुरुषों की परम्परा को **उच्चगोत्र** कहते हैं और इससे विपरीत **नीचगोत्र** है।

यद्यपि सन्तान शब्द पुत्र, और प्रपौत्र आदि के अर्थ में भी आता है। पर यहां सन्तान से इसका ग्रहण नहीं करना चाहिये, क्योंकि एक तो यह व्याप्य है और दूसरे ऐसी परम्परा अपने पूर्वजों की परम्परा से आई हुई व्यवस्था का त्याग भी कर सकती हैं। जब भारत में मुसलमानों का राज्य था तब बहुत से राजपूतों ने मुसलमानों से सम्बन्ध स्थापित कर लिया था और मुसलमान हो गये थे। यही बात ब्रिटिश साम्राज्य में देखी जाती है। वर्तमान में 80 लाख ईसाई अधिकतर हिन्दू ही हैं। अतएव यहां सन्तान शब्द का अर्थ विवक्षित तत्त्वों के आश्रय से की गई व्यवस्था को मानने वाले और न मानने वाले मनुष्यों की परम्परा ही लेना चाहिये। किसी संस्था में नये आदमी प्रवेश पाते हैं और पुराने निकल भागते हैं तो भी जिन आधारों पर संस्था स्थापित की जाती है संस्था उन्हीं आधारों पर चलती रहती है। कुछ नये आदमियों के प्रवेश पाने और पुराने आदमियों के निकल भागने से संस्था का मरण नहीं है। संस्था का मरण तो तब माना जा सकता है तब उसके मानने वाले उसके मूल आधारों को ही बदल दें। किन्तु इसका मतलब यह नहीं है कि संस्था व्यक्तियों से भिन्न है। वास्तव में संस्था को स्थापित करने वाले महापुरुष के मूल सिद्धांतों को जिन व्यक्तियों ने अपने जीवन में उतार लिया और आगे ऐसे व्यक्तियों को परम्परा चलाने की फिकर रही वे व्यक्ति ही संस्था हैं। इसीलिये तो स्वामी समन्तभद्र ने यह कहा है कि धर्म धार्मिकों के बिना नहीं होता। इस प्रकार हमने ऊपर उच्च गोत्र का जो लक्षण दिया है उसी से यह अर्थ फलित होता है। मनुष्यों के आर्य और अनार्य इन दो भेदों के करने का कारण भी यही है। इस प्रकार इतने वक्तव्य से यह निश्चित हुआ कि जिन्होंने जैन परम्परा के अनुसार की गई सामाजिक व्यवस्था को मान लिया वे आर्य कहलाये और शेष अनार्य। ब्राह्मण और बौद्ध परम्परा भी इसी व्यवस्था को मानती है। अन्तर केवल जन्मना और कर्मणा का है और भारत के ये ही तीन धर्म मुख्य हैं। अतः इन तीन धर्मों की छत्रछाया में आये हुये सब मानव उनके द्वारा सुनिश्चित की गई सामाजिक व्यवस्था को मानने के कारण आर्य कहलाये। किन्तु इन आर्यों की परम्परा में नाच गान से आजीविका करने वाले,

शिल्प कर्म वाले और सेवावृत्ति वाले पुरुषों को कभी भी सामाजिक ऊँचा स्थान नहीं मिला। अतः ये और अनार्य नीच गोत्री माने गये था शेष तीन वर्ण के आर्य और साधु उच्चगोत्री। यही उपर्युक्त लक्षण का सार है। किन्तु जैन और बौद्ध परम्परा में कर्मणा वर्णव्यवस्था स्वीकार की गई है अतः इसके अनुसार अनार्य भी आर्य और आर्य भी अनार्य हो सकते है। यही इन परम्राओं की विशेषता है। जैसा कि भगवज्जिनसेन के निम्न वाक्य ये भी प्रकट है -

स्वदेशेऽनक्षरम्लेच्छान् प्रजाबाधाविधायिनः।
कुलशुद्धिप्रदानाद्यैः स्वसात्कुर्यादुपक्रमैः॥

अर्थात् - अपने देश में जो प्रजा को बाधा देने वाले अनक्षरम्लेच्छ हों उनकी कुलशुद्धि करके उन्हें अपने आधीन करें।

दीक्षायोग्य साधु आचार के सम्बन्ध में सागारधर्मामृत में लिखा है-

येऽप्युत्पद्यकुदृक्कुंल विधिवशाद्दीक्षोचिते स्वं गुणैः।
विद्याशिल्पविमुक्तवृत्तिनि पुनन्त्यन्वीरते तेऽपि तान॥

टीका- किं विशिष्टते, दीक्षांचिते। दीक्षा व्रताविष्करणं व्रतान्मुखस्य वृत्तिरिति यावत्। स चात्रोंपासकदीक्षा जिनमुद्रा वा उपनीत्यादिसंस्कारो वा। पुनः किं विशिष्टे विद्याशिल्पविमुक्तवृत्तिनि। विद्यात्राजीवानार्थं गीतादिशास्त्रं शिल्पं कारुकर्म ताभ्यां विमुक्ता तताऽन्या वृत्तिर्वार्ता कृप्यादिलक्षणां जीवनोपया यत्र तस्मिन्।

इसका भाव यह है कि जिस कुल में विद्यावृत्ति- नाचगान से आजीविका और शिल्प कर्म नहीं होता वह कुल दीक्षोचित माना गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि वीरसेन स्वामी ने आचार के पहले दीक्षायोग्य साधु यह विशेषण लगाकर इस प्रकार के आचरण का निषेध किया है।

संताणकमेणामयजीवायरणस्स गोदमिदि सण्णा।
उच्च णीचं चरणं उच्चं णीचं हवे गोदं॥13॥

अर्थात् - सन्तान क्रम से आये हुये जीव के आचरण को गोत्र कहते हैं। इसमें उच्च आचरण को उच्च गोत्र और नीच आचरण को नीचगोत्र कहते हैं।

अब जब हम कर्मकाण्ड के इस गोत्रविषयक लक्षण का धवला के लक्षण से मिलान करते हैं तो यह स्पष्ट हो जाता है कि कर्मकाण्ड में गोत्र का सामान्य लक्षण करते समय उसमें बदल किया गया है, क्योंकि धवला में केवल सन्तान को ही गोत्र कहा है जबकि कर्मकाण्ड में सन्तान क्रम से आये हुये आचार या कुलधर्म को गोत्र कहा है। नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती धवला के उक्त लक्षण से कुछ अपरितित हों यह बात नहीं है। फिर भी उन्होंने गोत्र के सामान्य लक्षण में परिवर्तन किया है। यद्यपि यह परिवर्तन उन्होंने धवला में आये हुये उच्चगोत्र के लक्षण को देखकर किया है फिर भी इससे स्थिति में बड़ा अंतर पड़ गया है। धवला के अनुसार जब कि आचार वालों की परम्परा गोत्र शब्द का वाच्यार्थ होता है तो कर्मकाण्ड के अनुसार कुल कम से आया हुआ आचार गोत्र शब्द

का वाच्यार्थ होता है। इस प्रकार एक जगह परम्परा मुख्य रही जो कि गोत्र की आत्मा है और दूसरी जगह आचार मुख्य हो गया है जो कि चारित्र मोहनीय के उदयादि का कार्य है। इस परिवर्तन से जो दूसरा दोष पैदा हुआ वह यह है कि इससे कर्मणा वर्ण के स्थान में जन्मना वर्ण की पुष्टि हुई। अनेक जातियाँ और उपजातियाँ और तद्गत अवान्तर आचारों से चिपके रहना भी इसका फल है। आगम में उच्चगोत्र के उदय और उदीरणा को जो गुणप्रत्यय कहा है उसका यहां कोई स्थान न रहा। यहां गुण से सकल संयम और संयमासंयम का ग्रहण किया है। इसका यह तात्पर्य है कि कोई नीचगोत्री यदि सकल संयम को धारण करता है तो वह नियम से उच्चगोत्री हो जाता है तथा यदि कोई नीचगोत्री मनुष्य संयमासंयम को धारण करता है तो उसके भी उच्चगोत्र का उदय होना सम्भव है। अब जब कि हम कुलधर्म को ही गोत्र मान लेते हैं और उच्चकुल धर्म के अनुसार उच्चगोत्र की तथा नीचकुल धर्म के अनुसार नीचगोत्र की व्यवस्था करते हैं तो संयमासंयम या संयम को ग्रहण करते समय नीच गोत्र से उच्चगोत्र कैसे होगा क्योंकि कुलधर्म के अनुसार तो जन्मना ही उच्च और नीचगोत्र होगा और वह पर्याय भर कायम रहेगा। पर आगमग्रंथ ऐसा नहीं कहते। इसका सबूत यही है कि आगम में उच्च गोत्र गुणप्रत्यय भी माना है और गुण से संयम या संयमासंयम लिये गये हैं पर मनुष्यों के इनकी प्राप्ति आठ वर्ष से पहले होती नहीं, अतः सिद्ध हुआ कि एक भव में गोत्र का परिवर्तन होता है। इस से मालूम होता है कि कर्मकाण्ड का उक्त लक्षण धवला की परम्परा के विरूद्ध है। बात यह है कि आचार उच्च, नीच गोत्र में निमित्त हो सकता है पर वह उनका भेदक नहीं है पर कर्मकाण्ड ने आचार को ही उच्च नीच का भेदमान कर गोत्र का सामान्य लक्षण कह दिया।

यहां इतना खुलासा करना और आवश्यक है कि वीरसेन स्वामी ने प्रकृति अनुयोगद्वार में जो उच्च और नीच गोत्र का स्वरूप निर्देश किया है वह उपलक्षण की मुख्यता से किया है।

मनुष्यों के भेद और उसका आधार- तत्त्वार्थ सूत्र में मनुष्यों के आर्य और म्लेच्छ ये दो भेद बताये हैं। पर कौन आर्य हैं और कौन म्लेच्छ यह इससे प्रकट नहीं होता। इसकी टीका सर्वार्थसिद्धि में इसका खुलासा किया है। वहां लिखा है कि जो गुणों और गुणवानों के द्वारा माने जाते हैं वे आर्य हैं। इनके ऋद्धि प्राप्त और अनृद्धि प्राप्त ऐसे दो भेद हैं। तथा म्लेच्छ मनुष्य दो प्रकार के हैं - अन्तर्द्वीपज और कर्मभूमिज। लवणादि समुद्र में 66 अन्तद्वीप हैं। जिनमें एक पल्य की आयु वाले मनुष्य रहते हैं। ये अन्तर्द्वीपज म्लेच्छ हैं। तथा पांच भरत, पांच ऐरावत और देवकुरु तथा उत्तरकुरु को छोड़कर पांच विदेह ये पन्द्रह कर्मभूमियां हैं। इनमें रहने वाले मनुष्यों में सातवें नरक में ले जाने वाले पाप के और सर्वार्थ सिद्धि में ले जाने वाले पुण्य के उपार्जन करने की योग्यता है। तथा पात्रदानादि के साथ कृषि आदि छह प्रकार की व्यवस्था का आरंभ यहीं पर होता है अतः ये कर्मभूमियाँ कहलाती हैं। इन पन्द्रह कर्मभूमियों में जो शक, यवन, शबर और पलिंद आदिक मनुष्य रहते हैं वे भी म्लेच्छ हैं।

सर्वार्थसिद्धि के इस अभिप्राय से तत्त्वार्थ राजवार्तिक के अभिप्राय में कोई अंतर नहीं है।

श्लोकवार्तिक के कथन में थोड़ा अंतर है। वह केवल अंतद्वीपों के विभाग से सम्बन्ध रखता है। वहाँ लिखा है कि जो अन्तर्द्वीप भोगभूमियों के समीप हैं उनमें रहने वाले मनुष्यों की आयु आदि भोगभूमिज मनुष्यों के समान है तथा जो अन्तर्द्वीप कर्मभूमि के समीप हैं उनमें रहने वाले मनुष्यों की आयु आदि कर्मभूमि मनुष्यों के समान है। यथा-

भोगभूम्यायुरुत्सेघवृत्तयोभोगभूमिभिः।
समप्रणिधयः कर्मभूमिवत्कर्मभूमिभिः ।।7।। श्लोक वार्तिक 3-37

पर श्लोकवार्तिक के इस कथन की पुष्टि त्रिलोक प्रज्ञप्ति आदि से नहीं होगी। इन तीनों ग्रंथों के उल्लेखों से यह प्रतीत होता है कि अन्तर्द्वीपज और कर्मभूमिज म्लेच्छों को छोड़कर सब मनुष्य आर्य हैं। इन टीका ग्रंथों से तथा मूल तत्वार्थसूत्र से यह ध्वनित नहीं होता कि भरत क्षेत्र जो छह भेद हैं। उनमें पांच म्लेच्छ खण्ड और मध्य का आर्यखण्ड है। इस प्रकार तत्वार्थ सूत्र और उनकी टीकाओं के आधार से जो व्यवस्था फलित होती है वह निम्न प्रकार है-

देवकुरु, उत्तरकुरु, हेमवत, हरिवर्ष, रम्यक, हैरण्यवत, और अन्तर्द्वीप ये भोगभूमियां है। इनमें से अन्तर्द्वीपों के मनुष्य म्लेच्छ हैं और शेष भोगभूमियों के मनुष्य आर्य हैं।

भरत ऐरावत और देवकुरु तथा उत्तरकुरु से रहित विदेह ये कर्मभूमियां हैं । इनमें जो शक, यवन आदिक मनुष्य रहते हैं वे म्लेच्छ हैं। तथा शेष कर्मभूमिज मनुष्य आर्य हैं।

ऊपर जो लिखा है कि वह तत्वार्थसूत्र और उसकी टीकाओं के आधार से लिखा है। अब आगे त्रिलोकप्रज्ञप्ति आदि ग्रंथों के आधार से लिखते हैं -

त्रिलोक- प्रज्ञप्ति में भरत, ऐरावत और विदेह क्षेत्र के छह खण्डों में से एक आर्यखण्ड और पांच म्लेच्छ खण्ड बतलाये हैं। म्लेच्छ खण्डों में म्लेच्छ मनुष्य रहते हैं उनमें एक मिथ्यात्व गुणस्थान ही होता है तथा छयानवे अन्तर्द्वीपों में कुभोग भूमियां मनुष्य रहते हैं। यथा-

उत्तरदक्खिणभर हे खंडाणि तिण्णि होंति पत्तेक्कं।
दक्खिणतियखंडेसु अज्जाखंडो त्ति मज्झिम्मो।। 4-267
सेसा वि पंच खंडा णामेणं होंति मेच्छखंडं ति।
उत्तरतियखंडेसु माज्झमखंडस्स बहुमज्जे।।4-268
सव्वमिलिच्छम्मि मिच्छत्तं।4-2937
वेधणुमहस्सतुंगा मंदकसाया पियंगुसामलया।
सव्वे ते पल्लाऊ कुभोगभूमीए चेट्ठति।। 2513।।4

इससे इतना जाना जाता है कि पांच म्लेच्छ खण्डों के मनुष्य म्लेच्छ ही होते हैं । अतः इसके अनुसार यह व्यवस्था फलित होती है-

म्लेच्ड मनुष्य तीन प्रकार के होते है- म्लेच्छ खण्ड में उत्पन्न हुये, अन्तर्द्वीपज और आर्यखण्ड में रहने वाले शक, यवनादिक। तथा इनसे अतिरिक्त शेष सब मनुष्य आर्य हैं। आगे के

सभी ग्रंथों में मुक्त रूप से इसी व्यवस्था का कथन किया है। हमारे इस कथन की पुष्टि अमृतचन्द्र के तत्वार्थ सार से भी होती है वहां लिखा है-

आर्यखण्डोद्भवा अर्या म्लेच्छा केविच्छकादयः।

म्लेच्छखण्डोद्भवा म्लेच्छा अन्तरद्वीपजा अपि।।

अर्थ- जो मनुष्य आर्यखण्ड में उत्पन्न हुये हैं वे आर्य हैं। तथा आर्यखण्ड में रहने वाले शक आदिक म्लेच्छ हैं। तथा म्लेच्छखण्ड में उत्पन्न हुये और अन्तर्दीपज मनुष्य भी म्लेच्छ हैं।

1. यहां पाठक यह शंका कर सकते हें कि सर्वार्थसिद्धि आदि में पूरे भरत आदि को कर्मभूमि कहा है और जयधवला में आर्य खण्ड को कर्मभूमि और पांच म्लेच्छ खण्डों को अकर्मभूमि कहा है, सो इसका क्या कारण है ?

2. दूसरी यह शंका होती है कि सर्वार्थसिद्धि आदि में अन्तर्द्वीपज और शकादिक ये दो प्रकार के ही म्लेच्छ मनुष्य बतलाये हैं और त्रिलोक्यप्रज्ञपित आदि में इनसे अतिरिकत पांच म्लेच्छ खण्डों के मनुष्यों को भी म्लेच्छ कहा है। अतः इस कथन में परस्पर विरोध क्यों न माना जाये ?

पाठकों की ओर से ऐसी शंकायें होना स्वाभाविक है। पर ये प्रश्न इतने जटिल नहीं ही इनका समाधान नहीं हो सकता। आगे इसी का प्रयत्न किया जाता है-

3. पांच म्लेच्छ खण्डों की कर्मभूमि और अकर्मभूमि कहना आपेक्षिक वचन है। कर्मभूमि न कहने का कारण यह है कि इनमें धर्म और कर्म की प्रवृत्ति नहीं पाई जाती है। जैसा कि भागवज्जिनसेन ने भी कहा है-

धर्मकर्मबहिर्भूता इत्यमी म्लेच्छकाः मताः।

इसका तात्पर्य यह है कि इन खण्डों में तीर्थंकरादि का विहार नहीं होता और न वैसे लोकोत्तर पुरुष यहां जन्म ही लेते हैं अतः न तो वहां के मनुष्य बन्ध मोक्ष, आत्मा-परमात्मा, लोक-परलोक से परिचित रहते हैं और न वहां किसी भी प्रकार के व्यवहार धर्म की प्रवृत्ति होती है। मेरे ख्याल से त्रिलोक प्रज्ञप्ति में इसी अभिप्राय से इनको मिथ्यादृष्टि भी कहा है। तथा यहां के मनुष्य यद्यपि कृषि आदि से ही अपना उदर पोषण करते हैं फिर भी वहां षटकर्म व्यवस्था नहीं होने से वहाँ सामाजिक या वैयक्तिक उन्नति के अनुकुल साधन सामग्री एकत्र नहीं कर सकते हैं। यह दोष वहां के क्षेत्र का है अतः ये अकर्मभूमि या म्लेच्छखण्ड कहे जाते हैं। तथा इन्हें कर्मभूमि कहने का कारण यह हैं कि वहाँ कर्मभूमि की सब बातें पाई जाती हैं। यथा-1. वहाँ अवसर्पिणी काल में चतुर्थ काल के प्रारंभ से अब तक हानिक और उत्सर्पिणी काल में तृतीय काल के प्रारंभ से अन्त तक वृद्धि होती रहती है। ये दोनों काल कर्मभूमि से सम्बन्ध रखते हैं। 2. वहाँ विकलत्रय और असंज्ञी भी उत्पन्न होते हैं जो कर्मभूमि मे ही पैदा होते हैं।3. वहाँ सातवें नरक के योग्य पाप का संचय किया जा सकता है और वहाँ उत्पन्न हुआ जीव मोक्ष भी जा सकता है। 4. वहाँ

षट्कर्मव्यवस्था भले ही न हो तो भी वहां के मनुष्य कृषि आदि से अपना निर्वाह करते हैं। 5. यहाँ के समान वहां अकाल मरण भी होता है। ये या इसी प्रकार की और भी बातें हो सकती हैं जिनसे जाना जाता है कि पांच म्लेच्छखण्ड की कर्मभूमि के भीतर हैं। इस प्रकार यह पहली शंका का समाधान हुआ। अब दूसरी शंका पर विचार करते हैं।

2. आर्य और अनार्य या म्लेच्छ ये भेद अधिकतर षट्कर्म व्यवस्था की समाज रचना का मूल आधार है। अतः जिन्होंने इस व्यवस्था को स्वीकार करके उसके अनुसार अपना वर्तन चालू कर दिया वे आर्य ओर जिन्हों ने इन व्यवस्था को स्वीकार नहीं किया वे अनार्य या म्लेच्छ कहे गये। पूज्यपाद स्वामी ने कर्मभूमिज जिन म्लेच्छों के उदाहरण दिये हैं वे जातियां इसी प्रकार की हैं। अभी तक वे जातियां षट्कर्म व्यवस्था को नहीं मान रही हैं। भरतादि क्षेत्रों के मध्य के एक खण्ड को छोड़कर शेष पाँच खण्ड के मनुष्य इसी प्रकार के हैं। उनमें षट्कर्म-व्यवस्था के अनुसार किसी प्रकार की भी सामाजिक व्यवस्था नहीं है यह देखकर त्रिलोक-प्रज्ञप्ति आदि में उनको म्लेच्छ कहा है। पर सर्वार्थसिद्धि आदि में इस प्रश्न को गौण कर दिया गया। उनका समावेश शकयवनशवरपुलिन्दादयः में आये हुये आदि पद से म्लेच्छो में कर लिया। हमारे इस अनुमान को पुष्टि इससे हो जाती है कि सर्वार्थसिद्धि आदि में भरतादि के छह खण्ड कर्मभूमि और अकर्मभूमिरूप से विभक्त किये गये हैं। उन सबको कर्मभूमि माना गया है। अतः जहाँ षट्कर्मव्यवस्था दीखी वे आर्य और शेष शक, व्यवहारिक अनार्य या म्लेच्छ ठहरते हैं। अतः विचार करने पर वहाँ मालूम होता है कि इस विषय में सर्वार्थसिद्धि आदि और त्रिलोक प्रज्ञप्ति आदि में दो मत नहीं है। विवक्षाभेद से सर्वार्थसिद्धि आदि में दो प्रकार म्लेच्छ और त्रिलोक-प्रज्ञप्ति आदि में तीन प्रकार के म्लेच्छ बतलायें हैं।

हम समझते हैं कि मनुष्यों के दो भेद किस आधार से किये गये हैं इसका कथन इस उपर्युक्त समाधान से हो जाता है अतः इसका हम अलग से विचार नहीं करते हैं, तात्पर्य यह है कि भगवान आदिनाथ ने षट्कर्म के अनुसार कर्म से जिस वर्णव्यवस्था का प्रारंभ करके अनुसार समाज रचना की थी उसके अनुसार वर्तन करने वाला मनुष्य समुदाय आर्य कहलाया है और शेष अनार्य कहलाया। भोगभूमि और कुभोगभूमि में यद्यपि यह व्यवस्था नहीं हैं पर यहां के सारुप्य वर्तन से वहाँ आर्य म्लेच्छ विभाग मान लिया गया है।

यहां लब्धपर्याप्तक मनुष्यों का विचार करना नहीं निष्फल है। यह सब व्यवस्था तो गर्भज मनुष्यों की अपेक्षा की ही गई है। वे तो केवल मनुष्यगति सम्बन्धी कर्म के उदय से मनुष्य कहे जाते हैं।

किन्तु यहां एक बात का निर्देश कर देना और इष्ट मालूम होता है। वह बात यह है कि त्रिलोक प्रज्ञप्ति और जीवकाण्ड में बतलाया है कि आर्यखण्ड के मनुष्यों के शरीरों में ही लब्धपर्याप्तक मनुष्य होते हैं म्लेच्छ खण्ड मनुष्यों के शरीर में नहीं। इसका अभिप्राय तो यही मालूम होता है कि म्लेच्छखण्डों में भी लब्धपर्याप्तक तिर्यंच और मनुष्य उत्पन्न नहीं होते। पर इस सम्बन्ध में जब पूरे प्रमाण नहीं मिल जाते तब तक किसी एक निर्णय पर पहुंचना कठिन है।

कहानी

कामचोर

लेखकः 105 एलक श्री सिद्धांतसागर जी महाराज

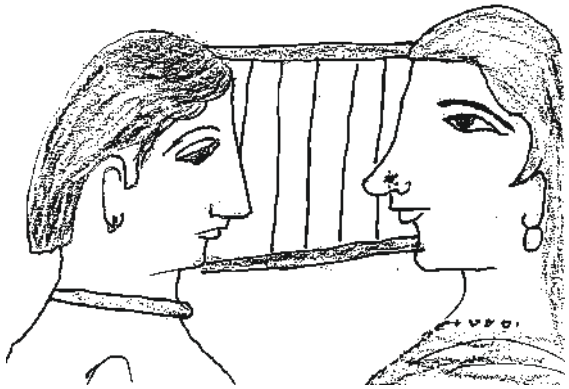

वैभव बहुत दिनों से अस्त- व्यस्त रहता था । क्योंकि उसके लिये उसकी माँ का प्यार दुलार मिल नहीं पा रहा था वह सोचता रहा की माँ मुझे वही प्यार दे जो प्यार पहले देती रही लेकिन वैभव की उम्र बढ़ चुकी थी आज वैभव व्यथित था और अस्तव्यस्त व्याकुल था वैभव ने अपने रूम के दरवाजे बंद कर लिये थे, उसके रूम के दरवाजे बंद होने से वह भीतर बैठे-बैठे सोच रहा था की आखिरकार दुनिया में सबको मनाया जा सकता है लेकिन माँ को मनाना कितना कठिन। दुपहरी चारों तरफ सन्नाटा था। सूरज आसमान में बहुत कुछ कह रहा था लेकिन सूरज की तपन इतनी तेज थी कि लोग उसके तपन के सामने एक मिनट भी अपना चेहरा सामने नहीं कर सकते थे । और वैभव कमरे में कूलर की हवा में सोने का प्रयास कर रहा था किन्तु उसके लिये किसी भी प्रकार से नींद नहीं आ रही थी वह नींद की झोंखें लेने की बात सोच रहा था लेकिन नींद उसकी बहुत दिनों से नहीं आ रही थी । हर तफर से गरम-गरम साय-साय हवा चल रही थी सब दुपहरी में सोने का आनंद लेते थे लेकिन जहाँ वैभव की दालान में कुत्ते भी सो रहे थे खिड़की से वैभव उस कुत्ते को देख रहा था और देखते देखते सोच रहा था कुत्ते आराम की नींद ले सकते हैं तो मुझे नींद क्यों नहीं आती है। उसे नींद का कहीं भी एक पल भी समझ में नहीं आ रहा था इसलिये उसने सोचा की आज कुछ भी हो जाये करेंगे, उसकी माँ भी चैन से सो रही थी, वह माँ के कमरे में गया और माँ का कमरा देखा पर देखने के बाद वह देखता है की माँ सो रही है और अपने कमरे में वापस आ जाता है ऐसा वह तीन और चार बार वह प्रयास करता है । एक बार वह माँ के पैरों के पास बैठ करके उनके पलंग के ऊपर अपना सर रख करके बैठे था कि अचानक मालती की नींद खुल गयी और मालती ने देखा क्यों रे रोशन और वैभव तू क्या कर रहा है क्यों ऐसा बैठा है तो उसने बोला माँ मुझे तीन चार दिनों से नींद नहीं आ रही है, न दिन में न रात में। माँ ने कहा तुम अपना काम करो और मुझे अपना काम करने दो नींद आने के लिये प्रभु का नाम लो, चुपचाप उसने चादर खिंचा और लेट गई । वैभव ने माँ का पैर हिलाया और पकड़ कर बैठ गया और बोला माँ मेरी ऐसी

कौन सी गलती हो गयी है जो तुमने मुझसे बोलना बंद कर दिया है । माँ ने कहा कि मैं आज तुमसे बात नहीं कर सकती हूँ, तुम्हें अगर बात करना है तो रात में फुर्सत में बैठेंगे तो बात करेंगे । माँ की बात सुन करके वैभव चुपचाप अपने कमरे में चला गया । वह प्रतीक्षा करने लगा कि कब शाम हो और माँ से बात करें । सोने से पहले उसने भोजन भी नहीं किया और वह कमरे में ही गुमसुम बैठा रहा। घड़ी के कांटे भी अभी 5 तक भी नहीं पहुंचे थे कि उसका सब्र का बांध टूटने लगा वह फिर माँ के पास गया और माँ अपने पापड़ बेलने का कार्य कर रही थी वह वहां पर बैठ गया और उसने कहा माँ मुझे अब बात करने का मौका तो दो, माँ ने कहा वैभव अभी मैं पापड़ बना रही हूँ मेरे पापड जब पुरे बन जायेंगे तब मैं तुमसे बात करूँगी। पापड़ जब तक नहीं बनते हैं तब तक तुम अपना काम करो। मुझे परेशान मत करो वैभव ने कहा माँ मैं आपको कैसे परेशान कर सकता हूँ, बस मुझे एक गाना याद आ रहा है। माँ तू मुझे आंचल में छुपा ले, गले से लगा ले, कि ओर मेरा कोई नहीं। छोटी सी भूल मेरी भूल जाओ माता, अपनों से कहीं रूठा नहीं जाता । रूठ गया हूँ तो माँ मुझको मना ले, गले से लगा ले कि और मेरा कोई नहीं । और वैभव अपनी आँखों से आंशु पोछने लगा । माँ का कठोर दिल अभी भी नहीं पिघला उसने कहा मैं जब तक पुरे पापड़ नहीं बना लेती किसी भी पकार से तेरे से बात नहीं कर सकती हूँ तू अपना काम कर और मुझे अपना काम करने दे। मां की ऐसी कठोरता देख करके वैभव ने कभी नहीं सोचा था कि माँ भी इतनी कठोर हो सकती है। वैभव वहां से जा करके फिर अपने कमरे में पहुँच गया। देखते-देखते घड़ी में 7 बज गये 7 बजे माँ ने कमरे में दस्तक दी और बोली चल बोल मेरा काम हो गया। अब बोल तू क्या बोलता है। वैभव बोले माँ तुम मुझसे कम से कम 8 दिनों से बात नहीं करती हो तुम मेरे तरफ देखती भी नही हो आखिर मैंने ऐसी क्या गलती कर दी हैं जो तुम मुझेसे ऐसे रूठ गयी हो। तब माँ बोली तुम्हारी गलती क्या है बता दूँ।

हाँ माँ बताओ, सुनो वैभव तुमने जब से अपने काम की दिशा बदली है तब से मुझे अपने आप पर बहुत अफसोस हो रहा है कि मैंने ऐसे बेटे को जन्म क्यों दिया तुम पहले शिरपुर मंदिर के दिगंबर पक्ष के लिये काम कर रहे थे, तो मुझे बहुत खुशी होती थी जब तुम दिगम्बरों के क्षेत्रपाल मंदिर में खड़े रहते थे। परन्तु तुमने जब से वहाँ से काम छोड़ा तो मैं पूछना चाहती हूँ कि तुमने वह काम क्यों छोडा ? माँ अगर मैं वहां खड़ा रहता, काम करता रहता तो मेरे ऊपर कैस हो जाता और मेरा कैरियर खत्म हो जाता। अच्छा तो तू सत्य का साथ न देकर के असत्य के साथ खड़ा हो गया है। मेरी जिंदगी की इतनी उम्र हो गयी है मैंने अपने उस उम्र में देखा है और सुना है कि श्वेताम्बरों ने सदैव दिगम्बरों के साथ अत्याचार किया है। मुझे जब मैं यहाँ बहू बन के आई थी तक भी मैंने देखा था मेरी सांस मुझे सुनाती थी कि सन् 1967 में 1 नवम्बर का दिन था जब श्वेताम्बरों ने भाड़े के गुंडे बुलाये थे, उसमें मुसलमान भी थें जो नाम बदलकर हिन्दु बनकर मंदिरों में रहा करते थें । 3 नवम्बर को जब छत्र लगाने के कारण से दिगंबर और श्वेताम्बर में लड़ाई हुयी तो 3 नवम्बर की वह घटना आज भी लोग भूलते नहीं हैं कि एक गर्भवती महिला के पेट में लात मारी थी लात इतनी जोर से मारी थी की बच्चे को जन्म देना पड़ा। एक माँ के गर्भ स्थल पर इस श्वेताम्बर लात मारते हैं तो ये नारी का बहुत बडा अपमान है और इसे सहन

नहीं कर सकते। तुम दिगम्बरों के विद्यालयों में पढा की नहीं पढ़ा तो वैभव ने कहा जी माँ मैं कारंजा में छात्रावास में पढ़ा हूँ। जब तुम वहाँ पढ़ा वह की रोटिया खाई, वहां का नमक खाया। वहां पर तुमने शैतानी की और तेरे लिये वहां पर फिर भी रखा गया। तेरे पिताजी ने हाथ पाव जोड़कर तेरे लिये वहां पढ़ाने का प्रयास किया तू पढ़ता भी रहा लेकिन तूने जहाँ की रोटी खाई गद्दारी उसी के साथ किया। तू बता दिगंबर के यहाँ तेरे लिये क्या दिक्कत थी। वैभव ने कहा माँ मुझे पहले तो मंदिर के अंदर नहीं रखा गया भोजनशाला में काम के लिये रखा गया, मैं भोजनशाला में काम नहीं करता था और काम करने में मेरा मन भी वहां नहीं लगता था। महाराज जी से मैंने निवेदन किया तो महाराज जी ने मुझे मंदिर में क्षेत्रपाल के पास श्वेताम्बर के समय में रख दिया। जब मैं वहां जाता था तो श्वेताम्बर मुझे कुछ लोभ लालच भी देते थे और कहते थे मुझे दर्शन कर लेने दो, फूल चढ़ा लेने दो, तो में उनके लिये सोचता था कि दर्शन करने दो और मुझे जब फायदा हो रहा है तो क्यों न हम दर्शन करने के लिये स्वीकृति दूँ। मालती ने कहा देखो वैभव तूने जो है अमानत में खयानत का काम किया है।

एक तो तू मुझे बता कि तू काम करने में हमेशा कामचोरी क्यों करता रहा और कामचोरी करते-करते भी काम को सही ढंग से क्यों नहीं करता है। तो वैभव ने कहा माँ मुझे ये बात सचमुच स्वीकार करता हूँ की मुझे कामचोरी करने की आदत शुरु से पड़ी है क्योंकि मैं होमवर्क भी स्कूल में नहीं करता था। स्कूल में भी मैं पढ़ता नहीं था और कारंजा के स्कूल में भी मैं सही ढंग से पढ़ाई नहीं की इसलिये आप मुझे कामचोर कहते हैं तो ये बात सही है की मैं कामचोर हूँ। माँ ने कहा की तू ये बता कि जब बचपन से ही तेरे लिये मैं भी काम बताती थी तो तुम वक्त पर नहीं किया, तू अपने भाई को काम बता देता था और तू घूमता रहता था और जब तेरे लिये पढ़ाई में भी पूरा मन नहीं लगा, आज भी तुम बी.कॉम पूर्ण नहीं कर पाया। नौकरी के लिये तुम कभी उधर तो कभी इधर भटकता रहता है पर नौकरी तेरे लिये मिलती नहीं है। कारण उसका ये है की जब तक बेटा लगन नहीं होती है कोई लगन से काम नहीं करता है तब तक कोई व्यकित तन्खा ढंग की नहीं देगा। हर व्यक्ति अगर किसी को तन्खा दस हजार देता है तो पन्द्रह हजार का काम करवाता है और एक बात और बता दूँ वो कान खोलकर सुन ले की निर्माल्य वही कहलाता है जो मंदिर और धर्म स्थान पर जा करके कामजोरी करता है वही निर्माल्य का दोषी होता है। प्रायः हम लोग निर्माल्य से बचते है क्योंकि एक जगह मैंने पढ़ा है। **परस्त्री गमनंच देवद्रवस्य भक्षणं सप्तम्ररकम यन्ति न अतराशयः** इसमें कोई संदेह नहीं है अगर कोई द्रव का भक्षण करता है, परस्त्री गमन करता है तो नियम से वह सातवें नरक में जाता ही जाता है और तुम तो देख लो जितने लोगों ने मंदिर के साथ धोखधड़ी की है। और मंदिर के लिये सही नहीं किया उन सब लोगों की परिस्थति यही बनी है वे कहीं न कहीं बीमार हो जाते कहीं न कहीं अशांति से रहते हैं, परिवार में उनके कलह होता है और अंत में उनके कष्ट और दुःख ही मिलता है तो आओ अपन जो है पहले देवद्रव्य भक्षण से बचे और धर्म के कार्यों में यदि कामचोरी करते हैं तो निर्माल्य का दोष अवश्य आता है। मालती का बात सुनकर के सिर को झुकाये वैभव ने कहा माँ मैं बिल्कुल समझ गया हूँ की मैं धर्म कार्यों में भी चोरी कर चुका हूँ और यहाँ तक कि मैंने रिश्वत ले करके क्षेत्रपाल की दर्शन श्वेताम्बर

को कराया हैं। माँ ने कहा देखो बेटा तुमने देखा होगा शिरपुर की मंदिर में वेदी नं. 13 क्षेत्रपाल दिगंबर वेदी लिखा है। क्यों लिखा ? तो वैभव ने कहा माँ श्वेताम्बर ये कहते हैं की ये क्षेत्रपाल मणिभद्र हैं मणिभद्र मानने में क्या दिक्कत है तो मालती ने कहा देखो बेटा अभी तक तो मैंने मणिभद्र नाम नहीं सुना और जब भी मैंने सुना है यही सुना है क्षेत्रपाल, हमारी उम्र इतनी हो चुकी है आज 66 साल की मेरी उम्र है, मैंने अभी तक इस उम्र में मणिभद्र नाम नहीं सुना है यह नाम नया आया है। पहली बात यह है और दूसरी बात ये पूजन किनसे करता है, वैभव ने कहा सब उनके पुजारी अजैन है, अजैन पुजारी श्वेताम्बार की नौकरी करके यदि क्षेत्रपाल की पूजन करते हैं, तो क्या वे क्षेत्रपाल की पूजन कर रहे हैं या अधिकार जमाने का प्रयास कर रहे हैं। वैभव ने कहा सच बताऊँ माँ तो सच ये है कि माँ वे अधिकार जमाने की कोशिश कर रहे हैं, तो फिर तुम श्वेताम्बर के असत्य के साथ क्यों गये। तुम श्वेताम्बर के असत्य के साथ गये इसलिये मैं तुमसे बहुत ज्यादा गुस्सा हूँ क्योंकि एक ध्यान रखना सत्य हमेशा यह इच्छा रखता है कि मुझे सब लोग जान लें और असत्य हमेशा एक ही इच्छा रखता है की हमें कोई पहचान न ले तो एक बात ध्यान रखना तुम असत्य का साथ देने के लिये कुछ पैसों की लालच में श्वेताम्बर के साथ चले गये और दिगंबरो के साथ तुमने कामचोरी की इसलिये मैं तुमसे नाराज हूँ क्योंकि तुमने जिस थाली में खाया है उस थाली में छेद किया है और कुछ पैसों के लालच में तुमने काम नहीं किया। देखो इस गांव के बाबूलाल जी काला हुये हैं, बाबुलाल जी काला ने अपनी श्वेताम्बर की नौकरी करते हुये भी उन्होंने सच बोले और सच ये बताया की पद्मावती कसार समाज के लोगों ने यानि अपनी ही समाज के लोगों ने स्थापित की है और बालाजी कसार जिन्होंने पद्मावती की मूर्ति की स्थापना की और मेरे सामने जब मंदिर खुला था किसी प्रकार से कोई भी व्यक्ति श्वेताम्बर क्षेत्रपाल और पद्मावती की पूजन नहीं करते थे। तुम ने उन क्षेत्रपाल की पूजन करने के लिये श्वेताम्बरों से पैसे खा लिये इसका मतलब ये हुआ कि तू जो है बहुत गद्दार है और अगर मेरा बेटा ऐसा गद्दार हो और ऐसे गद्दार बेटे की माँ होने से तो मैं भी एक दिन गद्दार बन जाऊँगी, मैं खुद्दार बाप की बेटी हूँ गद्दार बाप की बेटी नहीं हूँ तो मैं खुद्दार ही रहना चाहूंगी और तुम भी गद्दार बाप का बेटा नहीं पर तुम गद्दार कैसे बन गया ये मैं नहीं कह सकती हूँ बस मैं इतना ही कहना चाहूंगी कि तू भी खुद्दार बन और सत्य का साथ दे। असत्य का साथ देना तेरे लिये घातक होगा आज नहीं तो कल तो पैसा जरूर कमा सकता है पर तू इस माँ को तसल्ली नहीं दे सकता है क्योंकि तेरी माँ गद्दार नहीं है और न नमक हराम है। तू नमक हरामी कर रहा है इसलिये तू एक बात फिर से सोच और विचार कर तू क्या कर रहा है, अपनी वृद्ध माँ की आत्मा को शांति देने के लिये एक ही काम कर कामचोरी छोड़ और कामचोर न बनके तू एक खुद्दार बन और अपने सबकुछ करने के लिये एक ही काम कर बस तू श्वेताम्बरी की नौकरी छोड़ दे भले ही तू दिगम्बरी की नौकरी मत कर ये चलेगा पर कामचोर मत बन यही मेरा तेरे से कहना है। वैभव ने माँ की बात सुनकर कसम खाकर संकल्प ले लिया कि वह अब गद्दार नहीं बनूंगा और वैभव ने श्वेताम्बर की नौकरी छोड़ दी और कामचोरी भी उसने छोड़ दी और माँ के लिये उसने एक बहुत अच्छी तसल्ली दी और माँ जितनी उसने नाराज थी, कुछ दिनों बाद मालती वैभव से बहुत खुश हो गई।

हमारे गौरव

सातवाहनवंशी राजा

इसापूर्व तीसरी शताब्दी के अंत से लेकर सन् ईस्वी की तीसरी शताब्दी के प्रारंभ पर्यन्त दक्षिणापथ के बहूभाग पर पैठण (प्रतिष्ठाणपूर) के सातवाहनवंशी नरेशों का प्रायः एकाधिपत्य रहा। इस वंश में लगभग तीस राजाओं के होने का पता चलता है।

प्राचीन जैन साहित्य में सातवाहन राजाओं के अनेक उल्लेख मिलते हैं। और उनमें से कई एक का जैन होना भी सूचित होता है। सातवाहन राज्य में जैनों की प्रिय प्राकृत भाषा का ही प्रचलन था। यह राजा विद्वानों का बिना साम्प्रदायिक भेदभाव से आदर करते थे।

हमारा तो साधार अनुमान है कि **तत्वार्थाधिगमसूत्र** के रचयिता जैनाचार्य उमास्वामी इसी वंश में उत्पन्न हुये थे।

जैनाचार्य शर्ववर्म द्वारा **कातंत्र** व्याकरण की रचना तथा जैनाचार्य काणभिक्षु या काणभूति द्वारा प्राकृत के मुलकथाग्रंथ की रचना और उसके आधार पर गुणाढय की **बृहकथा** की रचना सातवाहन नरेशों के ही प्रश्रय में हुई थी। अन्य भी कई प्राकृत भाषा के जैन ग्रंथ उस काल में वहाँ रचे गये प्रतीत होते हैं।

सातवाहन राज्य में जैन मुनियों का स्वच्छंद विहार था। दिगम्बर परम्परा के **षट्खंडागम** आदि जैन आगमों का सर्वप्रथम संकलन एवं पुस्तकीकरण सम्भवतया उन्हीं के राज्य में उसी काल में हुआ था।

कविता

सुख उपाय

संस्कार फीचर्स

नजर-नजर का फरक होता है
किसी की नजर में कचरा सोना होता है
तो किसी की नजर में सोना कचरा होता है
खोजलें तो कचरे को सोने मे बदला जा सकता है
तो कोई कचरे में भोजन खोज लेता है
यही तो अनेकांत का चिंतन है
तत्त्व बोध ज्ञान का शोध परम गुरु प्रसाद
विज्ञान का सार अनुभव का आधार
परमात्मा को उपदेश है वीतरागी बनने का अमर संदेश है
धर्म का ज्ञान वस्तु तत्त्व विज्ञान समता प्राप्ति का उपाय
सुख उपाय सत् संबोध हैं

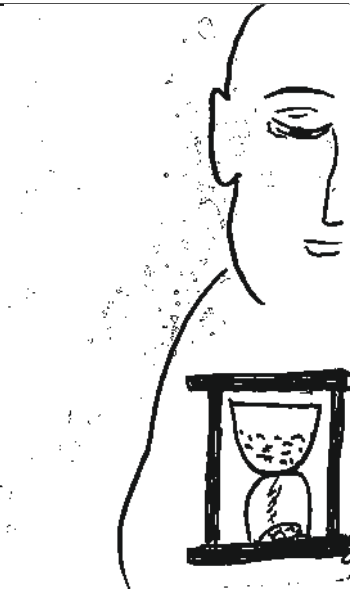

क्रमांक-39 वरिष्ठ नागरिक

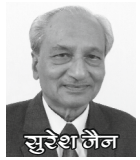

पहचान स्वयं बनायें

जिन्दगी की भाग दौड़ में आपाधापी में, कारोबार में, सर्विस में, इतने व्यस्त रहे कि संसार में आपकी कोई पहचान न बन सके। चलो बुजुर्ग बनने पर ही अपनी पहचान बना लें।

अपनी एक अलग पहचान लोगों के बीच बनाना एक सुखद अनुभव होता है। लोग आपको पंसद करें, आपसे मिलना, आप से बात करना पसंद करें। लोगों का ध्यान अपनी और खींचे। आप की बातों को ध्यान से सुना जाये। आपको विशिष्ट समझा जाए। यह सब इतना आसान नहीं लेकिन मुश्किल भी नहीं है। एक आम व्यक्ति भी खास हो सकता है, बशर्ते कुछ बातें वह ध्यान में रखे।

- एक अच्छे श्रोता बनें।
- सबकी बातों को ध्यान से सुनना भी एक कला है और अच्छे वक्ता वही होते हैं जो सबकी बातें सुनकर अंत में सोच की तराजु पर अपना विचार रखकर बोलते हैं।
- ज्यादा बोलना, डीगें हाँकना, व्यंग्य करना, अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना आदि बातें आपकी शख्सियत को गलत साबित कर सकती हैं इस लिये सोच समझकर बोलें।
- सदैव उन बातों को कहें जो आपके जीवन में खरी उतरती हैं जिसे आप स्वयं व्यवहार में लाते हों ऐसा कर के आप दो हरे मापदण्ड वाला व्यक्ति बनने से बच सकते हैं।
- अपनी खूबियों व कमियों को पहचानें तथा खूबियों को उभारें और सुधारी जा सकने वाली कमियों को सुधारें।
- अपनी गलतियों को स्वीकार करें न कि दूसरों पर डालें। साथ ही गलितियों को सुधारने की हर संभव कोशिश करें। उन्हें दोहरायें नहीं।
- सोने से पूर्व अपना स्वविश्लेषण करें।
- सर्वश्रेष्ठ बनने का स्वप्न पालें और अपना लक्ष्य ऊँचा रखें।
- अपने सिद्धांत स्वयं बनायें और उन पर अमल करने का हर संभव प्रयास करें।
- अच्छा बनने के लिये अच्छी सोच आवश्यक है। औरों के आचरण की जगह, अपने आचरण पर नजर रखें। दूसरों पर प्रतिक्रियायें करने से पहले अपने आपको देखें।
- आर्कषक बने दूसरों का ध्यान अपनी और केन्द्रित करें। केवल गंभीरता भी व्यक्ति में ऊब पैदा करती है। अतः अपने व्यक्तित्व और पहनावे में स्मार्ट नैस लायें।
- मिलनसार बनें, अलग-अलग या दूर-दूर रहने से लोग आपको घमण्डी समझेंगे और आपके स्वभाव से अंजान रहेंगे। बावजूद इसके कि आप विनम्र स्वभाव के हैं।
- अपना सामान्य व व्यावहारिक ज्ञान दूरस्त रखें कि किसी भी विषय पर आप अधिकार से अपने विचार व्यक्त कर सकें। इन व्यावहारिक बातों को व्यहार में लाकर ही आप अपनी एक अलग स्पष्ट पहचान बनाने में सफल हो सकते हैं।

स्त्री रोग डिस्मेनोरिया कारण व उपचार

❊ जिनेन्द्र कुमार जैन (इन्दौर) मो. 9977051810 ❊

डिस शब्द का अर्थ है कष्ट और मेनोरिया का अर्थ हे, ऋतु स्त्राव। अत एव डिमेनोरिया शब्द से कष्ट या तकलीफ भरा मासिक स्त्राव समझा जाता है। जिसे आयुर्वेदिक शास्त्र में रज कृच्छता या कष्टार्तव या ऋतु शूल आदि कहते है। इस रोग से 50% स्त्रियाँ परेशान रहती है। अगर आपकी उम्र 20 साल से कम है और आपको माहवारी 11 साल की उम्र में शुरु हो गई है तो यह रोग हो सकता है।

माहवारी के दौरान गर्भाशय में असहनीय पीड़ा जो निचले पेट के निचले हिस्से में होने वाला कमरदर्द, तेज दर्द या ऐठन, जी मचलना और उल्टी आना। यह माहवारी के शुरु होने से 2-3 दिन पहले व माहवारी के बाद 2-3 दिन तक हो सकती है। मासिक ऋतु स्त्राव के समय गर्भाशय के भीतर खून आदि बाहर निकलने की चेष्टा करता है, इस वजह से गर्भाशय बीच-बीच में संकुचित हो जाता है जिससे दर्द होता है। यह दर्द किसी एक स्थान पर स्थिर नहीं रहता है जो एक स्थान का दर्द, अंगों की बनावट में गड़बड़ी या अंगों के अपने स्थान से हट जाने के कारण- इसलिये विभिन्न प्रकृति के अनुसार इन कष्टों को निम्न भेद में बांटा जाता है।

1. स्नायविक (Neuratic)-डिस्मेनोरिया जिन्हें कुछ ज्यादा उम्र में ऋतुस्त्राव होता है उनकी ओवरी (डिम्बकोष) का आवरण अच्छी तरह से पुष्ट न रहने से ऋतु होने के दो दिन पहले से ही गर्भाशय प्रदेश में दर्द होता है तो तीन दिनों तक बेहद तकलीफ दायक दर्द होता है यहाँ तक अपनी चरम सीमा तक पहुँच जाता है जिसमें स्मरण शक्ति घट जाती है।

दर्द तलपेट, पीठ, कमर, पुट्ठे और घुटने तक फैल जाता है कभी-कभी सिरदर्द बेहोशी के लक्षण दिखाई देते हैं जिससे शरीर शक्ति हीन हो जाता है।

किसी-किसी को प्रसव के बाद यह रोग अच्छा हो जाता है।

2. रक्त की अधिकता (Congestive)- जरायु (Uterus) में रक्त की अधिकता होने से जरायु सूज जाती है तथा डिम्बकोष प्रदाह (Ovantis) जो ऋतु स्त्राव होने के 4-5 दिन पहले दर्द शुरु हो जाता है और ऋतु के समय रजस्त्राव कुछ कम रहने पर भी प्रायः एक सप्ताह तक दर्द रहता है। जब रजस्त्राव अधिक होता है तो उस समय तेज दर्द होता है, रक्त में छोटे-छोटे थक्के रहते हैं जिनके आकार अनुसार दर्द घट व बड़ा करता है।

जरायुग्रीवा (Cervis of the Uterus)- फूल जाती हैं जिसमें टपक या टीस का दर्द, जरायु का बाहर निकलना, बवासीर होना, ज्वर इत्यादि उपर्सग इस रोग के साथ रहते हें व श्वेत प्रदर का स्त्राव होता हे।

कारण- प्रसव के बाद जरायु का पूरी तरह से संकुचित न होना स्वाभाविक रूप से

अधिक कड़ा रहने पर, सर्दी या ओस लगने पर यह रोग होता है इसके साथ ही यकृत या हृदय संबधित कोई रोग भी हो सकता है। आमवात या सन्धिवात (Gout) रोग वाली स्त्रियों को यह रोग हो सकता है।

3. बाधा देने वाली (Obstructive) ऋतु स्त्राव थोड़ा-थोड़ा निकलता है जिससे दर्द होता, तलपेट में दर्द, बुखार आ जाना।

कारण- जरायु से ऋतु का खून निकलने की राह संकुचित या अवरोधित होता, जरायुमुख में बाहरी या भीतरी संकीर्णता पैदा होना या मुंह में टेड़ापन आ जाना या जरायु मुँह पर कैंसर या गांठ होना।

4. अकड़न पैदा करने वाला (Spasmodic)- अकड़न वाला या अकड़न से पैदा दर्द जो प्रसव के दर्द की तरह होता है जो धीरे-धीरे बहुत तेज व एकाएक कम हो जाता है।

कारण- जरायु के भीतर खून का ढेला अटक जाना, जरायु ग्रीवा के संयोग स्थल पर पेशियों की अकड़न की वजह जो कभी-कभी हिस्टीरिया दर्द में परिवर्तित हो जाता है।

5. प्रेम्ब्रेनस (Membranous)- ऋतु में खून के साथ पेट दर्द होकर श्लैष्मिक झिल्ली का स्तर निकलता है जिससे जरायु की उत्तेजना प्रदाह होता है। यह जरायु की श्लैष्मिक झिल्ली के संयोग तन्तु और ग्रंथि दोष के कारण होता है। यह ठंड लगना, क्रोध, शोक, मानसिक आवेग, रमण प्रवृत्ति की उत्तेजना, नकली मैथुन, स्नायु प्रधान धातु, वात व वायु प्रकृति के कारण होता है सामान्य रोग के कारण-अजीर्ण, गर्भपात, बहुत अधिक चलना, चोट लगना, धातुक्षय शारीरिक परिश्रम न करना, अश्लील चित्र देखना, टीवी मोबाईल का अधिक उपयोग विलास परायणता, अस्वाभाविक स्थायी उत्तेजना के फल से स्त्राव में परिवर्तन पैदा होना।

भावी परिणाम- डिस्मेनोरिया दर्द बहुत दिनों तक रहने पर रजोबंधरोग बांछ हो जाना जरायु से नियंत्रण रक्तस्त्राव किसी को श्वेत प्रदर, जरायु प्रदाह व नांक, मुंह, गुदाद्वार की रक्तस्त्राव होना कारणों को दूर करके नियमित व्यायाम, सैर करना, योग, भावना योग से नियंत्रण हो जाता है। सभी चिकित्सा पद्धति में समय पर इलाज से आराम हो जाता है। किसी दुर्घटना में या जैनेन्द्रिय अंगों में दोष उत्पन्न होने पर ऐलोपैथी पद्धति से इलाज कराना उचित है। होम्योपैथी पद्धति में कॉलोफाइलम, सिमिसिफ्यूगा, काकुलस, कोलोसिन्थ, पल्सेटिला, सीपिया, मैग्नेशियाफास छह गुना प्रभावी औषधि है। इलाज पूर्व अनुभवी चिकित्सक से परामर्श लेकर उपचार करना चाहिये।

हमारे देश की स्त्रियों का भूषण लज्जा है जिसकी वह से दूसरों को कष्ट जानने भी नहीं देना चाहती जिससे उपचार में देरी अनेक कष्टों को जन्म देती है अतः समय पर इलाज द्वारा स्वयं परिवार को स्वस्थ व खुशहाली जीवन दे सकते हैं।

हास्य तरंग

1. नेता- चुनाव का फार्म भर रहे थे। फार्म में लिखा था- क्या कभी किसी अपराध में गिरफ्तार हुये हो ? उन्होंने लिखा नहीं। अगले कॉलम में लिखा था क्यों ? उन्होंने लिख क्योंकि कभी पकड़ा नही गया।

2. नई नवेली बहू का सबसे परिचय कराते हुये सास ने बताया मैं घर की गृहमंत्री, ससुर वित्तमंत्री, बड़ा बेटा खाद्य आपूर्ति मंत्री, बड़ी बहू रक्षामंत्री, तुम्हारा पति योजना मंत्री, बहु तुम कौन सा पद लेना चाहोगी ? सासू जी मैं विपक्ष में बैठूगी।

3. ट्रेन में यात्रा कर रहे सेठी जी ने सामने बैठे व्यक्ति से कहा भाईसाहब माफ करना, आपका चेहरा मेरी पत्नी से मिलता है। व्यक्ति बोला पर मेरी तो मूंछे है ? सेठी जी ने कहा मेरी पत्नी की भी हैं।

4. एक प्रतिष्ठित व्यापारी अस्पताल में अंतिम सांसे गिन रहे थे, उनका परिवार बैठा था। उन्होंने पूछा संतोष कहां है ? पिताजी मैं पास ही बैठा है, फिर पूछा विमल कहां- जी पिताजी, फिर पूंछा महावीर कहां है, पीछे से आवाज जी पिताजी। व्यापारी जोर लगाते हुये बोले तुम सभी तीनों यहां बैठे हो फैक्ट्री कौन देख रहा है ?

5. पुलिस अधिकारी-डम्पर चालक ने आपकी बाईक को तेजी से टक्कर मारी पर डबल सवारी होने के बाद बच गये हो। बड़े भाग्यशाली हो ? रिपोर्ट लिखाने वाले व्यक्ति ने कहा भगवान मेरे साथ था। पुलिस अधिकारी ने कहा पहले आपके खिलाफ केस बनेगा क्योंकि बाईक पर तीन सवारी बैठाना कानून का उल्लंघन है।

संकलनः जिनेन्द्र कुमार जैन, गौरीनगर

पाक कला

जैन पनीर मसाला

सामग्री- तेल 1 चम्मच, इलायची 2, धनियां पत्ता 10ग्रा., टमाटर-2, नमकर 1/2 चम्मच, मिर्च पावडर 1/2 चम्मच, धनिया पावडर 1/2 चम्मच, काजू 90 नग।

विधिः- ऊपर के सभी पदार्थ 90 मिनिट तक मिक्स करके गरम करना और हल्के हाथों से चम्मच करना, कुछ देर उसे ठंडा होने दें, उस सबको मिक्सर में डालकर जरूरी पानी मिलाये और मिक्सर से पीसे।

फिर 2 चम्मच घी, सुखी मिर्च आवश्यकतानुसार घी में डालें और थोडा गरम कर निकाले, फिर उसी घी में जीरा 1/2 चम्मच, हिंग 1/2 चम्मच, मिर्च पावडर आवश्यकतानुसार पेस्ट डाले और उसे 5 मिनिट तक गरम करें, और शक्कर डालें और उसे 5 मिनिट तक ढंककर पकाये, पनीर डालें और उसमें शिमला मिर्च डालें और पनीर डालने उपरांत 2 मिनिट तक पकायें और गरम गरम सर्व करें।

बाल कहानी

श्रममेव जयते

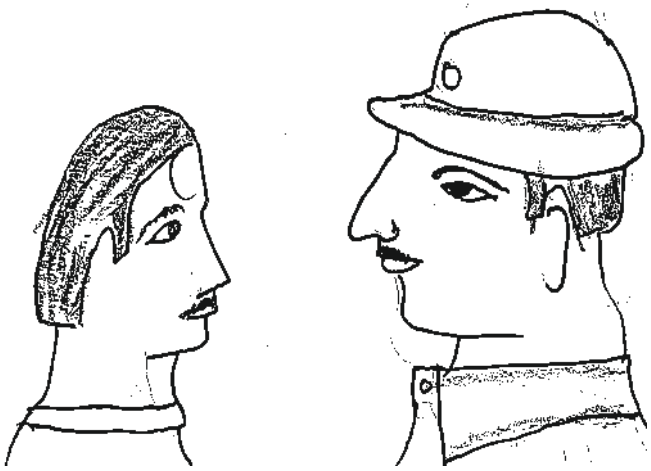

अकोला के जिला पुलिस कार्यालय के सामने पड़ी हुई बहुत सारी बेंचों में से एक पर दीपक बैठा था वह बहुत डरा हुआ था वह सोच में पड़ा हुआ था कि मुझे पुलिस कप्तान साहब ने क्यों बुलाया है। पुलिसका भरोसा करना थोड़ा मुश्किल ही होता है परन्तु दीपक ने पुलिस के द्वारा किये विचित्र अपनत्व पर भरोसा किया था। हिम्मत जुटाकर वह एस.पी ऑफिस आ ही गया था।

किसी ने आवाज दी दीपक कौन है उसे साहब बुला रहे है दीपक सहमा-सा गया। सुदीप चुघ ने कहा डरो मत तुम्हें इनाम देने के लिये बुलाया है। शाबाश मैं तुम्हारी ईमानदारी पर बहुत खुश हूँ।

मुझे मालूम वो चोर मंगलसूत्र चुराकर भाग रहे थे और पुलिस के गस्ती दल की दहशत से उन्होंने वह मंगलसूत्र फेंक कर आगे बढ़ लिये थे और तुमने उसे उठाकर पुलिस थाने में जमा कराया और साथ ही जमा कराकर रसीद पावती भी ली। लेकिन आश्चर्य की बात ही यह है कि आज तक किसी ने भी अपने मंगलसूत्र के गुमने अथवा चोरी जाने की सूचना भी जिले के किसी भी थाने में नहीं दी कहीं से किसी से इस सुराग का भी पता नहीं चला कि आखिर यह मंगलसूत्र है किसका खैर कोई बात नहीं जिसका होगा वह हमारे पास जरूर आयेगा परंतु आज हम तुम्हें तुम्हारी ईमानदारी से खुश होकर 5000 रूपये ईनाम दे रहे हैं और एक लिफाफा एस.पी. साहब ने दीपक के हाथ में थमा दिया। दीपक ने लिफाफा लौटाते हुये कहा नमस्कार सर मैं मेहनत की ही सूखी रोटी खाकर खुश रहता हूँ श्रमदेव जयते कहता हुआ दीपक चला आया उसने ईनाम नहीं लिया।

संस्कार गीत

सरल भाषा हिन्दी

सहज सरल भाषा है हिन्दी
आर्यजनों की यह पहचान
गंगा यमुना जिसकी नदियाँ
वह है मेरा हिन्दुस्तान

1.
तुंग हिमालय उत्तर में है
दक्षिण हिन्द महासागर
सिन्धु विन्ध्य मय सुन्दर
भारत स्वर्ग का कोना शिवनागर
राम वीर गौतम का भारत दुनिया की यह शान है

2.
तपोभूमि यह तीर्थ भूमि
यह तीर्थंकर का मुक्ति धाम
परमात्म का क्रीडांगन
यह भारत मनहर है अभिराम
विश्वगुरु भारत है
अपना ज्ञान ध्यान का है अवदान

3.
प्रेम और करुणा जन जन
सत्य अहिंसा माटी में
वीर महापुरुषों की गाथा
इस भारत की थाती में
भारत जैसा देश कौन सा करता है
जग सम्मान

बाल कविता

आद्य दिगम्बर

आद्य दिगम्बर आद्य दिगम्बर
भय लज्जा से दूर दिगम्बर
संस्कृति की पहचान दिगम्बर
जैन धर्म की शान दिगम्बर
काम विजेता संत दिगम्बर
सत्य साधना पंथ दिगम्बर
प्रकृति रूप निर्दोष दिगम्बर
श्रृंगारों से दूर दिगम्बर
हर परिग्रह से मुक्त दिगम्बर
मोक्ष प्रदाता रूप दिगम्बर
विद्यासागर गुरु दिगम्बर
विश्व पूज्य गुरु आद्य दिगम्बर

समाचार

दीक्षायें सम्पन्न

सागर- आचार्य श्री निर्भयसागर महाराज जी के करकमलों से पं. दीपचंद जी जैन राहतगढ़ वाले सुभाषनगर सागर की मुनि दीक्षा 19 अप्रैल 2024 को तपोवन बहेरिया तिगड्डा सागर में सम्पन्न हुई जिनका नाम मुनिश्री इंद्रदत्तसागर जी महाराज रखा गया।

जयपुर-आचार्य श्री चैत्यसागर महाराज जी के करकमलों से रामलीला मैदान जयपुर में ब्र. राकेश भैया की एलक दीक्षा महावीर जयंती 21 अप्रैल 2024 को सम्पन्न हुई जिनका नाम एलक श्री उत्सवसागर जी महाराज रखा गया।

जयपुर- गणिनी आर्यिका श्री विज्ञाश्री माताजी के करमलों से 22 अप्रैल 2024 किरन बगड़ा जनकपुरी जयपुर को क्षुल्लिका दीक्षा दोप. 3 बजे दी गयी जिनका नाम क्षुल्लिका अमृतश्री माताजी रखा गया।

डिग्गी टोंक (राजस्थान)-आचार्य श्री इंद्रनंदी जी महाराज के करकमलों से अग्रवाल सेवा सदन डिग्गी टोंक राजस्थान में 25 अप्रैल 2024 को ब्र. प्रकाशचंद जी सांगानेर तथा ब्र. शकुनतला जैन टोंक को दीक्षायें दी गई जिनका नाम क्रमशः मुनि श्री उत्कृष्टसागर जी महाराज, क्षुल्लिका निर्मलश्री माताजी रखा गया।

समाधिमरण

जयपुर (राजस्थान)- गणिनी आर्यिका विज्ञाश्री माताजी की शिष्या क्षुल्लिका अमृतश्री माताजी का समाधिमरण 22 अप्रैल 2024 को सांय 6 बजे हुआ।

पूणे महाराष्ट्र- आचार्य पुष्पदंत सागर महाराजर जी के शिष्य मुनि श्री प्रभावसागर महाराज जी का समाधिमरण 25 अप्रैल 2024 को पूना महाराष्ट्र में आचार्य श्री कीर्तिसागरजी महाराज जी के सान्निध्य में हुआ।

पट्टाचार्य पद पर सुशोभित आचार्य श्री समयसागर जी महाराज

कुण्डलपुर (म.प्र.)-आचार्य विद्यासागर जी के वरिष्ठ शिष्य निर्यापक श्रमण मुनिश्री समयसागर महाराज का पट्टाचार्य पद प्रतिष्ठा समारोह 16 अप्रैल 2024 मंगलवार को श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र कुण्डलपुर जिला दमोह (म.प्र.) में निर्यापक श्रमण मुनिश्री योगसागर जी महाराज, निर्यापक श्रमण मुनि श्री नियमसागरजी महाराज, निर्यापक श्रमण मुनि श्री सुधासागर जी महाराज, निर्यापक श्रमण मुनिश्री समतासागर जी महाराज, निर्यापक श्रमण श्री प्रसाद सागर जी महाराज, निर्यापक श्रमण श्री अभयसागर जी महाराज, निर्यापक श्रमण श्री संभवसागर जी महाराज, निर्यापक श्रमण श्री वीरसागरजी महाराज, मुनि श्री प्रमाण सागर जी महाराज, मुनि श्री पवित्रसागर जी महाराज, मुनि श्री निर्वेगसागर जी महाराज, मुनि श्री विनीतसागरजी महाराज, मुनि श्री निर्णयसागर जी महाराज, मुनि श्री प्रबुद्धसागर जी महाराज, मुनि श्री अक्षयसागर जी महाराज, मुनि श्री प्रशस्तसागरजी महाराज, मुनिश्री प्रयोगसागर जी महाराज, मुनि श्री प्रबोधसागर जी महाराज, मुनि श्री प्रणम्यसागर जी महाराज, मुनि श्री प्रभातसागरजी महाराज, मुनि श्री चंद्रसागरजी महाराज, मुनि श्री अजितसागरजी महाराज, मुनि श्री पद्मसागरजी महाराज, मुनिश्री चन्द्रप्रभसागर जी महाराज, मुनिश्री पूज्यसागरजी महाराज, मुनि श्री विमलसागरजी महाराज, मुनि श्री अनंतसागरजी, मुनि श्री धर्मसागर जी, मुनि श्री अरहसागरजी, मुनि श्री

मल्लिसागरजी, मुनि श्री सुव्रतसागरजी, मुनि श्री आगमसागरजी, मुनि श्री महासागरजी, मुनि श्री विराटसागरजी, मुनि श्री शैलसागरजी, मुनि श्री अचलसागरजी, मुनि श्री अविचलसागर जी, मुनि श्री विशदसागरजी, मुनि श्री सौम्यसागरजी, मुनि श्री दुर्लभसागरजी, मुनि श्री विनम्रसागरजी, मुनिश्री अतुलसागर जी, मुनि श्री भावसागरजी, मुनि श्री आनंदसागरजी, मुनि श्री सहजसागरजी, मुनि श्री निस्वार्थसागरजी, मुनि श्री निर्दोषसागर जी, मुनि निर्लोभसागरजी, मुनि श्री निरोगसागरजी, मुनि श्री निर्मोहसागरजी, मुनि श्री निष्पक्षसागरजी, मुनि श्री निस्पृहसागरजी, निश्छलसागरजी, मुनि श्री निष्कंपसागरजी मुनि श्री निरामयसागरजी, मुनि श्री निरापदसागरजी, मुनि श्री निराकुलसागरजी, मुनि श्री निरुपमसागरजी, मुनि श्री निष्कामसागर जी , मुनि श्री निरीहसागरजी, मुनि श्री निस्सीमसागरजी, मुनि श्री निर्भीकसागरजी महाराज, मुनि श्री नीरागसागरजी, मुनि श्री नीरजसागरजी ,मुनि श्री निर्मदसागरजी, मुनि श्री निसर्गसागर जी, मुनि श्री निस्संगसागरजी, मुनि श्री शीतलसागरजी, मुनि श्री शाश्वतसागरजी, मुनि श्री श्रमणसागरजी, मुनि श्री संधानसागरजी, मुनि श्री संस्कारसागरजी, मुनि श्री ओंकारसागर जी, मुनि श्री निर्ग्रंथसागरजी, मुनि श्री निभ्रांतसागरजी, मुनि श्री निरालससागरजी, मुनि श्री निराश्रवसागर जी, मुनि श्री निराकारसागरजी, मुनि श्री निश्चिंतसागरजी, मुनि श्री निर्माणसागरजी, मुनि श्री निशंकसागरजी, मुनि श्री निरंजनसागरजी, मुनि श्री निर्लेपसागरजी इस प्रकार निर्यापक मुनि -8, मुनिराज-75 कुल-83 तथा आर्यिका माताजी आर्यिका श्री गुरुमति जी, आर्यिका श्री दृढ़मति जी, आर्यिका श्री मृदुमति जी, आर्यिका श्री ऋतुमति जी, आर्यिका श्री तपोमतिजी, आर्यिका श्री गुणमति जी, आर्यिका श्री निर्णयमति जी, आर्यिका श्री पावनमति जी, आर्यिका श्री प्रशांतमति जी, आर्यिका श्री पूर्णमति जी, आर्यिका श्री अनंतमतिजी, आर्यिका श्री विमलमति जी, आर्यिका श्री शुभ्रमति जी, आर्यिका कुशलमति जी, आर्यिका श्री निर्मलमति जी, आर्यिका श्री साधुमति जी, आर्यिका श्री शुक्लमतिजी, आर्यिका साधनामति जी, आर्यिका श्री विलक्षणमति जी, आर्यिका श्री धारणमति जी, आर्यिका भावनामतिजी, आर्यिका श्री चिंतनमति जी, आर्यिका श्री वैराग्यमति जी, आर्यिका श्री आदर्शमति जी, आर्यिका श्री दुर्लभमति जी, आर्यिका श्री अर्न्तमति जी, आर्यिका श्री अनुग्रहमति जी, आर्यिका श्री अक्षयमति जी, आर्यिका अर्मूतमति जी, आर्यिका श्री अखण्डमति जी, आर्यिका श्री आलोकमति जी, आर्यिका अनुपममति जी, आर्यिका अपूर्वमति माताजी, आर्यिका श्री अनुत्तरमति जी, आर्यिका श्री अनर्घमति जी, आर्यिका श्री अनुभवमति जी, आर्यिका श्री सिद्धांतमति जी, आर्यिका श्री अकलंकमति जी, आर्यिका श्री निकलंकमति जी, आर्यिका श्री आगममति जी, आर्यिका श्री स्वाध्यायमति जी, आर्यिका श्री नम्रमति जी, आर्यिका विनम्रमति जी, आर्यिका श्री अतुलमति जी, आर्यिका श्री विशदमति जी, आर्यिका श्री विनतमति जी, आर्यिका श्री विपुलमति जी, आर्यिका श्री मधुरमति जी, आर्यिका श्री प्रसन्नमति जी, आर्यिका श्री प्रशममति जी, आर्यिका श्री अधिगममति जी, आर्यिका श्री मुदितमति जी, आर्यिका श्री सहजमतिजी,

आर्यिका श्री अनुगममति जी, आर्यिका अमन्दमति जी, आर्यिका श्री अभेदमति जी, आर्यिका श्री कैवल्यमति जी, आर्यिका श्री संवेगमतिजी, आर्यिका श्री निर्वेगमतिजी, आर्यिका सूत्रमतिजी, आर्यिका सकलमति जी, आर्यिका सविनयमतिजी, आर्यिका श्री सतर्कमतिजी, आर्यिका संयमश्री माताजी, आर्यिका श्री समयमतिजी, आर्यिका शोधमति जी, आर्यिका शाश्वतमतिजी, आर्यिका सरलमति जी, आर्यिका शीलमति जी, आर्यिका श्री सुशीलमति जी, आर्यिका श्री शैलमति जी, आर्यिका श्री शीतलमति जी, आर्यिका श्री श्वेतमति जी, आर्यिका सारमति जी, आर्यिका श्री सिद्धमति जी, आर्यिका श्री सुसिद्धमति जी, आर्यिका श्री विशुद्धमतिजी, आर्यिका श्री साकारमति जी, आर्यिका श्री सौम्यमति जी, आर्यिका श्री सुशांतमति जी, आर्यिका श्री समुन्नतमति जी, आर्यिका श्री उपशांतमति जी, आर्यिका श्री अकम्पमति जी, आर्यिका श्री अमूल्यमति जी, आर्यिका श्री आराध्यमतिजी, आर्यिका ॐकारमति जी, आर्यिका श्री अचिन्त्यमति जी, आर्यिका श्री अलोल्यमति जी, आर्यिका श्री अनमोलमति जी, आर्यिका श्री उचितमति जी, आर्यिका श्री उद्योतमति जी, आर्यिका श्री आज्ञामतिजी ,आर्यिका श्री अचलमतिजी, आर्यिका श्री स्वस्थमतिजी, आर्यिका श्री तथ्यमति जी, आर्यिका श्री वात्सल्यमति जी, आर्यिका श्री पथ्यमति जी, आर्यिका श्री जागृतमति जी, आर्यिका श्री कर्त्तव्यमति जी, आर्यिका श्री गंतव्यमति जी, आर्यिका श्री संस्कारमति जी, आर्यिका श्री निष्काममति जी, आर्यिका श्री विरतमति जी, आर्यिका श्री तथामति जी, आर्यिका श्री उदारमति जी, आर्यिका श्री विजितमति जी, आर्यिका संतुष्टमति जी, आर्यिका श्री निकटमति जी, आर्यिका श्री संवरमतिजी, आर्यिका श्री ध्येयमति जी, आर्यिका श्री आत्ममति जी, आर्यिका श्री चैत्यमति जी, आर्यिका श्री पृथ्वीमति जी, आयिका निर्मदमतिजी, आर्यिका श्री पुनीतमति जी, आर्यिका विनीतमति जी, आर्यिका श्री मेरुमति जी, आर्यिका श्री आप्तमति जी, आर्यिका श्री उपशममति जी, आर्यिका श्री ध्रुवमति जी, आर्यिका श्री असीममति जी, आर्यिका श्री गौतममति जी, आर्यिका श्री संयतमति जी, आर्यिका श्री अगाधमति जी, आर्यिका श्री निर्वाणमति जी, आर्यिका श्री मादर्वमति जी, आर्यिका श्री मंगलमतिजी, आर्यिका श्री परमार्थमति जी, आर्यिका श्री ध्यानमति जी, आर्यिका श्री विदेहमति जी, आर्यिका श्री अवायमति जी, आर्यिका श्री पारमति जी, आर्यिका श्री आगतमति जी, आर्यिका श्री श्रुतमति जी, आर्यिका श्री अदूरमति जी, आर्यिका श्री स्वभावमति जी, आर्यिका श्री धवलमति जी, आर्यिका विनयमति जी, आर्यिका श्री समितिमति जी, आर्यिका श्री अमितगति जी, आर्यिका श्री परममति जी, आर्यिका श्री चेतनमति जी, आर्यिका श्री मननमति जी, आर्यिका श्री चारित्रमति जी, आर्यिका श्री श्रद्धामति जी, आर्यिका श्री उत्कर्षमति जी, आर्यिका श्री लक्ष्यमति जी, आर्यिका भक्तिमति जी इस प्रकार 148 माताजी तथा एलक श्री दयासागरजी, एलक श्री निश्चयसागरजी , एलक श्री विवेकानंद सागरजी, एलक श्री उपशमसागरजी, एलक श्री निजानंदसागरजी ,एलक श्री धैर्यसागर जी इस प्रकार 6 एलक जी तथा क्षुल्लक श्री अटलसागरजी, क्षुल्लकश्री

औचित्यसागर जी, क्षुल्लक श्री गहनसागरजी, क्षुल्लक श्री सुधारसागरजी, क्षुल्लक श्री कैवल्यसागरजी, क्षुल्लक श्री चैत्यसागरजी, क्षुल्लक श्री मननसागरजी, क्षुल्लक श्री सुदृढ़सागरजी, क्षुल्लक श्री अपारसागरजी, क्षुल्लक श्री समुचितसागरजी, क्षुल्लक श्री विचारसागर जी, क्षुल्लक श्रीमगनसागरजी, क्षुल्लक श्री तन्मयसागरजी , क्षुल्लक श्री उचितसागरजी, क्षुल्लक श्री अथाहसागरजी, क्षुल्लक श्री उत्साहसागर जी, क्षुल्लक श्री अमापसागर जी, क्षुल्लक विरलसागरजी, क्षुल्लक श्री स्वागत सागरजी, क्षुल्लक श्री आगतसागरजी क्षुल्लक श्री भास्वतसागरजी, क्षुल्लक श्री स्वस्तिकसागरजी, क्षुल्लक श्री भारतसागर जी, क्षुल्लक श्री जागृतसागरजी, क्षुल्लक श्री उद्यमसागरजी, क्षुल्लक श्री गरिष्ठसागरजी, क्षुल्लक श्री आदरसागरजी, क्षुल्लक श्री चिद्रूपसागरजी, क्षुल्लक श्री स्वरूपसागरजी, क्षुल्लक श्री सुभगसागरजी, क्षुल्लक श्री अनुनयसागरजी, क्षुल्लक श्री सविनयसागर जी, क्षुल्लक समन्वयसागरजी, क्षुल्लक श्री हीरकसागरजी, क्षुल्लक निर्धूमसागरजी, क्षुल्लक श्री वरिष्ठसागरजी, क्षुल्लक श्री गौरवसागरजी, क्षुल्लक श्री विदेहसागरजी इस प्रकार 38 क्षुल्लक तथा आचार्य श्री वर्धमानसागर जी के शिष्य मुनि श्री आदिसागरजी महाराज, मुनि श्री निर्दोषसागर जी महाराज, क्षुल्लक श्री संयमसागरजी, क्षुल्लक श्री सुवीरसागरजी, क्षुल्लिका उचितमति जी, क्षुल्लिका पूजाभूषणजी, क्षुल्लिका भक्तिभूषण जी इस प्रकार 282 साधुओं तथा लगभग 600 ब्रह्मचारी भईया, 1000 ब्रह्मचारी बहने की उपस्थिति में कुण्डलपुर के बड़े बाबा के समक्ष ब्र. भाईयों द्वारा गणधर वलय विधान किया गया तथा संघ की उपस्थिती में बड़े बाबा का अभिषेक शांतिधारा एवं मांगलिक क्रियायें भक्तिपाठ आदि सभामंडप में आचार्य श्री की महापूजन श्रावक-श्रेष्ठियों तथा पूरे भारतवर्ष से आये लाखों श्रावक-श्राविकाओं ने की । ध्वजारोहण श्री अशोक जी पाटनी आर .के. मार्बल्स, बंडर सीमेन्ट परिवार ने किया । मंडल उद्घाटन नवीन जैन राज्यसभा सांसद पी.एन.सी परिवार आगरा ने किया। चित्र अनावरण एवं द्वीप प्रज्जवलन श्री मोहन जी भागवत सर संघ संचालक राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ तथा नवीन जैन पी.एन.सी राज्यसभा सदस्य, प्रदीप जैन आदित्य पूर्व केन्द्रिय मंत्री, प्रहलाद पटेल मंत्री मध्यप्रदेश शासन, विधायक जयंत मलैया, अनिल जैन विधायक निवाड़ी, शैलेन्द्र विधायक सागर, डॉ. सुधा मलैया ने किया । प्रथम कलश स्थापना श्री राजाभाई सूरत, द्वितीय कलश स्थापना श्री अशोक जी पाटनी, तृतीय कलश स्थापना श्री तरूण काला परिवार मुंबई, चतुर्थ कलश स्थापना प्रशांत जी मुंबई, पंचम कलश स्थापना विनोद बड़जात्या परिवार जसपुर छत्तीसगढ़, छठ्ठ कलश स्थापना महेश विलहरा परिवार सागर, सातवां कलश कोयला वाला परिवार । नवीन सिंहासन का उद्घाटन करने का सौभाग्य मोहन जी भागवत सरसंघ संचालक राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के साथ सभी श्रावक श्रेष्ठियों ने किया । कलश स्थापन के बाद सभी निर्यापकों ने निर्यापक श्रमण मुनि श्री समयसागरजी से निवेदन करके पट्टाचार्य के आसन पर विराजमान किया। इसके बाद निर्यापक श्रमण मुनि श्री योगसागर जी महाराज, निर्यापक श्रमण मुनि श्री नियमसागर जी, निर्यापक श्रमण मुनि श्री सुधासागरजी,

निर्यापक श्रमण मुनि श्री समतासागरजी , निर्यापक श्रमण मुनि श्री अभयसागरजी, निर्यापक श्रमण मुनि श्री प्रणम्यसागरजी, निर्यापक श्रमण मुनि श्री संभवसागरजी के साथ-साथ आचार्य श्री समयसागर महाराज जी का प्रथम उद्बोधन हुआ। आचार्य श्री के पात्र चरण का प्रथम सौभाग्य श्रीमति आशारानी पांडया इंदौर द्वितीय-कोयला परिवार, तृतीय-चंदू काका महाराष्ट्र, चतुर्थ- जयंती परिवार अलवर राजस्थान पंचम- अष्टगे परिवार सदलगा ने प्राप्त किया। आचार्य श्री समयसागर जी पिच्छि देने का सौभाग्य सभी मुनिराजों को तथा कमंडल देने का सौभाग्य सभी आर्यिकाओं माताजी को प्राप्त हुआ। पुरानी पिच्छिका प्राप्त करने का सौभाग्य प्रभात जी मुंबई वालों को प्राप्त हुआ । प्रायश्चित ग्रंथ भेंट करने का सौभाग्य मुनि संघ को प्राप्त हुआ तथा शास्त्र भेंट करने का प्रथम सौभाग्य सुधीर जैन दिल्ली, द्वितीय नवीन जैन गुडगांव, तृतीय डॉ. सुभाष शाह मुंबई, चतुर्थ सुरेन्द्र जैन, पंचम कानपुर परिवार, छठवां गुवाहाटी परिवार, सांतवा प्रभात जैन मुंबई। कार्यक्रम के बीच में प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री मोहन यादव भी पधारे तथा उनका भी उद्बोधन हुआ। निम्न ग्रंथों का लोकार्पण किया गया आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की विनयांजलि विशेषांक चाणक्य वार्ता का लोकार्पण मोहन भागवत के साथ-साथ, अमित जैन दिल्ली, ब्र. जिनेश मलैया इंदौर, राकेश गोहिल सिरोंज ने किया। शास्त्री परिषद बुलेटिन का लोकार्पण मोहन भागवत सरसंघ चालक के साथ-साथ, डॉ. श्रेयांश जी बड़ोत शास्त्री परिषद के अध्यक्ष ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़ महामंत्री, पं. विनोद जी रजवांस, ब्र. जिनेश मलैया, सुनील संचय, ब्र. आकाश भैया बनारस, राजकुमार शास्त्री सागर, पं. नंदन जी टीकमगढ़ ने किया । आलाप उपदेश, विद्या वरदायनीय छाव भाग-1,2 (पंचास्तिकाय) ग्रंथ का लोकार्पण हुआ। कार्यक्रम का संचालन मुनि श्री प्रमाण सागर महाराज जी ने किया। कार्यक्रम में विधिविधान का कार्यक्रम ब्र. विनय भैया बण्डा, ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़, ब्र.प्रदीप सुयष अशोकनगर, ब्र. अशोक भैया लिधोरा, ब्र. अनिल भैया इंदौर, ब्र. जिनेश मलैया इंदौर, ब्र. अभय भैया मंडला, ब्र. नितिन भैया इंदौर, ब्र. धीरज भैया राहतगढ़, ब्र. अविनाश भैया भोपाल, ब्र. दीपक भैया टहरका के प्रतिष्ठाचार्यत्व में कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

पुरस्कार वितरण समारोह

जैन विद्या संस्कृति प्रश्न मंच 2023-24

आचार्य श्री समयसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में कुण्डलपुर आचार्य पदारोहण के अवसर पर जैन विद्या संस्कृति प्रश्न मंच 2023-24 का पुरस्कार वितरण 24 अप्रैल 2024 को हुआ इस वर्ष आचार्य शांतिसागर महाराज जी का 100वें दीक्षा दिवस पर पूज्य गणेश प्रसाद वर्णी जी के 150वें जन्म दिवस पर पं. गुलाबचंद जी पुष्प टीकमगढ़ के 100वें जन्म शताब्दी वर्ष पर संस्कार सागर श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर इंदौर से प्रतियोगिता आयोजित की गई थी । जिसमें प्रथम पुरुस्कार श्रीमति रेखा अशोक महाजन सिरपुर महाराष्ट्र, द्वितीय पुरुस्कार श्रीमति सुरभि (अंजु) घुवारा, तृतीय पुरुस्कार श्रीमति वैशाली जैन डिण्डोरी तथा सभी प्रतिभागियों को सान्त्वना पुरुस्कार के रूप में बड़े बाबा तथा आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज, आचार्य श्री समयसागर जी महाराज की फोटो भेंट की गई।

वर्ग पहेली 295

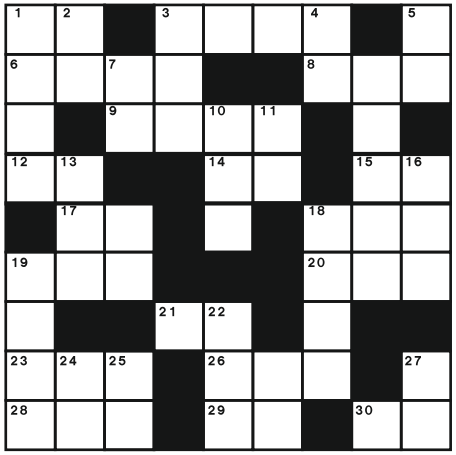

बाये से दाये

1. चंद्रमा -2
3. एककवि का नाम, रस की खान -4
6. महान देव, शंकर, अरिहंत, आदिनाथ -4
8. जवाहरात, जवाहर -3
9. ठंडा मीठा पेय स्वादिष्ट पेय -4
12. अन्न का दाना -2
14. इन्द्रिय, संयम, दमन -2
15. जंगल, अरण्य -2
17. पराजय, गले का आभूषण -2
18. नवजात शिशु, संतान -3
19. एक अनुष्ठान जिसमें दीप कहो -3
20. प्लावन, बहने वाली अवस्थान -3
21. सूर्य, अरुण तपन -2
23. एक पक्षी, एक भारतीय पक्षी -3
26. तह, सार, तल -3
28. तपन, ईर्ष्या -3
29. आदत व्यसन -2
30. एक वाहन बैलगाड़ी -2

ऊपर से नीचे

1. सप्ताह का पहला दिन -4
2. बडा, महान -2
4. मनुष्य पुरण -2
5. प्रतिष्ठा, गर्व -2
7. राष्ट्र, वतन -2
10. शरीर, चेहरा -3
11. अंधकार अंधेरा -2
13. बसंत ऋतु, हरा भरा मौसम -3
15. लघु, निष्कृष्ट -3
16. प्रतिलिपि, कॉपी -3
18. जाति भेद, पंथ जाति, जाति पंथ -4
19. अक्षय तृतीया -4
23. पल का 60वाँ भाग -2
24. सतह तह -2
25. क्रिकेट की दौड़, संग्राम, जंग -2
27. राह मार्ग -2

वर्ग पहेली 294 का हल

1 वै	2 शा	ली	■	3 कुं	ड	4 ल	5 पु	र
6 शा	क	■	7 भ	व	■	7ए ह	ल	■
8 खी	ल	■	9 म	न	10 ह	र	■	11 जा
■	■	■	■	■	म	■	12 अ	ति
13 त्रि	14 वे	णी	■	15 ना	स	पा	ती	■
16 श	व	■	17 द	■	18 फ	र	व	19 री
20 ला	श	■	21 स	फ	र	■	■	झ
दे	■	22 ता	र	■	■	23 खु	श	बू
24 वी	र	ना	थ	■	25 वु	श	■	झ

.....सदस्यता क्र. .....

पता : .....

.....

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता

ये कला निराली

नियम

१. आपको चार से छः पंक्तियों की एक छंदबद्ध या छंदमुक्त तुकांत कविता लिखनी है, जिसके अंत में उपरोक्त शब्द आने चाहिये।
२. समस्या पूर्ति पोस्टकार्ड पर ही लिखकर भेजें।
३. पुरस्कार राशि : प्रथम पुरस्कार १५१ रु., द्वितीय ५१ रु., तृतीय २५ रु.
४. पोस्टकार्ड भेजने की अंतिम तिथि माह की १५ तारीख है।

पंचकल्याणक विधिविधान एवं अन्य धार्मिक कार्यक्रमों हेतु सम्पर्क करें

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर, विद्यासागर नगर इन्दौर
सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 8989121008

प्रिंटिंग दिनांक 28/04/24, पोस्टिंग दिनांक : 03/05/2024